



सत्यमेव जयते

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

शिक्षा मंत्रालय
भारत सरकार

अध्याय	विषय-वस्तु	पृष्ठ संख्या
	परिचय	3
भाग I: विद्यालयी शिक्षा		
1	प्रारंभिक बाल्यावस्थाक देखरेख आ शिक्षा: सीखबाक आधार	8
2	बुनियादी साक्षरता आ संख्या-ज्ञान: सीखबाक तात्कालिक आवश्यकता आ पूर्वशर्त	9
3	ड्रापआउट बच्चा सभक संख्या कम करब आ सभ स्तर पर शिक्षाक सार्वभौमिक पहुँच सुनिश्चित करब	11
4	विद्यालयमे पाठ्यक्रम आ शिक्षण-शास्त्र: अधिगम समग्र, एकीकृत, आनंददायी आ रुचिकर हेबाक चाही	13
5	शिक्षक	24
6	समतामूलक आ समावेशी शिक्षा: सभक लेल अधिगम	29
7	विद्यालय परिसर/समूहक माध्यमसँ कुशल संसाधन आ प्रभावी प्रशासन	34
8	विद्यालयी शिक्षाक लेल मानक निर्धारण आ प्रमाणन	36
भाग II. उच्चतर शिक्षा		
9	गुणवत्तापूर्ण विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय: भारतीय उच्चतर शिक्षा व्यवस्था हेतु एकटा नव आ भविष्योन्मुखी दृष्टिकोण	40
10	सांस्थानिक पुनर्गठन आ समेकन	41
11	समग्र आ बहु-विषयक शिक्षाक दिस	44
12	सीखबाक लेल अनुकूल वातावरण आ छात्रकँ सहयोग	46
13	अभिप्रेरित, सक्रिय आ सक्षम संकाय	48
14	उच्चतर शिक्षामे समता आ समावेश	50
15	शिक्षक शिक्षा	51
16	व्यावसायिक शिक्षाक पुनर्कल्पना	53

17	नव राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (एनआरएफ) केर माध्यमसँ सभ क्षेत्रमे गुणवत्तायुक्त अकादमिक अनुसंधानकेँ उत्प्रेरित करब	55
18	उच्चतर शिक्षाक नियामक प्रणालीमे परिवर्तन	57
19	उच्चतर शिक्षा संस्थानक लेल प्रभावी प्रशासन आ नेतृत्व	60
भाग III. अन्य मुख्य विचारणीय मुद्दा		
20	व्यावसायिक शिक्षा	61
21	प्रौढ शिक्षा आ जीवनपर्यन्त सीखब	62
22	भारतीय भाषा, कला, आ संस्कृतिक संवर्धन	65
23	प्रौद्योगिकीक उपयोग आ एकीकरण	69
24	ऑनलाइन आ डिजिटल शिक्षा: प्रौद्योगिकीक न्यायसम्मत उपयोग सुनिश्चित करब	72
भाग IV. क्रियान्वयन केर रणनीति		
25	केंद्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्डक सशक्तिकरण	74
26	वित्तपोषण: सभक लेल सस्त आ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा	74
27	कार्यान्वयन	76
	प्रयुक्त संकेताक्षर सभक सूची	77

परिचय

शिक्षा, मनुष्यक अभूतपूर्व क्षमता, न्यायोचित समाज आ राष्ट्रीय विकासक संवर्धनमे मौलिक आवश्यकता थिक। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा धरि सार्वभौमिक पहुँच प्रदान करब वैश्विक मंच पर सामाजिक न्याय आ समानता, वैज्ञानिक उन्नति, राष्ट्रीय एकीकरण आ सांस्कृतिक संरक्षण संदर्भमे भारतक सतत प्रगति आ आर्थिक विकासक मूल कंजी थिक। सार्वभौमिक उच्चतर शिक्षा ओ उचित माध्यम अछि, जाहिसँ देशक समृद्ध प्रतिभा आ संसाधनक सर्वोत्तम विकास आ संवर्धन व्यक्ति, राष्ट्र आ विश्वक कल्याण हेतु कएल जा सकैत अछि। अगिला दशकमे भारत दुनियाक सभसँ युवा जनसंख्या वला देश होएत आ एहि युवा लोकनिकें उच्चतर आ गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक अवसर उपलब्ध करएला पर सैह भारतक भविष्य निर्भर करत।

भारतमे 2015 मे अपनाओल गेल 2030क सतत विकास एजेंडाक लक्ष्य 4 (एसडीजी 4) मे उल्लेखित कएल गेल वैश्विक शिक्षा विकास (कार्यसूचिक) एजेंडाक अनुसार विश्वमे 2030 धरि 'सभक लेल समावेशी और न्यायसंगत गुणवत्तापूर्ण शिक्षा' आ जीवन पर्यन्त सीखबाक अवसरकें प्रोत्साहन देबाक लक्ष्य अछि। एहि तरहक उच्च लक्ष्यक लेल सम्पूर्ण शिक्षा प्रणालीकें पुनर्गठित करबाक आवश्यकता छैक जाहिसँ सतत विकासक 2030 एजेंडा केर सभटा लक्ष्य (एसडीजी)कें प्राप्त कएल जा सकए आ अधिगमकें प्रोत्साहित कएल जा सकए।

ज्ञान-परिदृश्यक क्षेत्रमे एखन दुनिया भरिमे तीव्र परिवर्तन भ' रहल अछि। बिग डेटाक उदय, मशीनी ज्ञान आ कृत्रिम बुद्धिमत्ता सन क्षेत्रमे भ' रहल बहुत रास वैज्ञानिक आ तकनीकी विकास सभक कारणेँ एक दिस दुनिया भरिमे कतेको अकुशल काज आब मशीनक द्वारा कएल जाएत, दोसर दिस विशेष रूपसँ गणित, कंप्यूटर विज्ञान, आ डेटा विज्ञानमे कुशल कामगारक आवश्यकता बढ़त जे विज्ञान, सामाजिक विज्ञान या मानविकीमे बहु-विषय क्षमताक धनी होइक। जलवायु परिवर्तन, बढ़ैत प्रदूषण आ घटैत प्राकृतिक संसाधनक कारण हमर सभक ऊर्जा, जल, भोजन स्वच्छता इत्यादिक आवश्यकता सभकेँ पूर्ण करबाक तरीकामे पैघ बदलाव होएत, विशेष रूपसँ जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, कृषि, जलवायु विज्ञान, आ समाज विज्ञान क्षेत्रमे नव कुशल कारीगर सभक आवश्यकता होएत। महामारी आ सर्वव्यापी महामारीक बढ़ैत संकट संक्रामक रोग प्रबंधन आ टीका सभक विकासमे सहयोगी अनुसन्धान आ परिणामी सामाजिक मुद्दा बहु-विषयक अधिगमक आवश्यकताकेँ बढ़ा देत। मानविकी आ कलाक मांगमे बढ़ोतरी होएत, किएक त' भारत एकटा विकसित देश बनबाक संग-संग विश्वक तीनटा सभसँ पैघ अर्थव्यवस्था सभमे एक बनबाक अग्रसर अछि।

वास्तवमे, रोजगारक परिदृश्य आ वैश्विक पारिस्थितिकीमे आबि रहल बदलावक कारण ई आवश्यक भ' गेल अछि जे बच्चा सभ केवल सीखबे टा नहि करए, अपितु कोना सीखल जाइ सेहो बुझए। एहि कारणे, शिक्षाक विषय-वस्तु कम करबाक दिस बढ़ए आ संगहि ई गप सीखबा पर जोर देल जाय जे कोना तार्किक रूपसँ सोचल जाय आ समस्या सभक समाधान कएल जाइ, कोना रचनात्मक भेल जाय, कोना विविध-विषयवादी भेल जाय, आ कोना नव आ बदलैत क्षेत्रक जानकारीकेँ अपन अनुकूल बनाओल जाए आ ओकरा सभकेँ आत्मसात करैत किछु नव कएल जाय। ई आवश्यक छैक जे शिक्षण प्रक्रिया शिक्षाकेँ प्रयोगात्मक, समग्र आ समन्वित, जिज्ञासा बढ़बए बला, खोज केंद्रित, विद्यार्थी केंद्रित, संवादक आधार पर संचालित, लोचदार आ निश्चित रूपेँ रुचिपूर्ण होइक। विद्यार्थी सभक क्षमताक सम्पूर्ण विकासक लेल शिक्षा पूर्ण-विकसित, उपयोगी आ संतोषपूर्ण हेबाक चाही, एहि कारणे पाठ्यक्रममे विज्ञान आ गणितक संगे बुनियादी कला, शिल्प, मानविकी, खेल आ आरोग्य, भाषा, साहित्य, संस्कृति, आ मूल्य निश्चित रूपसँ जोड़ल जयबाक चाही। विद्यार्थी सभमे नैतिकता, तार्किकता, करुणा, आ संवेदनशीलताक विकास करबाक चाही, आ संगहि लाभकारी रोजगारक लेल सक्षम बनाओल जाएबाक चाही।

अध्ययन केर परिणामक वर्तमान स्थिति आ आवश्यकताक बीचक खाधिकें पाटबाक लेल पैघ सुधारक आवश्यकता अछि जे कि प्रारंभिक बाल संरक्षण आ उच्चतर शिक्षाक माध्यमसँ शिक्षा व्यवस्थामे उच्चतम गुणवत्ता, न्यायसम्यता आ अखंडता आनि सकए।

भारतक लक्ष्य ई रहबाक चाही जे 2040 धरि एहन शिक्षा प्रणाली होइक जे केकरोसँ पाछु नहि हुए, जतए कोनो सामाजिक वा आर्थिक पृष्ठभूमिक परवाहि केने बिना सभ विद्यार्थिकें समान रूपसँ सर्वोच्च गुणवत्ताक शिक्षा उपलब्ध भ' सकय।

ई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, एकैसम शताब्दीक पहिल शिक्षा नीति अछि जकर लक्ष्य हमर सभक देशक विकास लेल अनिवार्य आवश्यकताकें पूर्ति करबाक अछि। ई नीति भारतवर्षक परंपरा आ सांस्कृतिक मूल्यक आधार राखैत एकैसम शताब्दीमे शिक्षाक लेल आकांक्षात्मक लक्ष्य, जाहिमे एसडीजी4 सेहो अछि, के संयोजनमे शिक्षा व्यवस्था, ओकर नियमन आ नियंत्रण सहित, सभ पक्षक सुधार आ पुनर्गठनक प्रस्ताव राखैत अछि। राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रत्येक व्यक्तिक भीतर रचनात्मक क्षमताक विकास पर विशेष रूपसँ जोर दैत अछि। एहि नीतिक सिद्धान्त अछि जे शिक्षासँ केवल साक्षरता आ संख्यात्मक ज्ञान सन 'बुनियादी क्षमता' टा नहि, अपितु ओकरा संगे 'उच्चतर स्तरक' तार्किक आ समस्याक समाधान लेल संज्ञानक क्षमताक विकास हेबाक चाही, एकर अतिरिक्त नैतिक, सामाजिक आ भावनात्मक स्तर पर सेहो विकास हेबाक चाही।

प्राचीन आ सनातन भारतक ज्ञान आ विचारक समृद्ध परम्पराक आलोकमे एहि नीतिकें तैयार कएल गेल अछि। ज्ञान, प्रज्ञा आ सत्यक खोजकें भारतीय विचार आ दर्शनमे सदैवसँ सर्वोच्च मानवीय लक्ष्य मानल जाइत छैक। प्राचीन भारतमे शिक्षाक लक्ष्य सांसारिक जीवन या विद्यालयक बाद जीवनयापनक तैयारी लेल ज्ञान एकत्र करबटा नहि अपितु ओकर संग पूर्ण आत्म-ज्ञान आ आत्म-मुक्तिक रूपमे मानल गेल अछि। प्राचीन भारतमे विश्व स्तरीय संस्थान जेना तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला आ वल्लभीमे अध्ययन केर विविध क्षेत्रमे शिक्षण आ शोधक उच्चतम मानक स्थापित करब छल आ विभिन्न पृष्ठभूमि आ देश सभसँ आयल विद्यार्थी आ विद्वानक आतिथ्य करब छल। भारतक शिक्षा व्यवस्थासँ निकलल महान विद्वानसभ जेना चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, भास्कराचार्य, ब्रह्मगुप्त, चाणक्य, चक्रपाणि दत्त, माधव, पाणिनि, पतंजलि, नागार्जुन, गौतम, पिंगल, शंकरदेव, मैत्रेयी, गार्गी, आ थिरूवल्लुवर इत्यादि वैश्विक स्तर पर ज्ञानक विविध क्षेत्र जेना गणित, खगोल, विज्ञान, धातु विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान आ शल्य चिकित्सा, नागरिक अभियंत्रण, भवन निर्माण, जहाज- निर्माण, आ दिशा ज्ञान, योग, ललित कला, शतरंज इत्यादिमे प्रमाणिक रूपसँ मौलिक योगदान देलनि। भारतीय संस्कृति आ दर्शनक विश्व पर बहुत पैघ प्रभाव रहल अछि। वैश्विक महत्वक एहि समृद्ध विरासतकें नहि केवल अगिला पीढ़ीक लेल पोषित आ संरक्षित रखबाक आवश्यकता छैक, अपितु ओकरा संगहि हमर सभक शिक्षा व्यवस्थाक द्वारा एहि विषय पर शोध सेहो करबाक अछि आ एकरा आर समृद्ध बनेबाक चाही आ नव-नव उपयोगक बारेमे सेहो सोचबाक चाही।

शिक्षा व्यवस्थामे कएल जा रहल बुनियादी परिवर्तनक केंद्रमे निश्चये शिक्षकें राखब आवश्यक छैक। शिक्षककें नव नीतिमे निश्चित रूपसँ सभ स्तर पर समाजक सम्मानीय आ अनिवार्य सदस्यक रूपमे पुनः स्थापित करबामे सहयोग करए पड़त, किएक त' नागरिक सभक अगिला पीढ़ीकें सही रूपसँ आकार शिक्षके सभ दैत छथि। एहि नीति द्वारा शिक्षक सभकें सक्षम बनएबाक लेल यथासंभव काज करबाक आवश्यकता छैक, जाहिसँ ओ अपन काजकें सुचारु रूपसँ क' सकथि। नव शिक्षा नीतिक प्रत्येक स्तर पर शिक्षणक कार्यमे सभसँ उत्कृष्ट आ प्रतिभाशाली लोकक चुनाव करबामे सहयोग करबाक होयत जकरा लेल हुनका सभक आजीविका, सम्मान, मान-मर्यादा, आ स्वायत्तता सुनिश्चित करब होएत, संगहि तंत्रमे गुणवत्ता नियंत्रण आ जवाबदेहीक मूल प्रक्रियाकें सेहो स्थापित करबाक होएत।

नव शिक्षा नीति, सभ विद्यार्थीक लेल, चाहे हुनकर घर कोनो ठाम होइ, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध करएबाक होएत, जाहि कार्यमे ऐतिहासिक रूपसँ समाजक अंतिम छोर पर रहि रहल, वंचित आ अल्प-प्रतिनिधित्व बला समूह सभ पर विशेष ध्यान देल जेबाक आवश्यकता छैक। शिक्षा, साम्यताक पैघ माध्यम थिक आ समाजमे समानता, समावेश आ सामाजिक आ आर्थिक गतिशीलताक प्राप्ति करबाक सर्वश्रेष्ठ साधन अछि। एहि

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

समूहक सभ बच्चाक लेल परिस्थितिजन्य बाधाक बावजूद, लक्षित अवसर उपलब्ध होइक तकर प्रयास हेबाक चाही, जाहिसँ ओ शिक्षा व्यवस्थामे प्रवेश आ उत्कृष्ट प्रदर्शन सेहो क' सकए।

स्थानीय आ वैश्विक संदर्भमे देशक आवश्यकता आ एकर समृद्ध विविधता आ संस्कृतिक प्रति सम्मानकेँ ध्यानमे राखैत ई सभ नीति केर समावेश करबाक चाही। भारतक युवाकेँ भारत देशक बारेमे आ ओकर विविध समाजिक, सांस्कृतिक आ तकनीकी आवश्यकताक सहित एहि ठामक अद्वितीय कला, भाषा, ज्ञानक परंपरा आ सबल नैतिकताक संबंधमे ज्ञान देब राष्ट्रीय गौरव, आत्मविश्वास, आत्मज्ञान, परस्पर सहयोग आ एकताक दृष्टिसँ सेहो आवश्यक छैक।

पूर्वक नीति सभ

शिक्षा पर पूर्व नीति सभक कार्यान्वयनक ध्यान मुख्य रूपसँ पहुँच आ न्यायसम्यता पर छलैक। 1986केर राष्ट्रीय शिक्षा नीति, जकरा 1992(एनपीई 1986/92) मे संशोधित कएल गेल छल, ताहि अपूर्ण काजकेँ एहि नीतिक द्वारा पूर्ण करबाक पूरा प्रयास कएल गेल अछि। 1986/92के पछिला नीतिक बाद सभसँ प्रमुख गतिविधि निःशुल्क आ अनिवार्य शिक्षा अधिनियम 2009 रहल अछि जाहिमे सार्वभौमिक प्रारंभिक शिक्षा सुलभ करबाक लेल कानूनी आधार उपलब्ध करौलक।

एहि नीतिक आधार सिद्धान्त

शैक्षिक प्रणालीक उद्देश्य नीक मनुक्खक विकास करबाक अछि- जे तर्कसंगत विचार आ कार्य करबामे सक्षम हो, जाहिमे करुणा आ सहानुभूति, साहस, आ लचक, वैज्ञानिक चिंतन आ रचनात्मक कल्पनाशक्ति होइक, आ जे नैतिक मूल्यक दृष्टिसँ उचित होइक। एकर उद्देश्य एहन कर्मशील आ उपयोगी योगदान करए बला नागरिक सभकेँ तैयार करबाक अछि जे अपन संविधान द्वारा परिकल्पित- न्यायसंगत, समावेशी आ बहुलतावादी समाजक निर्माण क' सकए।

एकटा नीक शैक्षणिक संस्था ओ होइत अछि जतए प्रत्येक छात्रकेँ ई लगैत छैक जे ओकर स्वागत आ सही देखरेख कएल जा रहल छैक आ जतए एकटा सुरक्षित आ प्रेरणादायक शिक्षाक वातावरण रहैत छैक, जतए सभ छात्रक लेल विविध प्रकारक सीखबाक अनुभव प्रदान कएल जाएत छैक, आ जतए सीखबाक लेल नीक भौतिक संरचना आ उपयुक्त संसाधन उपलब्ध रहैत छैक। ई सभ गुणक प्राप्ति हरेक शिक्षण संस्थानक लक्ष्य हेबाक चाही। एकरा संगहि, सभ संस्थान सभक बीचमे आ शिक्षाक प्रत्येक स्तर पर सहज एकीकरण आ सामंजस्य रहब आवश्यक अछि।

मूलभूत सिद्धान्त जे वृहत स्तर पर शिक्षण प्रणाली आ संगहि व्यक्तिगत संस्थान, दुनूक मार्गदर्शन करत, ओ ई सभ अछि:

- सभ बच्चा केर विशिष्ट क्षमताक स्वीकृति, ओकर पहिचान, आ ओकर अद्वितीय क्षमताकेँ प्रोत्साहन देब- शिक्षक आ अभिभावक सभकेँ एहि क्षमता सभक प्रति संवेदनशील बनाएब जाहिसँ ओ बच्चाक अकादमिक आ अन्य क्षमता सभमे ओकर सर्वांगीण विकास पर सेहो विशेष ध्यान द' सकए।
- कक्षा 3 धरि कक्षा 3 धरिक छात्र सभकेँ बुनियादी साक्षरता आ संख्या-ज्ञानकेँ प्राथमिकता देब;
- लचीलापन, ताकि शिक्षार्थी सभमे ओकर सीखबाक तौर-तरीका आ कार्यक्रमक चुनाव करबाक क्षमता हो, आ एहि प्रकारेँ ओ अपन प्रतिभा आ रुचिकेँ अनुसार जीवनमे अपन दिशा निर्धारित क' सकए।
- कला आ विज्ञानक बीच, पाठ्यक्रम आ पाठ्येत्तर गतिविधिक बीच, व्यावसायिक आ शैक्षणिक धाराक बीच कोनो स्पष्ट भेद नहि होइक, जाहिसँ अधिगम क्षेत्र सभक बीच कोनो हानिकारक ऊंच-नीच आ अलगावकेँ दूर कएल जा सकए।

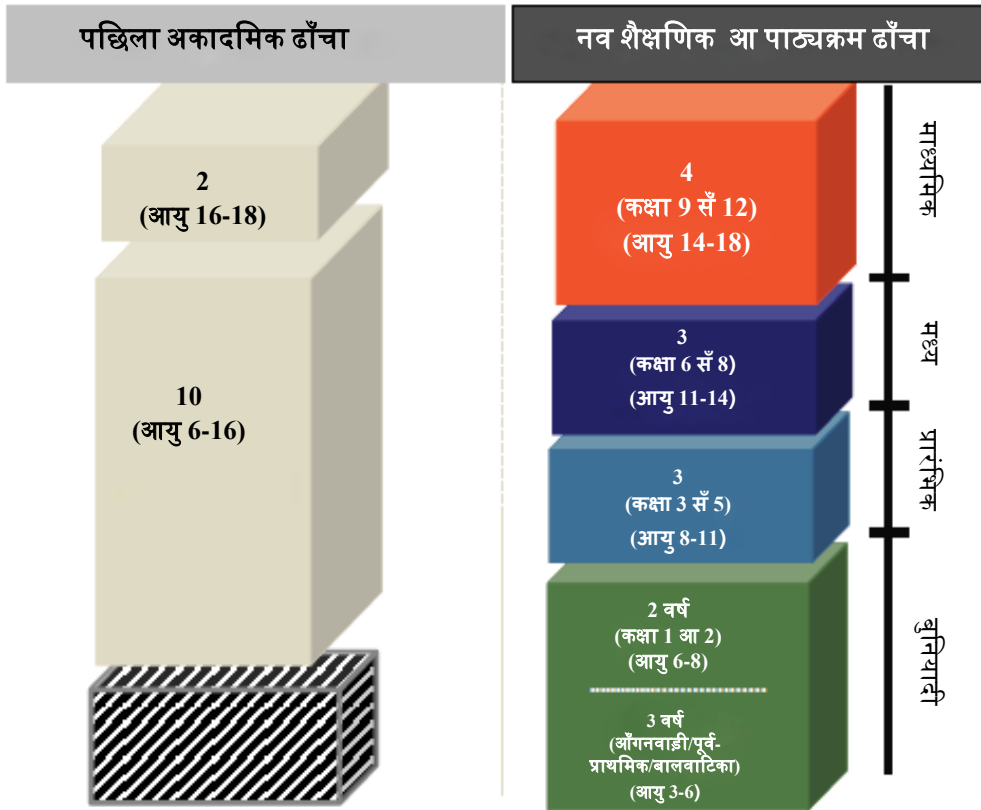
- विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी, आ खेल सभक बीच बहु-विषयक आ समग्र शिक्षा, एकटा बहु-विषयक दुनियाक लेल जाहिसँ सभ तरहक ज्ञानकेँ एकता आ समग्रता निश्चित भ' सकय;
- वैचारिक ज्ञान पर बेसी जोर ने कि रटंत पद्धति आ केवल परीक्षा उत्तीर्ण करबाक हेतु पढौनी;
- रचनात्मक आ तार्किक सोच तार्किक निर्णय लेबाक आ नवाचारकेँ प्रोत्साहित करबाक लेल;
- नैतिकता, मानवीय आ संवैधानिक मूल्य, जेना सहानुभूति, दोसर लेल सम्मान, स्वच्छता, शिष्टाचार, लोकतान्त्रिक भावना, सेवाक भावना, सार्वजनिक संपत्तिक लेल सम्मान, वैज्ञानिक चिंतन, स्वतंत्रता, जिम्मेदारी, बहुलतावाद, समानता आ न्याय;
- बहु-भाषिकता आ अध्ययन-अध्यापनक कार्यमे भाषाक शक्तिकेँ प्रोत्साहन;
- जीवन कौशल जेना संवाद, सहयोग, सामूहिक काज, आ लचीलापन ;
- सारांशित मूल्यांकनकेँ केंद्रमे राखि शिक्षण, जाहिसँ की आइ केवल'कोचिंग संस्कृति' के प्रोत्साहन भेटैत छैक केर स्थान पर सीखबाक लेल सतत मूल्यांकन पर जोर देब;
- तकनीकी उपयोग पर जोर- अध्ययन-अध्यापनक काजमे, भाषा सम्बन्धी बाधाकेँ समाप्त करबामे, दिव्यांग बच्चा सभक लेल शिक्षाकेँ सुलभ बनयबाक लेल आ शैक्षणिक नियोजन आ प्रबंधमे;
- सभ पाठ्यक्रम, शिक्षण-शास्त्र आ नीतिमे विविधता आ स्थानीय परिवेशक लेल सम्मान, हरदम ध्यानमे राखब जे शिक्षा एकटा समवर्ती विषय थिक;
- सभ शैक्षिक निर्णयक आधारक रूपमे पूर्ण समता आ समावेशन ई सुनिश्चित करबाक लेल जे सभ छात्र शिक्षा-प्रणाली मे सफलता प्राप्त क' सकए;
- प्रारंभिक बाल्यावस्थाक देख-रेख आ शिक्षासँ विद्यालयी शिक्षासँ उच्चतर शिक्षा धरि- सभ स्तरक शिक्षा पाठ्यक्रममे तालमेल।
- शिक्षक सभ आ संकायकेँ अधिगम प्रक्रियाक केंद्र मानल जएबाक चाही-हुनक नियुक्ति, निरंतर व्यावसायिक विकास आ सकारात्मक कार्य वातावरण आ सेवाक स्थिति;
- शैक्षिक प्रणालीक अखंडता, पारदर्शिता और संसाधन कुशलताक परीक्षण आ सार्वजनिक प्रकटीकरणक माध्यमसँ सुनिश्चित करबाक लेल एकटा 'सरल मुदा प्रभावशाली' ढांचा- संगहि स्वायत्तता, सुशासन, आ सशक्तिकरणक माध्यमसँ नवाचार आ भीडसँ अलग सोच-विचारकेँ प्रोत्साहन देब;
- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा आ विकासक लेल उत्कृष्ट स्तरक शोधकेँ मुख्य आवश्यकताक रूपमे राखब;
- शैक्षिक विशेषज्ञक द्वारा निरंतर अनुसन्धान आ नियमित मूल्यांकनक आधार पर प्रगतिक सतत समीक्षा;
- भारतक अतीत-गौरवक जड़िसँ बान्हल रहब, आ जतए प्रासंगिक हो ओतए भारतक समृद्ध आ विविध प्राचीन आ आधुनिक संस्कृति आ ज्ञान प्रणाली आ परंपराकेँ शामिल करब आ ओहिसँ प्रेरणा लेब;
- शिक्षा एकटा सार्वजनिक सेवा अछि, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा धरि पहुँचकेँ प्रत्येक बच्चाक मौलिक अधिकार मानल जेबाक चाही;
- एकटा मजगूत, जीवंत सार्वजनिक शिक्षा प्रणालीमे पर्याप्त निवेश - संगहि शुद्ध रूपसँ परोपकारी निजी आ सामुदायिक भागीदारीकेँ प्रोत्साहन आ सुविधा।

एहि नीतिक दूरदर्शिता

एहि राष्ट्रीय शिक्षा नीतिक दृष्टिकोण भारतीय मूल्यसँ विकसित शिक्षा प्रणाली अछि जे सभकेँ उच्चतर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराकए भारतकेँ एकटा वैश्विक ज्ञान-महाशक्ति बनाकए एकटा जीवंत आ न्यायसंगत ज्ञान समाजमे बदलबाक लेल प्रत्यक्ष रूपसँ योगदान करत। नीतिमे परिकल्पना कएल गेल अछि जे हमर संस्थानक पाठ्यचर्चा आ शिक्षाविधि छात्र लोकनिमे अपन मौलिक दायित्व आ संवैधानिक मूल्य, देशप्रेम आ बदलैत विश्वमे नागरिकक भूमिका आ उत्तरदायित्वक भाव उत्पन्न करए। नीतिक दृष्टिकोणमे छात्र लोकनिमे ने केवल भारतीयताक गौरव हो, अपितु व्यवहार, बुद्धि आ कार्यमे सेहो आ संगहि ज्ञान, कौशल, मूल्य आ सोचमे सेहो हेबाक चाही जे मानवाधिकार, स्थायी विकास आ जीवनयापन आ वैश्विक कल्याणक लेल प्रतिबद्धता हो, जाहिसँ वास्तवमे ओ विश्व नागरिक बनि सकए।

भाग I. विद्यालयी शिक्षा

ई नीति वर्तमानक 10 + 2 वला विद्यालयी व्यवस्थाकेँ 3 सँ 18 वर्षक सभ बच्चाक लेल पाठ्यचर्चा आ शिक्षण-शास्त्रीय आधार पर 5 + 3 + 3 + 4 के एकटा नव व्यवस्थामे पुनर्गठित करबाक विचार करैत अछि, जेना कि एतय देल गेल आकृति मे अछि आ अध्याय 4 मे सेहो एहि पर विस्तारसँ चर्चा कएल गेल अछि।



वर्तमानमे 3 सँ 6 वर्षक बच्चा सभ 10 + 2 वला ढाँचाक अंतर्गत नहि राखल गेल अछि किएक त' कक्षा 1 केर प्रारंभ 6 वर्षसँ होइत छैक। नवका 5 + 3 + 3 + 4 ढाँचामे 3 वर्षक अवस्थासँ प्रारंभिक बाल्यावस्था देखरेख आ शिक्षा (ईसीसीई) के एकटा मजगूत आधार सेहो राखल गेल अछि, जकर लक्ष्य अछि जे ओकर समग्र शिक्षा, विकास और कल्याण भ' सकए।

1. प्रारंभिक बाल्यावस्थाक देखरेख आ शिक्षा: सीखबाक आधार

1.1. बच्चा सभक मस्तिष्क केर 85% सँ बेसी विकास 6 वर्षक अवस्थासँ पूर्व भ' जाइत छैक जे देखाबैत अछि जे बच्चा सभक मस्तिष्कक उचित विकास आ वृद्धिक लेल प्रारंभिक 6 वर्षमे उचित देखरेख आ प्रोत्साहनक कतेक महत्व छैक। वर्तमान समयमे, विशेष रूपसँ समाजिक-आर्थिक रूपसँ वंचित पृष्ठभूमिकँ करोडो बच्चासभक लेल, गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था देखरेख आ शिक्षा (ईसीसीए) उपलब्ध नहि छैक। ईसीसीईमे पैघ निवेश सभ बच्चाकँ एहन पहुँच प्रदान करबाक सभसँ सशक्त माध्यम भ' सकैत अछि, जाहिसँ ओ सभ शिक्षा व्यवस्थामे जीवन भरि भाग ल' सकए आ विकसित भ' सकए। प्रारंभिक बाल्यावस्था विकास, देखरेखक लेल गुणवत्तापूर्ण शिक्षाक सार्वभौमिक प्रावधानकँ शीघ्रतिशीघ्र, निश्चित रूपसँ 2030 सँ पहिने उपलब्ध कएल जाएबाक चाही, जाहिसँ ई सुनिश्चित कएल जा सकए जे पहिल कक्षामे प्रवेश प्राप्ति करए बला बच्चा सभ विद्यालयी शिक्षाक लेल पूर्ण रूपसँ तैयार भ' सकए।

1.2. ईसीसीईमे आदर्श रूपसँ लोचदार, बहुआयामी, बहु-स्तरीय, खेल-आधारित, गतिविधि-आधारित, आ अनुसन्धान-आधारित शिक्षा रहैत अछि, जेना अक्षर, भाषा, संख्या, गिनती, रंग, आकार, आंतरिक आ बाह्य खेल, पहेली, तार्किक सोच, समस्या सोझएबाक कला, चित्रकला, रेखा चित्र, अन्य दृश्य कला, शिल्प, नाटक, कठपुतली, संगीत, तथा गतिविधि। ओकर संग सामाजिक काज, मानवीय संवेदना, नीक व्यवहार, शिष्टाचार, नैतिकता, व्यक्तिगत आ सार्वजनिक स्वच्छता, सामूहिक कार्य आ सहयोगक विकास पर ध्यान केंद्रित कएल गेल अछि। ईसीसीईक समग्र उद्देश्य बच्चा सभक शारीरिक आ यांत्रिक विकास, संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक-भावनात्मक-नैतिक विकास, सांस्कृतिक-कलात्मक विकास, संचारक विकास आ प्रारंभिक भाषा, साक्षरता और संख्यात्मक विकासमे अधिकतम परिणाम प्राप्त करबाक अछि।

1.3. एनसीईआरटी द्वारा 8 वर्षक आयु धरि सभ बच्चाक लेल दू भागमे प्रारंभिक बाल्यावस्थाक शिक्षा आ विकासक लेल एकटा राष्ट्रीय पाठ्यक्रम आ शैक्षणिक ढांचा (एनसीपीएफईसीसीई) विकसित कएल जाएत, अर्थात 0-3 वर्षक बच्चा सभक लेल एकटा उप-ढांचा आ 3-8 वर्ष लेल उप-ढांचाक विकास कएल जाएत, उपरोक्त दिशानिर्देशक अनुसार, ईसीसीई राष्ट्रीय आ अंतरराष्ट्रीय नवाचार एवं सर्वोत्तम प्रथा सभपर नवीनतम शोधकँ सम्मिलित करत। विशेष रूपसँ, बहुत रास स्थानीय समृद्ध सांस्कृतिक प्रथा सभकँ जे भारतमे कतेको शताब्दीसँ बाल्यावस्थाक शिक्षा(ईसीसीए)कए विकासक लेल विकसित भेल अछि, जेना कला, कथा, कविता, खेल, गीत इत्यादिकँ उपयुक्त स्थान पर सम्मिलित कएल जाएत। शिक्षाक ई मॉडल माता-पिताक संगे-संगे प्रारंभिक बाल्यावस्था देखरेख आ शिक्षण संस्थानक लेल सेहो मार्गदर्शन करत।

1.4. संपूर्ण देशमे चरणबद्ध तरीकासँ उच्चतर-गुणवत्ता बला ईसीसीई संस्थान सभक लेल सार्वभौमिक पहुँच सुनिश्चित करब व्यापक लक्ष्य होएत। ओहि जिला आ क्षेत्र सभ पर विशेष ध्यान आ प्राथमिकता देब' पड़त जे सामाजिक आ आर्थिक रूपसँ पिछड़ल अछि। विस्तृत आ सशक्त बाल्यावस्था संस्थानक द्वारा ईसीसीई प्रणाली पहुँचाओल जाएत, जाहिमे (क) पूर्वहिसँ सशक्त रूपसँ चलि रहल आंगनवाड़ी (ख) प्राथमिक विद्यालय सभक संग स्थित आंगनवाड़ीक माध्यमसँ (ग) पूर्व प्राथमिक विद्यालय जे कम-सँ-कम 5 से 6 वर्ष पूरा करत, आ प्राथमिक विद्यालयक संग स्थित अछि, एकरा माध्यमसँ, (घ) असगर चलि रहल शिशु-विद्यालय एहि सभक माध्यमसँ एकरा लागू कएल जाएत। ई सभटा विद्यालय ईसीसीईक पाठ्यक्रम आ शिक्षणमे प्रशिक्षित कर्मचारी/शिक्षकक भर्ती करत।

1.5. प्रारंभिक बाल्यावस्था देखरेख आ शिक्षा (ईसीसीई) कए सार्वभौमिक पहुँचक लेल, आंगनवाड़ी केंद्र केर उच्चतर गुणवत्ताक मूल ढाँचा, खेलक उपकरण आ उत्तम प्रशिक्षित कार्यकर्ता/शिक्षकक संग सशक्त बनाओल जाएत। प्रत्येक आंगनवाड़ीमे नीक तरहसँ बनाओल गेल हवादार, सुनिर्मित, बाल-सुलभ आ सुकृतभवन होइक जाहिसँ समृद्ध शिक्षाक वातावरण बनाओल जा सकए। आंगनवाड़ी केंद्रमे बच्चा सभ गतिविधिसँ भरल पर्यटन करत- आ अपन स्थानीय प्राथमिक विद्यालयक शिक्षक आ छात्रसँ भेंट करत, जाहिसँ आंगनवाड़ी केंद्रसँ प्राथमिक विद्यालयमे

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

परिवर्तनकेँ सुचारु बनाओल जा सकए। आंगनवाडीकेँ विद्यालय परिसर/समूहमे पूर्ण रूपसँ एकीकृत कएल जाएत आ आंगनवाडीक बच्चा, माता पिता आ शिक्षककेँ विद्यालय तथा विद्यालयक विभिन्न कार्यक्रम सभमे परस्पर भाग लेबाक लेल आमंत्रित कएल जाएत।

1.6. ई सोचल गेल अछि जे 5 वर्षसँ पहिने बच्चा एकटा प्रारंभिक कक्षा वा “बालवाटिका” (जे कि कक्षा 1 सँ पहिने अछि) मे स्थानांतरित भ’ जाएत जाहिमे एकटा ईसीसीई योग्य शिक्षक होइक। तैयारी कक्षामे शिक्षण मूल रूपसँ खेल-आधारित हेबाक चाही, जाहिमे संज्ञानात्मक, भावात्मक, आ मनोप्रेरक क्षमता आ प्रारंभिक साक्षरता आ संख्या-ज्ञान विकसित करबा पर ध्यान केंद्रित कएल जाएत। दूपहरियाक (मध्याह्न) भोजन कार्यक्रमकेँ प्राथमिक विद्यालयक संगे-संग तैयारी कक्षा धरि सेहो विस्तृत कएल जाएबाक चाही। स्वास्थ्यक जांच-परिक्षण आ विकासक निगरानी आ जे आंगनवाडी व्यवस्थामे उपलब्ध छैक, ओकरा आंगनवाडी आ प्राथमिक विद्यालय दुनूक तैयारी कक्षा केर छात्रक लेल उपलब्ध कराओल जाएत।

1.7. ईसीसीई शिक्षक सभकेँ शुरुआती कैडर तैयार करबाक लेल आंगनवाडी कार्यकर्ता/शिक्षक सभकेँ एनसीईआरटी द्वारा विकसित पाठ्यक्रम/शिक्षण-शास्त्रीय मूल-ढांचाकेँ अनुसार एकटा व्यवस्थित प्रयाससँ प्रशिक्षण देल जाएत। 10+2 आ ओहिसँ बेसी योग्यता बला आंगनवाडी कार्यकर्ता/शिक्षककेँ ईसीसीईमे 6 मासक प्रमाणपत्र कार्यक्रम कराओल जाएत; आ कम शैक्षणिक योग्यता राखए बलाकेँ एक वर्षक डिप्लोमा कार्यक्रम कराओल जाएत, जाहिमे प्रारंभिक साक्षरता, संख्या आ ईसीसीईक अन्य प्रासंगिक पक्ष सभकेँ सेहो सम्मिलित कएल जाएत। एहि कार्यक्रमकेँ डिजिटल/दूरस्थ माध्यमसँ डीटीएच चैनलक संग-संग स्मार्टफोनक माध्यमसँ चलाओल जा सकैत अछि, जाहिसँ शिक्षक सभ अपन वर्तमान कार्यमे न्यूनतम व्यवधानक संग ईसीसीई योग्यता प्राप्त क’ सकैत छथि। आंगनवाडी कार्यकर्ता/शिक्षककेँ ईसीसीई प्रशिक्षणकेँ शिक्षा विभागक *क्लस्टर रिसोर्स सेंटर* द्वारा परामर्श देल जाएत जे निरंतर मूल्यांकनक लेल कम-सँ-कम एकटा मासिक संपर्क कक्षा सेहो चलाओत। दीर्घावधिमे, राज्य सरकारक चरण-विशेषमे व्यावसायिक प्रशिक्षण, मार्गदर्शनक व्यवस्था आ केरियर मैपिंगसँ आरम्भिक बाल्यावस्थामे देखरेख आ शिक्षाक लेल व्यावसायिक रूपसँ योग्य शिक्षकक संवर्गकेँ तैयार करबाक चाही। एहि शिक्षककेँ प्रारंभिक व्यावसायिक तैयारी आ ओकर निरंतर व्यावसायिक विकास (सीपीडी) लेल आवश्यक सुविधाक सेहो विकास कएल जाएत।

1.8. ईसीसीईक चरणबद्ध तरीकासँ आदिवासी बहुल क्षेत्रक आश्रमशाला सभमे, आ वैकल्पिक विद्यालयमे सेहो शुरू कएल जाएत। आश्रमशालामे ईसीसीई केर एकीकृत करबाक लेल आ एकरा लागू करबाक प्रक्रिया ऊपर देल विवरणक आधार पर होएत।

1.9. ईसीसीई पाठ्यक्रम आ शिक्षण-विधिकेँ जिम्मेदारी मानव संसाधन विकास मंत्रालयक होएत जाहिसँ प्राथमिक विद्यालयक माध्यमसँ पूर्व-प्राथमिक विद्यालय धरि एकर निरंतरताकेँ सुनिश्चित कएल जा सकए आ शिक्षाक मूलभूत पक्ष सभ पर ध्यान केंद्रित कएल जा सकए। प्रारंभिक बाल्यावस्था देखरेख आ शिक्षा पाठ्यक्रमकेँ आयोजन आ कार्यान्वयन मानव संसाधन विकास मंत्रालय, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय (डब्ल्यूसीडी), स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (एमएचएफडब्ल्यू) आ जनजातीय कार्य मंत्रालय द्वारा संयुक्त रूपसँ कएल जाएत। विद्यालयी शिक्षामे प्रारंभिक बाल्यावस्था देखरेख आ शिक्षाक सुचारु रूपसँ एकीकरणक सतत मार्गदर्शनक लेल एकटा विशेष संयुक्त कार्य बल बनाओल जाएत।

2. बुनियादी साक्षरता एवं संख्या-ज्ञान: सीखबाक तत्कालिक आवश्यकता आ पूर्वशर्त

2.1. भविष्यक सभटा विद्यालयक छात्र द्वारा पढ़बाक आ लिखबाक, आ संख्या केर संग किछु मूलभूत प्रक्रियाक प्रदर्शन करबाक क्षमता आगूक विद्यालयी शिक्षामे आ जीवन-भरि सीखबाक आधार राखैत अछि। ओना, विभिन्न सरकारी, संगहि गैर-सरकारी सर्वेक्षणमे ई संकेत भेटैत अछि जे हम सभ वर्तमानमे अधिगमक एकटा गंभीर समस्यासँ जूझि रहल छी। वर्तमानमे प्राथमिक विद्यालयमे पैघ संख्यामे शिक्षार्थी सभ- जेकर अनुमानित संख्या 5

करोड़सँ बेसी अछि - बुनियादी साक्षरता आ संख्या ज्ञानो नहि सीखलक अछि; अर्थात एहन बच्चा सभकेँ सामान्य पाठकेँ पढ़ब, बुझब, आ भारतीय अंकक संग बुनियादी जोड़-घटाव करबाक क्षमता सेहो नहि छैक।

2.2. सभ बच्चाक लेल बुनियादी साक्षरता आ संख्या-ज्ञानक प्राप्त करब अति आवश्यक रूपसँ एकटा राष्ट्रीय अभियान बनत जेकरा बहुते स्तर पर कराओल जाय बला तात्कालिक उपयोग आ स्पष्ट लक्ष्यक संग अल्पावधिमे प्राप्त कएल जा सकत (जाहि सँ प्रत्येक छात्रकेँ कक्षा-3 धरि बुनियादी साक्षरता आ संख्या-ज्ञानक आवश्यक रूपसँ प्राप्त करब सम्मिलित कएल गेल अछि)। शिक्षा प्रणालीक सर्वोच्च प्राथमिकता 2025 धरि प्राथमिक विद्यालयमे सार्वभौमिक बुनियादी साक्षरता आ संख्या-ज्ञान प्राप्त करब होएत। सीखबाक मूलभूत आवश्यकता (अर्थात, बुनियादी स्तर पर पढ़ब, लिखब आ अंकगणित) केँ प्राप्त करबा पर हमर सभक विद्यार्थीक लेल बांकी नीति प्रासंगिक होएत। एकरा लेल मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एमएचआरडी) द्वारा प्राथमिकताक आधार पर बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मकता पर एकटा राष्ट्रीय मिशन स्थापित कएल जाएत। ओकर अनुसार सभ प्राथमिक उच्चतर प्राथमिक विद्यालयमे सार्वभौमिक बुनियादी साक्षरता आ संख्या-ज्ञानक लेल राज्य या केंद्रशासित प्रदेशक सरकार कार्यान्वयन योजना तैयार करत, आ 2025धरि प्राप्त कएल जा सकए बला चरणबद्ध काज आ लक्ष्य केँ चिन्हित करत आ ओकर प्रगतिक सूक्ष्म तरीकासँ जाँच आ निगरानी करत।

2.3. सबसँ पहिने शिक्षक सभक रिक्त पदकेँ शीघ्रतिशीघ्र आ समयबद्ध तरीकासँ भरल जाएत - विशेष रूपसँ वंचित क्षेत्र आ ओहन क्षेत्रमे, जतए शिक्षक-छात्रक बीचक अनुपात दर बेसी अछि वा जतए निरक्षरता बेसी अछि। स्थानीय शिक्षक या स्थानीय भाषासँ परिचित शिक्षककेँ नियुक्त करबा पर विशेष रूपसँ ध्यान देल जाएत। ई सुनिश्चित कएल जाएत जे शिक्षक-छात्रक बीचक अनुपात विद्यालयक सभ स्तर पर 30:1 हो; आ ओहन क्षेत्र जतए सामाजिक-आर्थिक रूपसँ वंचित विद्यार्थीक संख्या बेसी छैक, ओतए छात्र-शिक्षक अनुपात 25:1 सँ कम करबाक लक्ष्य होएत। शिक्षक सभक सतत व्यावसायिक विकास (सीपीडी) कए संग प्रशिक्षित, उत्साहित आ संबलित कएल जाएत-जाहिसँ ओ बुनियादी साक्षरता आ संख्या ज्ञान प्रदान क' सकथि।

2.4. पाठ्यचर्यामे, बुनियादी साक्षरता आ संख्याज्ञान पर बेसी ध्यान राखल जाएत- आ प्रारंभिक आ माध्यमिक विद्यालयक पाठ्यक्रममे सामान्यतया पढ़ब, लिखब, बाजब, गिनती करब, अंकगणित आ गणितीय चिंतन पर सेहो- एकटा मजबूत सतत रचनात्मक आ अनुकूल मुल्यांकन प्रणालीक संग विशेष रूपसँ प्रत्येक बच्चाकेँ सीखबाक प्रक्रिया पर नजरि राखल जाएत। विद्यार्थीकेँ ओहि विषय सभमे प्रोत्साहित करबाक लेल ओकरा पर प्रतिदिन विशेष समय राखल जाएत आ एहिसँ सम्बंधित गतिविधिक लेल वर्ष भरि नियमित आयोजन कएल जाएत। मूलभूत साक्षरता आ संख्या-ज्ञान पर नव तरीकासँ जोर देबाक लेल शिक्षक शिक्षा आ प्रारंभिक वर्ग पाठ्यचर्याकेँ नव तरहसँ रचना कएल जाएत।

2.5. वर्तमान समयमे ईसीसीई केर सार्वभौमिक पहुँच नहि हेबाक कारण बच्चा सभक एकटा पैघ हिस्सा प्रथम कक्षामे प्रवेश लेबाक किछुए हफ्ताक बाद पिछड़ि जाइत छैक। एहि लेल एनसीईआरटी आ एससीईआरटीक द्वारा कक्षा 1 केँ विद्यार्थी सभक लेल, ई सुनिश्चित करबाक लेल जे सभ विद्यार्थी विद्यालय लेल तैयार होइक, अल्पकालीन 3 महीनाक खेल-आधारित 'विद्यालय तैयारी मॉड्यूल' बनाओल जाएत, जाहिमे गतिविधि सभ आ कार्यपुस्तिका होएत जे अक्षर, ध्वनि, शब्द, रंग, आकार, संख्या आदि सम्मिलित होइत। एहि मॉड्यूलक क्रियान्वयनमे सहपाठी आ अभिभावक लोकनिक सेहो मदति लेल जाएत जाहिसँ ई सुनिश्चित भ' सकए जे छात्र लोकनि विद्यालय जेबाक हेतु तैयार भ' रहल अछि।

2.6. द डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर फॉर नॉलेज शेयरिंग (दीक्षा) पर बुनियादी साक्षरता आ संख्या-ज्ञान पर उच्चतर-गुणवत्ता वाला संसाधनक एकटा राष्ट्रीय भंडार उपलब्ध कराओल जाएत। तकनीकि दखलकेँ शिक्षकक लेल एकटा मदतिक रूपमे आ शिक्षक आ विद्यार्थीक बीच जँ भाषाक कोनो बाधा होइक तकरा पाटबाक लेल पहिने प्रायोगिक तौर पर शुरू कएल जाएत आ तखन लागू कएल जाएत।

2.7. वर्तमानमे बहुत वृहत स्तर पर बच्चा बहुत किछु सीखबामे असमर्थ अछि। ई एकटा पैघ संकट अछि, सभक लेल साक्षरता आ संख्या-ज्ञान प्राप्त करबामे एहि महत्वपूर्ण मिशनमे शिक्षकक सहयोग करबाक लेल सभटा व्यावहारिक पद्धति केर पता लगाओल जाएत। दुनिया भरिकेँ अध्ययनसँ ई पता चलैत अछि जे सहपाठी एक-दोसरासँ सीखैत-सीखबैत अछि तँ ई बहुत प्रभावी होइत अछि। एहि प्रकारेँ, प्रशिक्षित शिक्षकक देखरेखमे आ सुरक्षाकेँ उचित ध्यानमे राखि सहपाठी छात्रक लेल पीयर ट्यूटोरिंग केँ एकटा स्वैच्छिक आ आनंदपूर्ण गतिविधिक रूपमे लेल जा सकैत छैक। एकर अतिरिक्त, स्थानीय आ गैर-स्थानीय दुनू प्रकारक प्रशिक्षित स्वयंसेवी लेल एहि पैघ स्तरक अभियानमे भाग लेब बहुत सुलभ बनाओल जाएत। जँ समुदायक प्रत्येक साक्षर सदस्य कोनो एकटा विद्यार्थी/व्यक्तिकेँ पढएबाक लेल प्रतिबद्ध भ' जाएत, त' देशक परिदृश्य बहुत जल्दिए बदलि जाएत। राज्य सभ एहि तरहक पियर ट्यूटोरिंग आ स्वयंसेवनकेँ प्रोत्साहन देबाक लेल नवीन मॉडल स्थापित करबा पर विचार क' सकैत अछि आ एकरा तत्काल राष्ट्रव्यापी मिशनमे शिक्षक केँ समर्थन देबाक लेल अन्य कार्यक्रमक शुरुआत सेहो क' सकैत अछि जाहिसँ बुनियादी साक्षरता आ संख्या-ज्ञानकेँ प्रोत्साहन भेटि सकए।

2.8. सभ भारतीय आ स्थानीय भाषा सभमे रोचक आ प्रेरणादायक बाल-साहित्य आ सभ स्तरक छात्रक हेतु विद्यालय आ स्थानीय पुस्तकालयमे पैघ मात्रामे पोथी सभ उपलब्ध कराओल जाएत जेकरा लेल उच्चतर गुणवत्ताक अनुवाद (आवश्यकतानुसार तकनीकी मदतिसँ)सेहो कराओल जाएत। देश भरिमे पढबाक संस्कृतिक निर्माणक लेल सार्वजनिक आ विद्यालयक पुस्तकालयकेँ विस्तार देल जाएत। डिजिटल पुस्तकालय सेहो स्थापित कएल जाएत। गाममे विद्यालयक पुस्तकालयक स्थापना कएल जाएत जाहिसँ समुदाय विद्यालयक समयक बाद ओकर लाभ उठा सकए आ पुस्तक क्लबक सदस्य एहि विद्यालयी/सार्वजनिक पुस्तकालयमे भेंट-घांट क' सकैत छथि जाहिसँ पढबाक संस्कृतिकेँ प्रोत्साहन भेटतैक। एकटा राष्ट्रीय पुस्तक संवर्धन नीति तैयार कएल जाएत आ सभ स्थान, भाषा, स्तर आ शैली सभमे पुस्तककेँ उपलब्धता, पहुँच, गुणवत्ता आ पाठककेँ सुनिश्चित करबाक लेल व्यापक प्रयास शुरू कएल जाएत।

2.9. जखन बच्चा कुपोषित या अस्वस्थ रहैत छैक त' ओ नीक जकाँ सीखबामे असमर्थ होइत छैक। एहि कारणे पौष्टिक भोजन आ नीक तरीकासँ प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्ता, परामर्शदाताक भूमिका देलासँ आ विद्यालयी शिक्षा प्रणालीमे समुदायकेँ भागीदारीसँ बच्चा सभक पोषण आ स्वास्थ्य (मानसिक स्वास्थ्य सहित) पर ध्यान देल जाएत। एकर अतिरिक्त, कतेको अध्ययनसँ ई पता चलैत अछि जे भोरक समय पौष्टिक जलपानक बाद किछु घंटाकेँ बौद्धिक रूपसँ कठिन विषयक अध्ययन बेसी प्रभावी होइत छैक, एहि उत्पादक आ प्रभावी समयकेँ लाभ उठाओल जा सकैत छैक, जाहि लेल दुपहरियाक भोजनक अतिरिक्त भोरमे किछु सादा मुदा पौष्टिक जलपान सेहो देल जा सकैत अछि। ओहन क्षेत्र जतय गर्म भोजनक व्यवस्था करब संभव नहि होइक, ओतय सादा मुदा पौष्टिक जलपान जेना गुडक संग मूंगफली/गुड मिलाओल चना आ/या स्थानीय फल देल जा सकैत अछि। विद्यालयक बच्चा सभ केँ विशेष रूपसँ 100% टीकाकरणक लेल नियमित स्वास्थ्य जाँच कराओल जाएत आ एकर निगरानीक लेल हेल्थ कार्ड जारी कएल जाएत।

3. ड्रापआउट बच्चा सभक संख्या कम करब आ सभ स्तर पर शिक्षाक सार्वभौमिक पहुँच सुनिश्चित करब

3.1. विद्यालयी शिक्षा प्रणालीकेँ प्राथमिक लक्ष्यमे हमरा सभकेँ ई सुनिश्चित करबाक अछि जे बच्चा सभकेँ विद्यालयमे नामांकन होइक आ ओ नियमित रूपसँ विद्यालय आवब। सर्व शिक्षा अभियान (आब समग्र शिक्षा) आ शिक्षाक अधिकार अधिनियम सन पहल सभक माध्यमसँ भारत पछिला किछु वर्षमे प्राथमिक शिक्षामे लगभग सभ बच्चाकेँ नामांकन प्राप्त करबामे नीक प्रगति कएलक अछि। ओना बादक कक्षाक आंकड़ा बच्चाकेँ विद्यालयी व्यवस्थामे ठहरब सम्बन्धी किछु गंभीर मुद्दा सभक दिस संकेत क' रहल अछि। कक्षा 6 सँ 8 धरिक जीईओ 90.9 प्रतिशत छैक, जखनकि कक्षा 9-10 आ 11-12 के लेल क्रमशः केवल 79.3 % आ 56.5 % छैक। ई आंकड़ा देखबैत अछि जे कोन प्रकारे कक्षा 5 आ विशेष रूपसँ कक्षा 8क बाद नामांकित छात्रकेँ एकटा पैघ अनुपात विद्यालयी शिक्षासँ बाहर भ'जाइत अछि। वर्ष 2017-18 मे एनएसएसओ केँ 75म राउंड हाउसहोल्ड सर्वेक अनुसार 6 सँ 17

वर्षक बीच विद्यालयक बाहरक बच्चा सभक संख्या 3.22 करोड़ छैक। ई बच्चा सभकेँ यथासंभव पुनः शिक्षा प्रणालीमे घूरा क' आनब सर्वोच्च प्राथमिकता होएत आ एकरा संगे 2030 धरि शिशु-विद्यालयसँ माध्यमिक स्तर धरि 100 % सकल नामांकन अनुपात(जीईओ) प्राप्त करबाक लक्ष्यक संग आगू छात्र सभक ड्रॉपआउट कम करबाक लक्ष्य सहो होएत। पूर्व-प्राथमिकसँ कक्षा 12 धरि गुणवत्तापूर्ण समग्र शिक्षा- व्यावसायिक शिक्षा सहित देशक सभ बच्चाकेँ सार्वभौमिक पहुँच आ अवसर प्रदान करबाक लेल एकटा ठोस राष्ट्रीय प्रयास कएल जाएत।

3.2. कुल मिलाकेँ दूटा प्रयास शुरू कएल जाएत जाहिसँ बच्चा सभक विद्यालयमे वापसी होयत आ आगू बच्चा सभकेँ विद्यालय छोड़बासँ रोकल जा सकत। पहिल, प्रभावी आ पर्याप्त मूलभूत ढाँचा तैयार करब जाहिसँ छात्र सभक एकर माध्यम सँ शिशु-विद्यालय सँ कक्षा 12 धरि सभ स्तर पर सुरक्षित और आकर्षक शिक्षा धरि पहुँच होइक। नियमित प्रशिक्षित शिक्षक सभ स्तर पर उपलब्ध करबाक अतिरिक्त ई सुनिश्चित कएल जाएत जे कोनो विद्यालयमे मूलभूत संरचनाक कोनो कमी नहि रहय। सरकारी विद्यालयकेँ विश्वसनीयता फेरसँ स्थापित कएल जाएत आ ओहि लेल विद्यालयक उन्नयन आ विस्तारसँ, आ जतए विद्यालय नहि छैक ओतए अतिरिक्त गुणवत्तापूर्ण विद्यालय बनबाकए आ छात्रावास, विशेष रूपसँ बालिका छात्रावास, धरि सुरक्षित आ व्यावहारिक पहुँच प्रदान करबाक कएल जा सकैत अछि जाहिसँ सभ बच्चा के नीक विद्यालयमे जेबाक आ समुचित स्तर धरि पढ़बाक अवसर भेटि सकए। प्रवासी मजदूर सभक बच्चा आ विविध परिस्थितिमे विद्यालय छोड़ए बला बच्चा सभ कए मुख्यधाराक शिक्षामे घूरा क' आनबाक लेल नागरिक समाजक सहयोगसँ वैकल्पिक आ नवीन शिक्षा केन्द्रक स्थापना कएल जाएत।

3.3. दोसर ई अछि जे विद्यालयमे बच्चा सभक सहभागिता सुनिश्चित कएल जाय, एकरा लेल बहुत ध्यानसँ विद्यार्थी सभ आ ओकर सीखबाक स्तर पर नजर राखए पड़त, जाहिसँ ई सुनिश्चित कएल जा सकत जे ओ (क) विद्यालयमे दाखिला ल' रहल अछि आ उपस्थित भ' रहल अछि (ख) विद्यालय छोड़ि चुकल बच्चा सभकेँ घुरायब आ जँ ओ पढ़ूआ गेल अछि त' पुनः पकड़ बनएबाक लेल पर्याप्त सुविधा उपलब्ध होइक। शुरूआती स्तरसँ ल' कए कक्षा 12 धरि विद्यालयी शिक्षाक माध्यमसँ 18 वर्ष धरि सभ बच्चाकेँ समान गुणवत्ताक शिक्षा प्रदान करबाक लेल उपयुक्त सुविधा प्रणाली उपलब्ध कराओल जाएत। विद्यालय/विद्यालय परिसरसँ जुड़ल सलाहकार या प्रशिक्षित आ योग्य सामाजिक कार्यकर्ता आ शिक्षक सभ विद्यार्थी आ अभिभावकक संग लगातार कार्य करताह आ ओतए जा कए समुदायकेँ संग जुड़ताह जाहिसँ ई सुनिश्चित कएल जा सकत जे विद्यार्थी विद्यालय आबि रहल अछि आ सीखि रहल अछि। नागरिक संगठन/सामाजिक न्याय आ अधिकारिता विभागसँ प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्ता सभ जे राज्य आ जिला स्तर पर दिव्यांग व्यक्ति सभक सशक्तिकरणसँ जुड़ल छथि केर राज्य/केंद्र शासित प्रदेश सरकारक द्वारा अपनाओल गेल विभिन्न नवीन तंत्रक माध्यमसँ एहि आवश्यक काजकेँ करबाक लेल विद्यालयसँ जोड़ल जा सकैत अछि।

3.4. जखन एक बेर विद्यालय सभक मूलभूत संरचना आ सहभागिता सुनिश्चित भ' जाएत, त' कक्षा सभक गुणवत्ताकेँ सुनिश्चित करब छात्र सभकेँ कक्षासँ जोड़ल रखबाक लेल महत्वपूर्ण होएत, जाहिसँ छात्र (विशेष रूपसँ बालिका आ सामाजिक-आर्थिक रूपसँ वंचित समूहक विद्यार्थी) आ हुनक माता पिता विद्यालयमे भागीदारीक प्रति अपन रुचि नहि त्यागि देथि। एकरा लेल स्थानीय भाषा सभक ज्ञानक संग उत्कृष्ट शिक्षकक लेल प्रोत्साहन प्रणालीक आवश्यकता होएत, जे ओहि क्षेत्रमे तैनात कएल जाएत, जतए ड्रॉपआउट दर विशेष रूपसँ बेसी छैक। एकरा संगहि पाठ्यचर्याकेँ बेसी आकर्षक और उपयोगी बनएबाक लेल ओकर पुनर्संरचना कएल जाएत।

3.5. सामाजिक-आर्थिक रूपसँ वंचित समूह (एसईडीजी) पर विशेष जोर दैत सभ छात्रकेँ सीखबामे मदति करबाक लेल विद्यालयी शिक्षाक क्षेत्रकेँ व्यापक बनाबए पड़तैक जाहिसँ औपचारिक आ अनौपचारिक शिक्षाक भीतर सीखबाक विभिन्न रस्ता उपलब्ध भ' सकए। भारतक ओहि युवा सभक लेल जे कोनो विद्यालयमे नियमित रूपसँ अध्ययन नहि क' पाबि रहल अछि नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ ओपन स्कूलिंग (एनआइओएस) आ राज्यक मुक्त विद्यालयक द्वारा प्रस्तुत ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग (ओडीएल) कार्यक्रम चलाओल जाएत। एनआइओएस अपन

वर्तमान कार्यक्रमक अतिरिक्त निम्नलिखित कार्यक्रम सेहो प्रदान करतः ए, बी आ सी स्तरक शिक्षा जे औपचारिक विद्यालय प्रणाली के कक्षा 3, 5 आ 8क बरोबरि अछि; माध्यमिक शिक्षा कार्यक्रम जे कक्षा 10 आ 12क बरोबरि अछि; व्यावसायिक शिक्षा पाठ्यक्रम/कार्यक्रम; आ व्यस्क साक्षरता आ जीवन-संवर्धन कार्यक्रम। राज्य सरकारके प्रोत्साहित कएल जाएत ताकि ओ अपन राज्यमे पूर्वसँ स्थापित स्टेट इंस्टिट्यूट ऑफ़ ओपन स्कूलिंग (एसआइओएस) के सशक्त करबा कए नव संस्थानक स्थापना करबाक आ क्षेत्रीय भाषामे उपरोक्त कार्यक्रम चलाबए।

3.6. सरकारी आ गैर सरकारी परोपकारी संस्था दुनूक लेल विद्यालयक निर्माण केर सुलभ करबाक लेल; संस्कृति, भूगोल, सामाजिक- संरचना स्थानीय विविधताक प्रोत्साहित करब आ शिक्षाकेँ वैकल्पिक मॉडल बनएबाक अनुमति देबाक लेल विद्यालयक निर्माण सम्बन्धी नियम केर सुलभ बनाओल जाएत। एकर ध्यान इनपुट पर कम आ वांछित सीखबाक परिणामसँ सम्बंधित आउटपुट क्षमता पर बेसी केंद्रित रहत। इनपुटस सम्बंधित विनियम किछु विशेष क्षेत्र धरि सीमित रहत जकर अध्याय 8 मे उल्लेख कएल गेल अछि। विद्यालयक अन्य मॉडल केँ सेहो आरंभ कएल जाएत, जाहिमे सार्वजनिक- परोपकारी साझेदारी सेहो सम्मिलित अछि।

3.7. सीखबामे वृद्धि हो, तकरा लेल प्रयास कएल जाएत जाहिमे भूतपूर्व विद्यार्थी आ समुदायसँ स्वयंसेवी प्रयासकेँ सम्मिलित कएल जाएत-जेना विद्यालयमे हरेक बच्चाकलेल ट्यूटोरिंग, साक्षरता शिक्षण आ अन्य मदति हेतु अतिरिक्त कक्षा आयोजित करब, शिक्षककेँ शिक्षणमे मार्गदर्शन आ मदति उपलब्ध करब, विद्यार्थीकेँ व्यवसाय सम्बन्धी मार्गदर्शन देब। एहि दृष्टिसँ स्वस्थ वरिष्ठ नागरिक, विद्यालयक भूतपूर्व विद्यार्थी आ स्थानीय समुदायकेँ सदस्यके चिह्नित कएल जाएत। एहि उद्देश्य केँ पूरा करबाक लेल साक्षर स्वयंसेवक, सेवानिवृत्त कर्मचारी/वैज्ञानिक, भूतपूर्व विद्यार्थी आ शिक्षाविदक द्वारा एकटा डेटाबेस तैयार कएल जाएत।

4. विद्यालयमे पाठ्यक्रम आ शिक्षण-शास्त्र: अधिगम समग्र, एकीकृत, आनंददायी आ रुचिकर हेबाक चाही

5+3+3+4 केर नव योजनामे विद्यालय पाठ्यक्रम आ शिक्षण-शास्त्रकेँ पुनर्गठित करब

4.1. विद्यालयी शिक्षाक पाठ्यक्रम आ शैक्षणिक ढांचाकेँ पुनर्गठित कएल जाएत ताकि ओकरा उत्तरदायी आर प्रासंगिक बनएबाक लेल जाहिसँ 3-8, 8-11, 11-14 आ 14-18 वर्ष के विभिन्न अवस्था पर विद्यार्थीक विकासक अलग-अलग स्थितिक अनुसार ओकर रुचि आ विकासक जरूरत पर नीकसँ ध्यान देल जा सकए। एकरा लेल विद्यालयी शिक्षाक लेल पाठ्यक्रम आ शैक्षणिक ढांचा आ पाठ्यक्रमक रूपरेखा एक 5+3+3+4 योजना सँ मार्गदर्शित होयत, जकर अनुसार क्रमशः मूलभूत स्तर पर (दू भाग मे अर्थात आंगनवाड़ी/शिशु-विद्यालयक 3 साल + प्राथमिक कक्षा 1-2 मे 2 साल, 3 सँ 8 वर्षक बच्चा लगायत) तैयारी स्तर (कक्षा 3-5, 8 सँ 11 वर्षक बच्चा सहित), मध्य विद्यालय स्तर (कक्षा 6-8, 11 सँ 14 वर्षक बच्चा सहित) आ माध्यमिक स्तर (कक्षा 9 सँ 12, 2 चरण मे, मतलब प्रथम चरण मे 9 आ 10 आ दोसर मे 11 आ 12, 14 सँ 18 वर्षक बच्चा सहित) सम्मिलित होएत।

4.2. आधारभूत स्तर पर पाँच वर्षीय लोचदार, बहुस्तरीय खेल/गतिविधि आधारित अध्ययन आ ईसीसीई के पाठ्यक्रम आ शिक्षणशास्त्र सम्मिलित होएत जे कि अनुच्छेद 1.2 मे देल अछि। तैयारी (प्रीप्रेटोरी)स्तर तीन वर्ष के होएत जाहिमे आधारभूत स्तरक खेल, खोज आ गतिविधि आधारित, शिक्षण शास्त्रीय आ पाठ्यपुस्तक आधारित शिक्षण केर सेहो सम्मिलित कएल जाएत, आ किछु हल्लुक पुस्तक सभ सेहो रहत आ संगहि औपचारिक मुदा संवादात्मक कक्षा शैलीक द्वारा अध्ययन-अध्यापनक काज आगू बढ़त, जाहिमे पढ़ब, लिखब, बाजब, शारीरिक शिक्षा, कला, विज्ञान, आ गणित सेहो रहत जाहिसँ सभ विषयक शिक्षणक लेल एकटा सुदृढ़ नेआँ तैयार भ' सकए। मध्य(मिडिल)स्तरमे सेहो तीन वर्षक शिक्षा होएत जे की तैयारी स्तरकेँ शिक्षण-शास्त्रीय आ पाठ्यपुस्तक-आधारित शिक्षण पर आधारित रहतैक, मुदा एहिमे विषय-विशेषज्ञ शिक्षक द्वारा विषय केर अमूर्त अवधारणा पर काज शुरू होएत जाहिमे विज्ञान गणित, कला, खेल, सामाजिक विज्ञान, मानविकी आ प्रयोगात्मक शिक्षा रहत

जकरा लेल एहि स्तर पर विद्यार्थीक पर्याप्त तैयारी भ' चुकल रहतैक। सभ विषयमे अनुभव आधारित शिक्षण आ विषय-विशेषज्ञकें आवि गेलाक बावजूद विषय केर बीच परस्पर सम्बन्ध आ प्रयोगात्मक शिक्षाकें प्रोत्साहन देल जाएत। माध्यमिक विद्यालय स्तरमे चारि वर्षक बहु-विषयक अध्ययन सम्मिलित होयत, जे एहि स्तरक विषय-उन्मुख पाठ्यक्रमीय आ शिक्षण-शास्त्रीय शैली पर आधारित होयत, मुदा बेसी गंभीर, बेसी आलोचनात्मक सोच, जीवन आकांक्षा पर बेसी ध्यान, बेसी लचिलापन आ विद्यार्थी द्वारा विषयक चुनाव के संग होएत। विशेष रूपसँ जँ ककरो इच्छा होइ त' ग्रेड 10 केर बाद कक्षा 11-12 मे व्यावसायिक या विशेषज्ञता प्राप्त विद्यालयमे अन्य पाठ्यक्रमक चुनावक विकल्प लगातार विद्यार्थी लेल बनल रहत।

4.3. उपरोक्त चरण विशुद्ध रूपसँ पाठ्यक्रमणीय आ शैक्षणिक अछि, जकरा किछु एहि तरहसँ निर्मित कएल गेल अछि जाहिसँ बच्चा सभक संज्ञानात्मक विकासक अनुरूप विद्यार्थीकें सीखब भ' सकए, ई चरण राष्ट्रीय आ राज्य शिक्षाक्रम आ शिक्षण-अधिगमक रणनीतिक विकास केर मार्गदर्शन देबामे मदति करतैक, मुदा एकर प्रभाव भौतिक संरचना पर नहि पड़त।

विद्यार्थी सभक समग्र विकास

4.4. सभ स्तर पर पाठ्यचर्चा आ शिक्षा विधि केर समग्र केंद्र बिंदु शिक्ष प्रणालीकें रटबाक पुरान प्रथासँ अलग वास्तविक समझ आ ज्ञानक दिस ल' जाएब अछि। शिक्षाक उद्देश्य केवल संज्ञानात्मक बोध टा नहि भ' कए चरित्र निर्माण आ एकैसम शताब्दीक मुख्य कौशलसँ सुसज्जित समग्र आ पूर्ण-विकसित व्यक्तिक निर्माण करब सेहो अछि। अंतमे ज्ञान एकटा नुकायल खजाना अछि आ शिक्षा एकर पूर्णताक रूपमे अभिव्यक्तिमे मदति करैत अछि जे कि कोनो मनुष्यमे पहिने सँ विद्यमान रहैत अछि। पाठ्यचर्चा आ शिक्षाशास्त्रके ई लक्ष्यक प्राप्ति लेल पुनःसंगठित आ निर्मित कएल जाएत। शिशु-विद्यालयसँ उच्चतर शिक्षा धरि प्रत्येक स्तर पर एकीकरणक लेल विभिन्न क्षेत्रमे विशिष्ट कौशल आ मूल्यक पहिचान कएल जाएत। शिक्षण आ अधिगम प्रक्रियाक विकास कएल जा रहल अछि जाहिसँ ई कौशल आ मूल्य कए शिक्षण आ अधिगमसँ आत्मसात कएल जा सकए। ई सुनिश्चित करबाक लेल एनसीईआरटी एहि कौशल समूह केर चिह्नित करत आ आरंभिक बाल्यावस्था आ विद्यालय शिक्षाक लेल राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा ढांचामे एकरा मिलेबाक तंत्र सेहो एहिमे सम्मिलित रहत।

अनिवार्य अधिगम आ आलोचनात्मक चिंतनकें बढ़ेबाक लेल पाठ्यक्रमक विषय-वस्तुकें कम करब

4.5. पाठ्यक्रमक विषय-वस्तुकें प्रत्येक विषयमे कम क' कए एकरा बुनियादी चीज पर केंद्रित कएल जाएत जाहिसँ आलोचनात्मक चिंतन आ समग्र, खोज-आधारित, चर्चा-आधारित आ विश्लेषण-आधारित अधिगम पर बेसी ध्यान देल जा सकए। ई विषय- वस्तु आब मुख्य अवधरणा, विचार, अनुप्रयोग आ समस्या-समाधान पर केंद्रित रहत। शिक्षण आ अधिगम बेसी संवादात्मक तरीकासँ संचालित होएत; प्रश्न पूछबा के प्रोत्साहित कएल जाएत, आ कक्षामे नियमित रूपसँ बेसी रुचिकर, रचनात्मक, सहयोगात्मक आ खोजपूर्ण गतिविधि होएत जाहिसँ गहन आ प्रयोगिक सीख सुनिश्चित कएल जा सकए।

प्रायोगिक अधिगम

4.6. सभ चरणमे प्रयोग-आधारित अधिगमकें अपनाओल जाएत, जाहिमे अन्य वस्तुक अतिरिक्त व्यावहारिक अधिगम आ प्रत्येक विषयमे कला आ खेल-एकीकृत, कथा-आधारित शिक्षण-शास्त्रकेर प्रत्येक विषयमे एकटा मानक शिक्षण-शास्त्रक रूपमे देखल जाएत संगहि विभिन्न विषयक बीच सम्बन्ध कें ताकल जाएत। सीखबाक परिणाम (लर्निंग आउटकम) केर प्राप्तिक बीचक अंतर कें पाटबाक लेल कक्षा-कक्षीय प्रक्रिया क्षमता-आधारित अधिगम आ शिक्षाक दिस उन्मुख कएल जाएत। आकलनक उपकरण (जाहिमे सिखब "के रूप मे", "का" "के लेल" आकलन सम्मिलित अछि) केर देल गेल वर्ग सभक विषयक सीखबाक परिणाम, क्षमता आ रूझानक संग सेहो संरेखित कएल जाएत।

4.7. कला-समन्वय एकटा बहु-विषयक शैक्षणिक दृष्टिकोण अछि जाहिमे विविध- विषयक अवधारणाक सीखबाक आधारक रूपमे कला आ संस्कृति केर विभिन्न अवयवक उपयोग कएल जाइत अछि। अनुभव आधारित अधिगम पर विशेष जोर देबाक लेल कला-समन्वित शिक्षणक कक्षा प्रक्रियामे स्थान देल जाएत जाहिसँ नहि केवल कक्षा बेसी आनंदपूर्ण बनत अपितु भारतीय कला आ संस्कृतिक सभ स्तरक शिक्षणमे समावेशसँ भारतीयतासँ सेहो बच्चाकेँ परिचय भ' सकतैक। एहि कला-समन्वयक दृष्टिकोणसँ शिक्षा आ संस्कृतिक परस्पर संबंध केर सेहो मजबूती भेटतैक।

4.8. खेल समन्वय एकटा आर बहु-विषयक शैक्षणिक दृष्टिकोण अछि जकरा तहत स्थानीय खेलकेँ सेहो शारीरिक गतिविधिमे उपयोग कएल जाइत अछि, जाहिसँ परस्पर सहयोग, स्वतः पहल करब, स्वयं निर्देशित भ' कए काज करब, स्व-अनुशासन, समूह भावना, जिम्मेदारी, नागरिकता, आदि सन कौशल शैक्षणिक अभ्याससँ विकसित करबामे सहायता भ' सकए। खेल समन्वय अधिगम कक्षाक अभ्यंतर होएत जाहिसँ छात्रक स्वास्थ्यक लेल एकटा आजीवन दृष्टिकोण अपनाओल जाएत आ स्वस्थ भारत अभियान (फिट इंडिया मूवमेंटक) परिकल्पनाक अनुसार आरोग्यक स्तरक संगे-संग संबंधित जीवन कौशल प्राप्त करबामे मदति भेटि सकत। शिक्षामे खेल केर समन्वयक आवश्यकता केँ पहिनेसँ चिन्हल जा चुकल अछि कि एक त' एहिसँ बच्चा सभक शारीरिक आ मनोवैज्ञानिक कल्याणक माध्यमसँ सर्वांगीण विकास होइत छैक आ संज्ञानात्मक क्षमता सेहो बढ़ैत छैक।

पाठ्यक्रम चुनावक विकल्पमे लचीलापनक माध्यमसँ छात्रकेँ सशक्त बनायब

4.9. विद्यार्थीकेँ, विशेष रूपसँ माध्यमिक विद्यालयमे अध्ययन करबाक लेल बेसी लचीलापन प्रदान कएल जाएत आ विषयक चुनाव केर विकल्प देल जाएत- एहिमे शारीरिक शिक्षा, कला, शिल्प आ व्यावसायिक विषय सेहो सम्मिलित होएत- जाहिसँ विद्यार्थी अध्ययन आ जीवन केर योजना केँ अपन दिशा तैयार करबाक लेल स्वतंत्र भ' सकए। वर्ष-प्रतिवर्ष समग्र विकास ओ विषय आ पाठ्यक्रमक विस्तृत चुनावक विकल्प माध्यमिक विद्यालय शिक्षाक नव विशिष्ट विशेषता होएत। 'पाठ्यक्रम', 'अतिरिक्त पाठ्यक्रम' या 'सह-पाठ्यक्रम' केर बीच, वा कला, मानविकी या विज्ञान केर बीच, वा व्यावसायिक या अकादमिक शिक्षणक बीच कोनो पैघ अंतर नहि होयत। भौतिक शिक्षा, कला आ शिल्प, आ व्यावसायिक कौशल सन विषय कए, ई विचार करैत कि बएसक प्रत्येक मोड पर विद्यार्थीक लेल रुचिपूर्ण आ सुरक्षित अछि कि नहि, विद्यालयक पूरा पाठ्यक्रममे सम्मिलित कएल जाएत।

4.10. विद्यालयी शिक्षाक चारि चरणमे प्रत्येक, विभिन्न क्षेत्रमे जे संभव हो ओकर अनुसार, एक छमाही(सेमेस्टर) या अन्य प्रणालीके आओरो बढ़ेबा पर विचार क' सकैत अछि जे छोट इकाई केर सम्मिलित करबाक अनुमति दैत अछि या एहन पाठ्यक्रम जाहिमे एक दिन छोड़िक' शिक्षण होइत अछि, जाहिसँ बेसी विषयसँ संसर्ग भ' सकए, आ बेसी लचीलापन सुनिश्चित कएल जा सकय। राज्य सभक कला, विज्ञान, मानविकी, भाषा, खेल, आ व्यावसायिक विषय सहित, बेसी सँ बेसी लचीलापन, संसर्ग आ आनंद व्यापक श्रेणीक विषय केर संग होइक, एहि उद्देश्यक प्राप्ति करबाक लेल अभिनव तरीका सभ पर ध्यान देबाक चाही।

बहुभाषावाद आ भाषाक शक्ति

4.11. ई सर्वविदित अछि जे छोट बच्चा अपन घरक भाषा/मातृभाषामे सार्थक अवधारणाकेँ बेसी शीघ्रतासँ सीखैत अछि आ बुझि जाइत अछि। घरक भाषा बेसीकाल मातृभाषा वा स्थानीय समुदायक द्वारा बाजल जाए वला भाषा होइत अछि। ओना, कतेको बेर बहुभाषी परिवार सभमे, परिवारक अन्य सदस्यक द्वारा बाजल गेल भाषा एकटा घरेलू भाषा भ' सकैत अछि, जे कखनो कखनो मातृभाषा या स्थानीय भाषासँ भिन्न भ' सकैत अछि। जतए धरि संभव भ' सकए, कम-सँ-कम ग्रेड 5 धरि मुदा बेसी नीक होएत जे ग्रेड 8 आ ओकरासँ आगू धरि सेहो, शिक्षाक माध्यम, घरक भाषा/मातृभाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा होइक। एकर बाद, घर/स्थानीय भाषा के, जतए धरि संभव होइक, भाषाक रूपमे पढाओल जाएत। सार्वजनिक आ निजी, दुनू तरहक विद्यालय एकर अनुपालन करत। विज्ञान सहित सभ विषयमे उच्चतर गुणवत्ता वला पाठ्यपुस्तक केँ घरेलू भाषा/मातृभाषामे उपलब्ध कराओल

जाएत। ई सुनिश्चित करबाक लेल सभ प्रयास जल्दिए कएल जाएत जे बच्चाक द्वारा बाजल जाए बला आ शिक्षणक माध्यमक बीच जँ कोनो अंतराल अछि त' ओकरा समाप्त कएल जा सकए। एहन मामिलामे जतए घरेलू भाषाक पाठ्य-सामग्री उपलब्ध नहि अछि, शिक्षक आ छात्रक बीच संवाद केर भाषा सेहो जतए संभव होइक घरक भाषा बनल रहत। शिक्षक आ हुनक छात्रक संग जेकर घरक भाषा/मातृभाषा शिक्षा माध्यम भिन्न छैक, द्विभाषी शिक्षण-अधिगमक सामग्री सहित द्विभाषी दृष्टिकोणकें उपयोग करबाक लेल प्रोत्साहन कएल जाएत। सभ भाषाक सभ छात्रकें उच्चतर गुणवत्ताक संग पढाओल जाएत; एकटा भाषाक नीक सँ शिक्षण आ अधिगमके लेल एकरा शिक्षाक माध्यम हेबाक आवश्यकता नहि छैक।

4.12. जेना कि अनुसंधान स्पष्ट रूपसँ देखबैत अछि जे बच्चा 2 सँ 8 वर्षक बीच बहुत जल्दी भाषा सीखैत छैक आ बहुभाषितासँ एहि बएसक विद्यार्थीकें बहुत बेसी संज्ञानात्मक लाभ होइत अछि, बुनियादी स्तरक शुरु भेलापर आ ओकर बादसँ बच्चा सभक विभिन्न भाषामे (मुदा मातृभाषा पर विशेष जोर देबाक संग) संसर्ग देल जाएत। सभ भाषाकें एकटा मनोरंजक आ संवादात्मक शैलीमे पढाओल जाएत, जाहिमे बहुत रास संवादात्मक गपसप होएत, आ प्रारम्भिक वर्षमे शिक्षणक बाद मातृभाषामे लिखबाक संग ग्रेड 3 आ आगूक कक्षा मे अन्य भाषामे पढबाक आ लिखबाक लेल कौशल विकसित कएल जाएत। केंद्र आ राज्य दुनू सरकारक दिससँ देश भरिक सभ क्षेत्रीय भाषा आ विशेष रूपसँ संविधानक अष्टम अनुसूचीमे वर्णित भाषा सभमे पैघ संख्यामे भाषा शिक्षकमे निवेशक एकटा पैघ प्रयास होएत। राज्य, विशेष रूप सँ भारतक विभिन्न क्षेत्रक राज्य, त्रिभाषिक सूत्र केर अपनेबाक लेल, आ संगे देश भरिमे भारतीय भाषाक अध्ययन कें प्रोत्साहित करबाक लेल पैघ संख्यामे शिक्षक सभक नियुक्ति करबाक लेल द्विपक्षीय समझौता क' सकैत अछि। विभिन्न भाषाक पठन- पाठनक लेल आ लोकप्रिय बनएबाक लेल तकनीक सभक वृहद् उपयोग कएल जाएत।

4.13. संवैधानिक प्रावधान, लोक, क्षेत्र आ संघ केर आकांक्षा आ बहुभाषावाद आ राष्ट्रीय एकता कें प्रोत्साहन देबाक आवश्यकताक ध्यान राखैत त्रिभाषिय सूत्रकें लागू करब जारी राखल जाएत। ओना, त्रि-भाषा फार्मूलाकें बहुत लचकदार राखल जाएत आ कोनो राज्य पर भाषा थोपल नहि जाएत। बच्चा द्वारा सीखल जाए बला तीन भाषाक विकल्प राज्य, क्षेत्र, आ निश्चित रूपसँ छात्रकें होएत; जाधरि कम-सँ-कम तीनमे सँ दूटा भाषा भारतीय नहि होइक। विशेष रूपसँ, जे छात्र तीनमे सँ एक या एक सँ बेसी भाषाकें बदलए चाहैत अछि, ओ एहन ग्रेड 6 या 7 मे कए सकैत अछि, मुदा एहन करबाक लेल ओकरा तीन भाषा मे, (जाहि मे एकटा भारतीय भाषाकें ओकर साहित्यिक स्तर पर) माध्यमिक कक्षाक अंत धरि बुनियादी दक्षता हासिल करय पड़तैक।

4.14. विज्ञान आ गणितमे उच्चतर गुणवत्ता बला द्विभाषी पाठ्यपुस्तक आ शिक्षण-अधिगमक सामग्रीकें तैयार करबाक सभ प्रयास कएल जाएत, जाहिसँ विद्यार्थी दुनू विषय पर सोचबाक आ बाजबाक लेल अपन घरक भाषा/मातृभाषा आ अंग्रेजी दुनूमे सक्षम भ' सकय ।

4.15. जेना की दुनिया भरिक कतेको विकसित देश मे ई देखबामे अबैत अछि जे अपन भाषा, संस्कृति आ परंपरामे शिक्षित होएब कोनो बाधा नहि अछि, अपितु वास्तवमे शैक्षिक, सामाजिक आ तकनीकी प्रगति लेल एकर बहुत पैघ लाभ होइत छैक। भारतक भाषा सभ दुनियामे सभसँ समृद्ध, सभसँ वैज्ञानिक, सभसँ सुन्दर आ सबसँ अधिक भाव बोधक भाषामे सँ अछि, जाहिमे एहि सभ भाषामे लिखल गेल प्राचीन आ आधुनिक साहित्य (गद्य आ कविता दुनू), फिल्म आ संगीत भारतकें राष्ट्रीय पहिचान आ धरोहर अछि। सांस्कृतिक समृद्धि आ राष्ट्रीय एकीकरणक दृष्टिसँ सभ युवा भारतीयकें अपन देशक भाषाकें विशाल आ समृद्ध भंडार आ ओकर साहित्य केर भंडारक संबंधमे जागरूक हेबाक चाही।

4.16. एहि प्रकारँ देशमे प्रत्येक विद्यार्थी पढबाक संगे भारतक भाषा 'द लैंग्वेज ऑफ़ इंडिया'पर एकटा रुचिगर परियोजना/गतिविधिमे भाग लेत; उदाहरणक लेल, ग्रेड 6-8 मे 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' पहलाएहि परियोजना/गतिविधिमे, छात्र प्रमुख भारतीय भाषा सभक उल्लेखनीय एकताके संबंधमे बुझत, जाहिमे ओकर सभक सामान्य ध्वन्यात्मक आ वैज्ञानिक रूपसँ व्यवस्थित वर्णमाला आ लिपि, ओकर सामान्य व्याकरणिय

संरचना, संस्कृत आ आन शास्त्रीय भाषासँ ओकर शब्दावलीक स्रोत आ उद्भव ताकबा सँ ल' कए ई भाषाक समृद्ध अंतर- प्रभाव आ अंतरकें बूझब सम्मिलित होएत। ओ ई इहोबूझत जे कोन भौगोलिक क्षेत्रमे कोन भाषा बाजल जाइत छैक, आदिवासी भाषा सभक प्रकृति आ संरचनाकें बूझत, आ भारतक सभ प्रमुख भाषामे किछु पंक्ति आ वाक्य बाजब सीखत, प्रत्येक भाषाक समृद्ध आ उभरैत साहित्यक बारेमे किछु सीखत (आवश्यक अनुवादक माध्यमसँ) एहि तरहकें गतिविधिसँ ओकरा सभकें भारतक एकता आ सुन्दर सांस्कृतिक विरासत आ विविधता दुनूकें ज्ञान होएत आ अपन पूरा जीवन भरि ओ भारतक अन्य हिस्सा सभक लोकसँ भेंटघांटमे सहज रहत। ई गतिविधि एकटा रुचिकर आ आनंददायी गतिविधि होयत आ एकर कोनो रूपसँ मूल्यांकन नहि होएत।

4.17. भारतक शास्त्रीय भाषा आ साहित्यक महत्व, प्रासंगिकता आ सुंदरता सेहो अन्ठाओल नहि जा सकैत अछि। संस्कृत संविधानक अष्टम अनुसूचीमे वर्णित एकटा महत्वपूर्ण आधुनिक भाषा होइतहु, एकर शास्त्रीय साहित्य एतेक विशाल अछि जे सभटा लैटिन आ ग्रीक साहित्यकें जँ मिला कए एकर तुलना कएल जाए तँ तैयो एकर बराबरी नहि कए सकैत अछि। एकर साहित्यमे गणित, दर्शन, व्याकरण, संगीत, राजनीति, चिकित्सा, वास्तुकला, धातु विज्ञान, नाटक, कविता, कथा, आ बहुत किछु (जकरा "संस्कृत ज्ञान प्रणाली" के रूपमे जानल जाइत अछि) केर विशाल भंडार अछि अछि जेकरा सभक विभिन्न धर्म केर लोकक संगे संगे गैर-धार्मिक लोक आ जीवनक सभ क्षेत्र आ सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमिक लोक द्वारा हजारो वर्षमे लिखल गेल अछि। एहि प्रकारसँ संस्कृत के त्रि-भाषा केर विकल्पक संगे, विद्यालय आ उच्चतर शिक्षाक सभ स्तर पर छात्रक लेल एकटा महत्वपूर्ण, समृद्ध विकल्पक रूपमे देखल जाएत। ई ओहि तरीका सभसँ पढाओल जाएत जे दिलचस्प आ प्रयोगात्मक हेबाक संगे-संग समकालीन रूपसँ प्रासंगिक अछि, जाहिमे संस्कृत ज्ञान प्रणालीक उपयोग सम्मिलित अछि, विशेष रूपसँ ध्वनि आ उच्चारणक माध्यम सँ। मूलभूत आ मध्य विद्यालय स्तर पर पाठ्यपुस्तक के संस्कृतक माध्यमसँ संस्कृत पढ़एबाक लेल (एसटीएस) आ एकर अध्ययनकें आनंददायी बनएबाक लेल सरल मानक संस्कृत (एसएसएस) मे लिखल जा सकैत अछि।

4.18. भारतमे शास्त्रीय तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम आ उडिया सहित अन्य शास्त्रीय भाषा मे अत्यंत समृद्ध साहित्य सब अछि; एहि शास्त्रीय भाषा सभक अतिरिक्त पाली, फ़ारसी, प्राकृत, आ ओकर साहित्य के सेहो ओकर प्रचुरताक लेल आ भावी पीढ़ी सभक उपभोग आ समृद्धिक लेल संरक्षित करबाक चाही। जेना कि भारत पूर्ण रूपसँ विकसित राष्ट्र बनए चाहत, अगिला पीढ़ी भारतके व्यापक आ सुन्दर शास्त्रीय साहित्यक अध्ययनमे भाग लेबय आ ओकरा सँ समृद्ध बनए चाहत। संस्कृतक अतिरिक्त, भारतक अन्य शास्त्रीय भाषा आ साहित्य जाहिमे तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, उडिया, पाली, फ़ारसी आ प्राकृत सम्मिलित अछि, विद्यालयमे सेहो व्यापक रूपसँ छात्रक लेल विकल्पक रूपमे सम्भवतः ऑनलाइन मॉड्यूलक रूपमे प्रयोगात्मक आ अभिनव दृष्टिकोणक माध्यमसँ उपलब्ध होएत जाहिसँ ई सुनिश्चित कएल जा सकत जे ई भाषा आ साहित्य जीवित आ जीवंत रहए। सभ भारतीय भाषा, जे समृद्ध मौखिक आ लिखित साहित्य, सांस्कृतिक परंपरा आ ज्ञानकें अपना संजोगने अछि, केर लेल सेहो एहि प्रकारक प्रयास कएल जाएत।

4.19. देशक बच्चा सभक संवर्धनक लेल, आ ई सभ समृद्ध भाषा आ ओकर कलात्मक भंडारकें संरक्षणक लेल, सभ सार्वजनिक वा निजी विद्यालयमे सभ विद्यार्थीक लग, भारतक शास्त्रीय भाषा आ ओकरासँ जुड़ल साहित्यकें कमसँ कम दू साल धरि सीखबाक विकल्प रहत। प्रयोगात्मक आ नवीन विधि जाहिमे प्रद्योगिकी केर एकीकरण सेहो सम्मिलित होएत, केर माध्यमसँ ग्रेड 6 सँ 12 धरिक विद्यार्थी एकरा सीख सकैत अछि। मध्यसँ माध्यमिक स्तर धरि आ ओकर आगू सेहो एकर अध्ययन करैत रहबाक विकल्प ओकरा सभ लग उपलब्ध रहत।

4.20. भारतीय भाषा आ अंग्रेजीमे उच्चतर गुणवत्ता बला पाठ्यक्रमक अतिरिक्त विदेशी भाषा, जेना कोरियाई, जापानी, थाई, फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश, पुर्तगाली आ रूसी सेहो माध्यमिक स्तर पर व्यापक रूपसँ अध्ययन हेतु उपलब्ध कराओल जायत, जाहिसँ विद्यार्थी विश्व-संस्कृति सभक संबंधमे बुझए आ अपन रुचि आ आकांक्षाक अनुसार अपन वैश्विक ज्ञान कें समृद्ध क' सकए आ दुनिया भ्रमणमे सहजता बढ़ा सकय।

4.21. सभ भाषाक शिक्षण केँ नवीन आ प्रयोगात्मक विधि सभक माध्यमसँ समृद्ध कयल जाएत, जाहिमे सरलीकरण आ ऐप्स केर माध्यमसँ, भाषा सभक सांस्कृतिक पहलू-जेना कि फिल्म, नाटक, कथावाचन, काव्य, आ संगीतकेँ जोड़ैत आ विभिन्न प्रासंगिक विषयक संग आ वास्तविक जीवनक अनुभवक संग सम्बन्ध केँ देखबैत एकरा सीखल जायत। एहि प्रकारेँ, भाषा सभक शिक्षण सेहो प्रयोगात्मक-शिक्षण शिक्षाशास्त्र पर आधारित रहत।

4.22. भारतीय साइन लैंग्वेज (आइएसएल) केँ देश भरिमे मानकीकृत कयल जाएत, आ राष्ट्रीय आ राज्य पाठ्यक्रम सामग्री विकसित कयल जाएत, जे बधिर विद्यार्थी सभक द्वारा उपयोग कयल जाएत अछि। जतए संभव आ प्रासंगिक होइक ओतय स्थानीय सांकेतिक भाषा सभक सम्मान कयल जाएत आ ओकरा सीखाओल जाएत।

अनिवार्य विषय, कौशल आ क्षमताक शिक्षाक्रमीय एकीकरण

4.23. ओना त' विद्यार्थी सभकेँ अपन व्यक्तिगत पाठ्यक्रम केर चुनबामे पैघ मात्रामे लचीलापनक विकल्प भेटबाक चाही, मुदा किछु विषय, कौशल आ क्षमताकेँ सीखब सेहो आवश्यक छैक जाहि सँ आजुक तेजीसँ बदलैत दुनियामे सभ विद्यार्थी एकटा नीक, सफल, अभिनव, अनुकूलनीय आ उत्पादक व्यक्ति बनि सकय। भाषामे प्रवीणताक अतिरिक्त एहि कौशलमे सम्मिलित अछि: वैज्ञानिक स्वभाव आ साक्ष्य-आधारित सोच; रचनात्मकता आ नवीनता; सौंदर्यशास्त्र आ कलाक भावना; मौखिक आ लिखित अभिव्यक्ति आ संवाद; स्वास्थ्य आ पोषण; शारीरिक शिक्षा, फिटनेस, स्वास्थ्य आ खेल, सहयोग आ सामूहिक काज; समस्याकेँ हल करब आ तार्किक चिंतन; व्यावसायिक संसर्ग आ कौशल, डिजिटल साक्षरता, अंकिकी(कोडिंग) आ गणनात्मक चिंतन, नैतिकता आ नैतिक तर्क, मानव आ संवैधानिक मूल्यक ज्ञान आ अमल करब, लैंगिक संवेदनशीलता, मौलिक कर्तव्य, नागरिकता कौशल आ मूल्य, भारतक ज्ञान, पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता, जाहिमे पानि आ संसाधनक संरक्षण, स्वच्छता आ साफ़- सफाई सम्मिलित अछि; आ सामायिक ज्ञान आ स्थानीय समुदाय, राज्य, देश आ दुनिया द्वारा जे महत्वपूर्ण मुद्दा सभक सामना कयल जा रहल अछि तकर ज्ञान।

4.24. प्रासंगिक पाठ्यचर्या आ शैक्षणिक पहलमे विषय, जेना कृत्रिम बुद्धिमता (एआइ), रचना(डिजाइन) चिंतन, समग्र स्वास्थ्य, जैविक जीवन, पर्यावरण शिक्षा, वैश्विक नागरिकता शिक्षा (जीसीईडी) आदि समसामयिक विषय सभक प्रारंभ सहित सभ स्तर पर छात्रमे एहि महत्वपूर्ण कौशलकेँ विकसित करबाक हेतु ठोस पाठ्यक्रमीय आ शिक्षण-शास्त्रीय डेग उठाओल जाएत।

4.25. ई मानल जाइत अछि जे कि गणित आ गणितीय सोच भारतक भविष्य आ कतेको आगामी क्षेत्र आ पेशामे भारतक नेतृत्वकारी भूमिकाक लेल बहुत महत्वपूर्ण होइत अछि, जाहिमे कृत्रिम बुद्धिमता (एआइ), मशीन लर्निंग, आ डेटा विज्ञान सम्मिलित अछि। एहि प्रकारेँ गणित आ गणनात्मक सोचकेँ विभिन्न प्रकारक अभिनव तरीका सभक माध्यमसँ मूलभूत स्तरसँ शुरू क' कए विद्यालयक पूरा अवधिक अभ्यंतर विभिन्न तरीका, जाहिमे पहेली आ खेल सभक नियमित उपयोग सम्मिलित अछि, जे गणितीय सोचकेँ बेसी आनंददायी आ आकर्षक बनाबैत अछि, केर माध्यम सँ सीखबा पर जोर देल जाएत। मध्य विद्यालय स्तर पर कोडिंग सम्बन्धी गतिविधि शुरू भ' जाएत।

4.26. प्रत्येक विद्यार्थी ग्रेड 6 सँ 8 धरि मध्य राज्य आ स्थानीय समुदाय द्वारा तय कयल गेल आ स्थानीय कुशल आवश्यकताक हिसाबसँ तैयार खाकाक अनुसार एकटा मनोरंजक पाठ्यक्रम तैयार करत, जे कि महत्वपूर्ण व्यावसायिक शिल्प, जाहिमे कमारक काज, बिजलीक काज, धातुक काज, बागवानी, माटिक बासनक निर्माण, आदि केँ देखाओल जाएत आ अपन हाथसँ काज करबाक अनुभव प्रदान कयल जाएत। ग्रेड 6-8क लेल एकटा अभ्यास -आधारित पाठ्यक्रमकेँ एनसीएफएसई 2020-21तैयार करैत एनसीईआरटी द्वारा उचित रूपसँ निर्मित कयल जाएत। कक्षा 6 सँ 8 मे पढबाक बीच सभ विद्यार्थी किछु समयक लेल एकटा दस दिनक बस्ता-रहित अवधिमे भाग लेत जाहिमे ओ व्यावसायिक विशेषज्ञ जेना कमार, माली, कुम्हार, कलाकार आदिक संग प्रशिक्षक रूपमे काज करत। एहि तर्ज पर कक्षा 6 सँ 12 धरि, छुट्टीक समय सेहो, विभिन्न व्यावसायिक विषय सीखबाक लेल इंटरशिप केर अवसर प्रदान कयल जा सकैत छैक। ऑनलाइन माध्यममे व्यवसाहयिक कोर्स उपलब्ध कराओल जा

सकैत छैक। वर्ष भरिमे एहन बस्ता-रहित दिन केर, प्रश्नोत्तरी, खेल, व्यावसायिक हस्तकला सन समृद्ध करए बला कलाक प्रोत्साहन देल जायत। बच्चा सभक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक आ पर्यटन महत्व केर स्थान/स्मारक आदिक भ्रमण करबाक लेल, स्थानीय कलाकार आ शिल्पकारसँ साक्षात्कार करबाक लेल आ अपन गाम/तहशील, जिला, राज्यमे उच्चतर शैक्षणिक संस्थानक भ्रमण करबाक माध्यमसँ विद्यालयक बाहरक गतिविधिक लेल आवधिक महत्व देल जायत।

4.27. “भारतक ज्ञान” मे आधुनिक भारत आ सफलता आ चुनौती सभक प्रति प्राचीन भारतक ज्ञान आ ओकर योगदान सम्मिलित होएत, आ शिक्षा, स्वस्थ, पर्यावरण, आदिक सम्बन्धमे भारतक भविष्य केर आकांक्षा केर स्पष्ट बोध सम्मिलित होएत। एहि सभकेँ पूरा विद्यालय पाठ्यक्रममे जतए कतहुँ प्रासंगिक होइक, ओतए सटीक आ वैज्ञानिक तरीकासँ सम्मिलित कयल जाएत; विशेष रूपसँ अदिवासी ज्ञान सहित भारतीय ज्ञान प्रणाली, आ सीखबाक स्वदेशी आ पारम्परिक तरीका पढाओल जाएत आ गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन, योग, वास्तुकला, चिकित्सा, कृषि, इंजीनियरिंग, भाषा विज्ञान, साहित्य, खेलक संगे-संग शासन, राज्यव्यवस्था, संरक्षण, आदि विषयकेँ सम्मिलित कयल जाएत। आदिवासी जातीय -औषधि प्रथा, वन प्रबंधन, परम्परागत (जैविक) फसलक खेती, प्राकृतिक खेती आदि सेहो विशिष्ट पाठ्यक्रममे उपलब्ध कराओल जाएत। भारतीय ज्ञान प्रणाली पर एकटा आकर्षक पाठ्यक्रम विकल्पक रूपमे माध्यमिक विद्यालयक छात्रक लेल उपलब्ध रहत। मनोरंजक आ देशज खेलक माध्यमसँ विभिन्न विषय सीखबाक लेल विद्यालयमे प्रतियोगिता कराओल जा सकैत अछि। पूरा विद्यालय पाठ्यक्रमक अंतरालमे क्षेत्रमे प्राचीन आ आधुनिक भारतक प्रेरणादायक महापुरुष सभ पर वीडियो वृत्तचित्र देखाओल जाएत। सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमक हिस्साक रूपमे छात्र सभकेँ विभिन्न राज्य सभक भ्रमणक लेल प्रोत्साहित कयल जाएत।

4.28. विद्यार्थी सभक कम अवस्थामे "जे सही अछि से करबाक" महत्वकेँ सीखाओल जाएत, आ नैतिक निर्णय लेबाक लेल एकटा तार्किक ढाँचा देल जाएत। बादक वर्षमे, एहि मुद्दा केर विभिन्न प्रसंग जेना धोखाधड़ी, हिंसा, लेखनीय चोरी, गंदगी पसारब, सहिष्णुता, समानता, सहानुभूति इत्यादिक मदतिसँ विस्तार देल जेतैक, जाहिमे बच्चा केँ अपन जीवनक संचालन करबामे नैतिकता/नैतिक मूल्य केँ अपनाबयक लेल सक्षम बनएबाक बहुत रास दृष्टिकोणसँ एकटा नैतिक मुद्दा सभक बारेमे तर्क बनएबाक आ निर्णय लेबाक, आ सभ कार्यमे नैतिक आचरणकेँ अपनाबयमे सक्षम बनएबा पर जोर देल जाएत। एहि तरहँ विकसित भेल नैतिक बोधक चलते पारम्परिक भारतीय मूल्य बुनियादी मानवीय आ संवैधानिक मूल्य (जेना सेवा, अहिंसा, स्वच्छता, सत्य, निष्काम-कर्म, शांति, त्याग, सहिष्णुता, विविधता, बहुलवाद, नैतिक- आचरण, लैंगिक संवेदनशीलता, बूढ़ लोकक लेल सम्मान, सभ लोक आ ओकर अन्तर्हित क्षमताक सम्मान, पर्यावरणक प्रति सम्मान, मदति करब, शिष्टाचार, धैर्य, क्षमा, समानुभूति, करुणा, देशभक्ति, लोकतांत्रिक दृष्टिकोण, अखंडता, जिम्मेदारी, न्याय, स्वतंत्रता, समानता, आ बंधुत्व) केर भावना विद्यार्थी मे विकसित कयल जा सकत। बच्चा सबकेँ पंचतंत्रक मूल कहानी, जातक, हितोपदेश, आ अन्य मनोरंजक दंतकथा आ भारतीय परम्परासँ प्रेरक कहानी सभ पढबाक आ सीखबाक लेल अवसर भेटतैक आ वैश्विक साहित्य पर ओकर प्रभावक बारेमे सेहो ओ सभ बुझत। भारतीय संविधानक अंश सेहो छात्रक लेल पढब आवश्यक मानल जाएत। स्वास्थ्यमे बुनियादी प्रशिक्षण जाहिमे निवारक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य, नीक पोषण, व्यक्तिगत आ सार्वजनिक स्वच्छता, आपदा प्रतिक्रिया आ प्राथमिक चिकित्सा सम्मिलित अछि आ संगे-संग शराब, तमाकू आ अन्य मादक पदार्थक हानिकारक आ विपरीत प्रभावक वैज्ञानिक व्याख्याकेँ सेहो पाठ्यक्रममे सम्मिलित कयल जाएत।

4.29. मूलभूत स्तरसँ शुरू क' कय बांकी सभ स्तर धरि, पाठ्यचर्या आ शिक्षण-शास्त्रकेँ एकटा मजगूत भारतीय आ स्थानीय संदर्भ देबाक दृष्टिसँ पुनर्गठित कयल जाएत जकरा अंतर्गत संस्कृति, परंपरा, विरासत, रीति- रेवाज, भाषा, दर्शन, भूगोल, प्राचीन आ समकालीन ज्ञान, सामाजिक आ वैज्ञानिक आवश्यकता, सीखबाक स्वदेशी आ पारम्परिक तरीका आदि सभ पक्ष सम्मिलित होएत जाहिमे शिक्षा यथासंभव रूपसँ हमर सभक छात्र सभक लेल अधिकतम सम्बंधित, प्रासंगिक रोचक आ प्रभावी भ' सकय। कहानी, कला, खेल, उदहारण आ समस्या आदिक

चयन जतए धरि संभव हो भारतीय आ स्थानीय भौगोलिक सन्दर्भक आधार पर कयल जाएत। अमूर्त चिंतन, नव विचार आ रचनात्मकता केर निश्चित बेसी नीकसँ निखरत जखन अधिगम अपन जडिसँ जुडल रहतैक।

विद्यालयी शिक्षाक लेल राष्ट्रीय पाठ्यचर्याक रूपरेखा (एनसीएफएसई)

4.30. विद्यालयी शिक्षाक लेल एकटा नव आ व्यापक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा एनसीएफएसई 2020-21 एनसीईआरटी द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी)2020 केर सिद्धान्त, अग्रणी पाठ्यचर्याक आवश्यकताक आधार पर आ राज्य सरकार, मंत्रालय, केंद्र सरकारक संबंधित विभाग आ अन्य विशेषज्ञ निकाय सहित सब हितधारकक संग परामर्श क' तैयार कयल जाएत आ एकरा सभ क्षेत्रीय भाषा सभमे उपलब्ध कराओल जाएत। ओकर बाद एनसीएफएसई दस्तावेजकेँ प्रत्येक 5-10 वर्षमे महत्वपूर्ण पाठ्यचर्याकेँ ध्यानमे राखैत समीक्षा एवं अद्यतनीकरण कयल जाएत।

स्थानीय विषय-वस्तु आ विशिष्टताक संग राष्ट्रीय पाठ्यपुस्तक

4.31. विद्यालयी पाठ्यक्रमक बोझमे कमी, बढल लचीलापन, आ रटंत विद्याक बजाए रचनावादी तरीका सँ सीखबा पर नव तरीकासँ जोरक संगे-संगे विद्यालयक पाठ्यपुस्तकमे सेहो बदलाव हेबाक चाही। सभ पाठ्यपुस्तकमे राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण मानल जाए बला आवश्यक मूल सामग्री (चर्चा, विश्लेषण, उदाहरण, आ अनुप्रयोगक संग) केँ सम्मिलित करबाक होयत, मुदा एकरा संगे स्थानीय सन्दर्भ आ आवश्यकतानुसार कोनो वांछित सूक्ष्म आ पूरक सामग्री केँ सेहो सम्मिलित करबाक चाही। जतए संभव हो, शिक्षकक लग' सेहो तय पाठ्यपुस्तकमे कतेको विकल्प होएत-अनेको पुस्तकक संग्रह जाहिमे अपेक्षित राष्ट्रीय आ स्थानीय सामग्री सम्मिलित होएत-एकरा चलते ओ एहि तरीकासँ पढा सकतथि जे हुनका अपन शिक्षण-शास्त्रीय शैली आ हुनकर छात्रक एवं समुदायक आवश्यकताक अनुसार होइक।

4.32. एकर उद्देश्य रहत जे छात्रकेँ आ शिक्षा व्यवस्था पर पाठ्यपुस्तकक मूल्यक बोझ केर कम करबाक लेल एहि तरहक गुणवत्ताक पाठ्यपुस्तककेँ न्यूनतम संभव लागत- उत्पादन/मुद्रणक लागत- पर उपलब्ध करवाओल जाइक। एकरा एनसीईआरटी केर संयोजनमे एनसीईआरटी द्वारा विकसित उच्चतर गुणवत्ता बला पाठ्यपुस्तक सामग्रीक उपयोग क' कय पूरा कयल जा सकैत अछि; एकर अतिरिक्त पाठ्यपुस्तक सामग्रीक लेल सार्वजनिक/परोपकारी भागीदारी लोक सभसँ धन एकत्र क' कय सेहो लागत लगाओल जा सकैत अछि जकर उपयोग विशेषज्ञकेँ एहन उच्चतर गुणवत्ता बला पाठ्यपुस्तकक लागत-मूल्य पर लिखबाक लेल प्रोत्साहित करबाक लेल कयल जा सकैत अछि। राज्य अपन पाठ्यक्रममे (जतए धरि संभव भ' सकए एनसीईआरटी द्वारा तैयार एनसीएफएसई पर आधारित भ' सकैत अछि) तैयार करत आ पाठ्यपुस्तक (जतए धरि संभव भ' सकए एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तक सामग्री पर आधारित होइक) केँ तैयार करत, जाहिमे स्थानीय रुचि आ सामग्रीक आवश्यकताक अनुसार सम्मिलित कयल जाएत। एहन करबाक समय, ई ध्यानमे रखबाक चाही जे एनसीईआरटी पाठ्यक्रमकेँ राष्ट्रीय रूपसँ स्वीकार्य मानदंडक रूपमे लेल जायत। सभ क्षेत्रीय भाषामे एहन पाठ्यपुस्तकक उपलब्धता सर्वोच्च प्राथमिकता होएत, जाहिसँ सभ छात्रकेँ उच्चतर- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त होइक। विद्यालयमे पाठ्य पुस्तकक समय पर उपलब्धता सुनिश्चित करबाक लेल सभ प्रयास कयल जायत। पर्यावरणकेँ संरक्षित करबाक लेल आ व्यवस्थात्मक बोझ केर हल्लुक करबाक लेल सभ राज्य/केंद्रशासित प्रदेश आ एनसीईआरटी द्वारा सभ पाठ्यपुस्तक केँ डाउनलोड आ मुद्रित करबाक सुविधा उपलब्ध कराओल जाएत।

4.33. पाठ्यक्रम आ शिक्षणशास्त्रमे उपयुक्त परिवर्तनसँ विद्यालयक बस्ता आ पाठ्यपुस्तकक बोझकेँ पर्याप्त रूपसँ हल्लुक करबाक लेल एनसीईआरटी, एससीईआरटी, विद्यालय आ शिक्षक द्वारा ठोस प्रयास कयल जाएत।

विद्यार्थीक विकासक लेल आकलनमे परिवर्तन

4.34. हमर सभक विद्यालयी शिक्षा प्रणाली केर संस्कृतिमे आकलनक उद्देश्य योगात्मक अछि- आ मुख्य रूपसँ रटि क' याद करबाक कौशल केर जाँचैत अछि-से हटा कय बेसी नियमित आ रचनात्मक आकलनक दिस ल' जाय पड़त-जे बेसी दक्षता-आधारित अछि आ हमर सभक विद्यार्थीक सीखबा केर आ ओकर विकासकेँ प्रोत्साहन दैत अछि, आ हुनकर उच्चतर -स्तरीय दक्षता जेना कि विश्लेषण, तार्किक चिंतन आ अवधारणात्मक स्पष्टताक जाँचैत अछि। आकलन केर प्राथमिक उद्देश्य वास्तव मे सीखबाक लेल होएत आ शिक्षक आ विद्यार्थी आ पूरा विद्यालयी शिक्षा प्रणालीमे मदति करत, सभ विद्यार्थीक लेल सीखब आ विकासक अनुकूलन करबाक लेल, शिक्षण आ सीखबाक प्रक्रियाकेँ लगातार संशोधित करबामे मदति करत। ई शिक्षाक सभ स्तर पर मूल्यांकनक लेल अंतर्निहित सिद्धान्त होएत।

4.35. प्रस्तावित राष्ट्रीय आकलन केंद्र, एनसीईआरटी आ एससीईआरटीक मार्गदर्शनसँ राज्य/केंद्रशासित प्रदेश द्वारा सभ विद्यार्थीकेँ विद्यालय अधिकृत आकलनक आधार पर तैयार होइ बला आ अभिभावक द्वारा देल जाए बला प्रगति कार्डक पूर्ण रूपसँ नव स्वरूप देल जाएत। ई प्रगति कार्ड एकटा समग्र, 360 डिग्री, बहु-आयामी कार्ड होएत जाहिमे प्रत्येक विद्यार्थीकेँ संज्ञानात्मक, भावात्मक, मनोप्रेरक ज्ञानक्षेत्रमे विकासकेँ सूक्ष्मतासँ कयल गेल विश्लेषणकेँ विस्तृत विवरण, विद्यार्थीक विशिष्टता सहित देल जाएत। एहिमे स्व-मूल्यांकन, सहपाठी- मूल्यांकन, परियोजना कार्य आ खोज आधारित अध्ययनमे प्रदर्शन, प्रश्नोत्तरी, समूह काज, पोर्टफोलियो आदि शिक्षकक मूल्यांकन सहित सम्मिलित होएत। ई समग्र प्रगति कार्ड घर आ विद्यालयक बीच एकटा महत्वपूर्ण कड़ी बनाओत आ ई माता-पिता-शिक्षक बैसारक संगे-संग अपन बच्चाकेँ समग्र शिक्षा आ विकासमे माता-पिताकेँ सम्मिलित करत। ई प्रगति कार्डसँ माता-पिता आ शिक्षककेँ बच्चाक बारेमे महत्वपूर्ण जानकारी सेहो भेटतैक जाहिसँ पता चलत जे कक्षामे आ कक्षाक बाहर विद्यार्थीक कोना सहयोग उपलब्ध कराओल जा सकैत छैक। छात्र द्वारा कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआइ)-आधारित सॉफ्टवेयरक विकास आ उपयोग माता-पिता, छात्र आ शिक्षकक लेल सीखबाक आंकड़ा आ संवादात्मक प्रश्नावलीक आधार पर ओकर विद्यालयक वर्षक बीच हुनकर विकास पर नजरि रखबामे मदति करबाक लेल कयल जा सकैत अछि जाहिसँ छात्र केर ओकर सामर्थ्य, रुचिक क्षेत्र, ध्यान केंद्र केर आवश्यकताक क्षेत्रक बारेमे बहुमूल्य जानकारी प्रदान कयल जा सकय जाहिमे ओकर श्रेष्ठतम आजीविका विकल्प बनएबाक लेल मदति भेटि सकय।

4.36. बोर्ड परीक्षा आ प्रवेश परीक्षा सहित माध्यमिक विद्यालय परीक्षाक वर्तमान प्रकृति आ परिणामस्वरूप आजुक कोचिंग संस्कृति विशेष रूपसँ माध्यमिक विद्यालय स्तर पर बहुत हानि क' रहल छैक जकरा कारणेँ विद्यार्थी अपन बहुमूल्य समय सार्थक अधिगमक बजाए परीक्षाक तैयारी आ कोचिंग केर लेल खर्च क' रहल अछि। ई परीक्षा विद्यार्थीक चुनावक विकल्पमे एकटा लचीलापन- जे भविष्यक व्यक्ति-केंद्रित शिक्षा प्रणालीमे बहुत महत्वपूर्ण होएत- देबाक स्थान पर ओकरा कोनो खास विषय क्षेत्रमे बहुत संकुचित दायरामे पढ़बाक लेल मजबूर करैत छैक।

4.37. जखन कि ग्रेड 10 आ 12क लेल बोर्ड परीक्षा जारी रहत, कोचिंग कक्षाक आवश्यकता केँ समाप्त करबाक लेल बोर्ड आ प्रवेश परीक्षाक मौजूदा प्रणालीमे सुधार कयल जाएत। वर्तमान मूल्यांकन प्रणालीक एहि हानिकारक प्रभाव केँ बदलबाक लेल, बोर्ड परीक्षाक समग्र विकास केँ प्रोत्साहित करबाक लेल फेरसँ प्रारूप बनाओल जाएत, छात्र सभ अपन व्यक्तिगत हितक आधार पर ओहि विषयमे सँ कतेको विषयक चुनाव क' सकैत अछि जाहिमे ओ बोर्ड परीक्षा दैत अछि। बोर्ड परीक्षा केँ सेहो 'हल्लुक' बनाओल जाएत, एहि अर्थमे जे ओ कोचिंग आ रटबाक स्थान पर मुख्य रूपसँ मूल क्षमता/योग्यताक आंकलन करैक। कोनो छात्र जे विद्यालयक कक्षामे जाइत अछि ओ अपना दिस सँ एकटा बुनियादी प्रयास करैत अछि, ओ आसानीसँ बिना कोनो अतिरिक्त प्रयासक सम्बंधित विषय बोर्ड परीक्षा पास क' सकत आ नीक प्रदर्शन क' सकत। बोर्ड परीक्षाक 'उच्च जोखिम' पहलूकेँ समाप्त करबाक लेल सभ

छात्रक कोनो विद्यालय वर्षक बीचमे दू बेरि परीक्षा देबाक अनुमति देल जाएत, एकटा मुख्यपरीक्षा आ जँ वांछित हो त' एकटा सुधारक लेल।

4.38. बेसी लचीलापन अतिरिक्त, विद्यार्थी केँ लेल चुनावक विकल्प, आ सर्वोत्तम दू प्रयास बला आकलन जे मुख्य रूपसँ मुख्य क्षमताटा केँ जाँच करैत छैक- सभ बोर्ड परीक्षाक लेल तत्काल महत्वपूर्ण सुधारक रूपमे देखल जेबाक चाही। एहि बीच बोर्ड द्वारा अपन बोर्ड परीक्षा लेल अन्य समुचित मॉडल सेहो विकसित कयल जा सकैत अछि, जाहि सँ कोचिंग संस्कृति आ परीक्षाकेँ दबाव केँ कम कयल जा सकय। एहन किछु सम्भावनामे ई चीज सम्मिलित भ' सकैत अछि -जाहिमे बहुत कम सामग्रीक संग प्रत्येक परीक्षा लेल जा सकैत अछि- संबंधित पाठ्यक्रम के तुरंत बाद एकरा लेल जेबाक चाही-जाहिसँ माध्यमिक विद्यालय स्तरमे परीक्षाक दबाव बेहतर ढंग सँ वितरित होइक, कम दबाव होइक, आ प्रत्येक परीक्षा पर बहुत किछु दांव पर नहि लागल होइक, गणितसँ शुरू क' कय सभ विषय आ संबंधित आकलन दू स्तर पर उपलब्ध करबाओल जा सकैत अछि-एक कक्षाक स्तर पर आ किछु उच्चतर स्तर पर; आ किछु विषयमे बोर्ड परीक्षा केँ दू भागमे तैयार कयल जा सकैत अछि -एकटा भागमे बहुवैकल्पिक प्रश्न होएत आ दोसरमे विवरणात्मक प्रश्न होएत।

4.39. उपरोक्त सभटा चीजक संबंधमे एनसीईआरटी द्वारा सभ प्रमुख हितधारक, जेना एससीईआरटी, बोर्ड ऑफ़ असेसमेंट (बीओए), प्रस्तावित नव का राष्ट्रीय आकलन केंद्र (एनएसीएसई) आदि आ शिक्षक सभक संग परामर्शसँ दिशानिर्देश तैयार कयल जाएत, जाहि सँ 2022-23शैक्षिक सत्र धरि एनसीएफ 2020-21केँ समानरूप आकलन प्रणालीक सम्पूर्ण रूपसँ बदलल जा सकय।

4.40. सभ विद्यालयी वर्षक दौरान, नहि केवल ग्रेड 10 आ 12क अंतमे—प्रगति पर ध्यान रखबाक लेल छात्र, अभिभावक, शिक्षक, प्रधान शिक्षककेँ लाभक लेल आ विद्यालय आ पूरा विद्यालयी शिक्षा प्रणालीमे शिक्षण-सीखबाक प्रक्रिया मे सुधार करबाक उद्देश्य सँ - सभ विद्यार्थीकेँ, एकटा उपयुक्त प्राधिकरण द्वारा संचालित ग्रेड 3, 5, आ 8 मे विद्यालयी परीक्षा देबाक होएत। ई परीक्षा रटि कय मोन रखबाक बजाए प्रासंगिक उच्चतर- क्रम केर कौशलक आ वास्तविक जीवन स्थितिमे ज्ञानक अनुप्रयोगकेँ संगे-संग राष्ट्रीय आ स्थानीय पाठ्यक्रम सँ मूल अवधारणा आ ज्ञानक मूल्यांकनक माध्यम सँ मूलभूत शिक्षण परिणामक उपलब्धताक परिक्षण करत। विशेष रूप सँ, ग्रेड 3क परीक्षा बुनियादी साक्षरता, संख्या- ज्ञान आ अन्य मूलभूत कौशलक परीक्षण करत। विद्यालय परीक्षाक परिणामक उपयोग केवल विद्यालयी शिक्षा प्रणालीक विकासात्मक उद्देश्यक लेल कयल जाएत-जाहिमे विद्यालय द्वारा ओकर समग्र छात्र परिणाम केँ (अनामीकृत) सार्वजनिक कयल जाएत, संगे विद्यालय प्रणालीक सतत निगरानी आ सुधारक लेल कयल जाएब सम्मिलित अछि।

4.41. एमएचआरडीक तहत एकटा मानक- निर्धारक निकायक रूपमे एकटा राष्ट्रीय मूल्यांकन केंद्र, परख (समग्र विकासक लेल ज्ञानकेँ प्रदर्शन मूल्यांकन, समीक्षा आ विश्लेषण) स्थापित कयल जेबाक प्रस्ताव अछि जे भारतक सब मान्यता प्राप्त विद्यालय बोर्डक लेल विद्यार्थी आकलन एवं मूल्यांकनक लेल मानदंड मानक आ दिशानिर्देश बनबैक लेल जे किछु मूल उद्देश्य केँ पूरा करत आ संगे-संग ई स्टेट अचीवमेंट सर्वे (एसएस) केँ मार्गदर्शन आ नेशनल अचीवमेंट सर्वे (एनएस) केँ संचालन सेहो करत। एकर अतिरिक्त देशमे सीखबाक परिणामक निगरानी करब, एकर नीति के घोषित उद्देश्यक अनुरूप एकैसम सदीक कौशल आवश्यकता केँ पूरा करबाक दिशामे अपन मूल्यांकन प्रतिरूपकेँ बदलबाक लेल विद्यालय बोर्ड सभक मदति करब सेहो एकर उद्देश्य रहत। ई केंद्र नव मूल्यांकन प्रतिरूप आ नवीनतम शोधक बारेमे विद्यालय बोर्डक सलाह सेहो देत, विद्यालय बोर्ड सभक बीच सहयोगकेँ प्रोत्साहन सेहो देत। सभ विद्यालय बोर्डक बीच सर्वोत्तम प्रथाकेँ साझा करबाक लेल आ शिक्षार्थी सभक बीच शैक्षणिक मानकक समानता सुनिश्चित करबाक लेल सभ विद्यालय बोर्डक लेल एकटा उपकरण बनाओल जायत।

4.42. विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षाक लेल सिद्धान्त एक तरहक रहत। राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) उच्चतर गुणवत्ता वाला सामान्य योग्यता परीक्षा, संगे विज्ञान, मानविकी, भाषा, कला, आ व्यावसायिक विषयमे सभ

साल कम-सँ-कम दू बेरि विशिष्ट सामान्य विषयक परीक्षा लेबाक काज करत। एहि परीक्षामे अवधारणात्मक बोध आ ज्ञान केँ लागू करबाक क्षमताकेँ जाँच कयल जाएत, आ एहि परीक्षाक लेल कोचिंग लेबाक आवश्यकताकेँ समाप्त करबाक लक्ष्य होएत। विद्यार्थी ओ विषयक चुनाव क' सकत जाहिमे ओ परीक्षा देबामे रुचि राखैत अछि, आ प्रत्येक विश्वविद्यालय प्रत्येक विद्यार्थीक व्यक्तिगत विषय संविभाग केँ देखि सकत आ विद्यार्थी केँ रुचि आ प्रतिभाक अनुसार ओकरा अपन कार्यक्रममे प्रवेश द'सकत। एनटीए उच्चतर शिक्षा संस्थानमे पूर्वस्नातक आ स्नातकमे दाखिला आ अध्येतावृत्तिक प्रवेश परीक्षा आयोजित करबाक लेल एकटा प्रमुख, विशेषज्ञ, स्वायत्त परिक्षण संगठनक रूपमे काज करत। एनटीए परिक्षण सेवाक उच्चतर गुणवत्ता, विविधता, आ लचीलापनसँ अधिकांश विश्वविद्यालय एहि सामान्य प्रवेश परीक्षाक उपयोग करबामे सक्षम होएत, बजाए एकर कि सैकड़ो विश्वविद्यालय अपन अपन प्रवेश परीक्षा तैयार करए- जकरा चलते विद्यार्थी, विश्वविद्यालय आ महाविद्यालय आ सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था पर भार केँ बहुत रास कम कयल जा सकैत अछि। ई निर्णय विश्वविद्यालय आ महाविद्यालय पर छोड़ि देल जाएत जे ओ अपन प्रवेशक लेल एनटीए प्रवेश मूल्यांकनक उपयोग करत वा नहि।

विशेष प्रतिभावान आ मेधावी छात्रक हेतु सहायता

4.43. प्रत्येक विद्यार्थीमे जन्मजात प्रतिभा होइत छैक, जकरा ताकबाक चाही, पोषण करबाक चाही, प्रोत्साहन देबाक चाही आ ओकर विकास करबाक चाही। ई प्रतिभा अलग- अलग रुचि, मनोवृत्ति, आ क्षमताक रूपमे व्यक्त भ' सकैत अछि। जे छात्र कोनो देल गेल क्षेत्रमे विशेष रुचि आ क्षमता केँ देखबैत अछि, ओकरा ओहि क्षेत्रक सामान्य विद्यालयी पाठ्यक्रमसँ अलगसँ अध्ययन करबाक लेल प्रोत्साहित करबाक चाही। शिक्षक द्वारा शिक्षामे विद्यार्थीक प्रतिभा आ रुचि केँ चिन्हब आ एकरा प्रोत्साहन देबाक तरीका सम्मिलित होएत। एनसीआरटी आ एनसीटीई, प्रतिभाशाली बच्चा सभक शिक्षाक लेल दिशानिर्देश विकसित करत। बी. एड. कार्यक्रम मे सेहो प्रतिभाशाली बच्चा सभक शिक्षामे विशेषज्ञता अर्जित कयल जा सकैत अछि।

4.44. शिक्षकक उद्देश्य छात्रकेँ पूरक संवर्धन सामग्री आ मार्गदर्शन आ प्रोत्साहन द' कय कक्षा मे ओकर सभक एकल रुचि आ/या प्रतिभा सभकेँ प्रोत्साहित करबाक होएत। अलग अलग स्तरकेँ विद्यालय, विद्यालय परिसर, जिला आ ओकर बाहर विषय - केंद्रित आ परियोजना - आधारित क्लब आ सर्कल केँ प्रोत्साहन देल जाएत, जेना उदाहरणक रूपमे मैथ सर्कल, म्यूजिक परफॉरमेंस सर्कल, चैस सर्कल, पोएट्री सर्कल, लैंग्वेज सर्कल, ड्रामा सर्कल, डिबेट सर्कल, स्पोर्ट्स सर्कल, इको-क्लब, स्वास्थ्य आ कल्याण क्लब/योग क्लब इत्यादि। एहि तर्ज पर, विभिन्न विषयमे माध्यमिक विद्यालयक छात्रक लेल उच्चतर गुणवत्ता बला राष्ट्रीय आवासीय ग्रीष्मकालीन कार्यक्रमकेँ सेहो प्रोत्साहित कयल जाएत, जाहिमे पूरा देशसँ सभसँ उत्कृष्ट छात्र आ शिक्षक, जकरा मे सामाजिक- आर्थिक रूपसँ वंचित समूहकेँ विद्यार्थी आ शिक्षक सम्मिलित रहत, केँ आकर्षित करबाक लेल, गहन योग्यता-आधारित मुदा समान प्रवेश प्रक्रिया होएत।

4.45. देश भरिमे विभिन्न विषयमे ओलिंपियाड आ प्रतियोगिताक आयोजित कयल जाएत, जकरामे विद्यालयसँ ल' कय स्थानीय, राज्य आ राष्ट्रीय स्तर पर जरूरी समन्वय केर द्वारा ई सुनिश्चित कयल जाएत जे छात्र सब स्तर पर जाहिमे ओ अर्हता प्राप्त कयने होयत, ओहिमे भाग ल' सकय। व्यापक भागीदारी सुनिश्चित करबाक लेल ग्रामीण क्षेत्र आ क्षेत्रीय भाषामे एकरा उपलब्ध करएबाक प्रयास कयल जाएत। सार्वजनिक आ निजी विश्वविद्यालय, जाहिमे आइआइटी आ एनआईटी सन प्रमुख संस्थान सम्मिलित अछि, केर राष्ट्रीय आ अंतराष्ट्रीय ओलिंपियाडक परिणाम आ अन्य संगत राष्ट्रीय कार्यक्रमक योग्यताक आधार पर परिणामक उपयोग दाखिला सम्बन्धी मानदंडक भागकेँ रूपमे ओकरा अवर-स्नातक कार्यक्रममे प्रवेश करबाक लेल प्रोत्साहित कयल जाएत।

4.46. एक बेरि जखन इंटरनेटसँ जुड़ल स्मार्टफोन या टेबलेट सभ गोटा केर घर आ विद्यालय मे उपलब्ध होएत, त' प्रश्नोत्तरी, प्रतियोगिता, आकलन, संवर्धन वाला ऑनलाइन ऐप आ साझा अभिरुचिक केर लेल ऑनलाइन समुदाय विकसित कयल जाएत, आ सभ उपरोक्त प्रयासकेँ समृद्ध बनएबाक लेल काज कयल जाएत जेना माता-पिता आ शिक्षक के उचित देखरेखमे विद्यार्थीक लेल समूह गतिविधि। विद्यालय चरणबद्ध तरीका सँ स्मार्ट कक्षा-

कक्ष विकसित करत जाहिसँ डिजिटल शिक्षणशास्त्रक उपयोग भ' सकय आ ओकरा द्वारा ऑनलाइन संसाधन आ सहयोग केर संग सीखबाक-सीखएबाक प्रक्रिया केँ समृद्ध कयल जा सकय।

5. शिक्षक

5.1. शिक्षक वास्तवमे बच्चा सभक भविष्यकेँ आकार दैत छथि, अतः हमर सभक राष्ट्रक भविष्य केँ सेहो निर्माण करैत छथि। एहि नेक योगदानक चलते भारतमे शिक्षक सभसँ बेसी समाजक सम्मानित सदस्य छलाह आ केवल सभसँ नीक आ विद्वान लोक शिक्षक बनैत छलाह। विद्यार्थीकेँ बेहतर ज्ञान, कौशल आ नैतिक मूल्य प्रदान करबाक लेल समाज शिक्षक वा गुरुकेँ हुनकर आवश्यकताक सभटा चीज प्रदान करैत छल। शिक्षक- शिक्षाक गुणवत्ता, भर्ती, पदस्थापन, सेवाक शर्त आ शिक्षकक सशक्तिकरणक स्थिति ओहन नहि अछि जेना हेबाक चाही, आ एकर परिणाम स्वरूप शिक्षकक गुणवत्ता आ उत्साह वांछित मानककेँ प्राप्त नहि कय पाबैत अछि। शिक्षकक लेल उच्चतर दर्जा आ हुनकर प्रति आदर आ सम्मानक भावकेँ पुनर्जीवित करबाक होएत जाहि सँ शिक्षण व्यवसायमे बेसी नीक लोककेँ सम्मिलित करबा हेतु हुनका प्रेरित कयल जा सकत। हमर सभक छात्र आ हमर सभक राष्ट्रक लेल सर्वोत्तम संभव भविष्य सुनिश्चित करबाक लेल शिक्षककेँ प्रेरणा आ सशक्तिकरणक आवश्यकता छैक।

भर्ती आ पदस्थापन

5.2. उत्कृष्ट विद्यार्थी सभ— विशेष क' कय ग्रामीण क्षेत्र सँ -शिक्षणक काजमे प्रवेशक' सकय, ई सुनिश्चित करबाक एकटा उत्कृष्ट 4 वर्षीय बी. एड. कार्यक्रमक लेल पैघ संख्यामे योग्यता-आधारित छात्रवृत्ति देश भरिमे स्थापित कयल जाएत। ग्रामीण क्षेत्र मे, किछु विशेष योग्यता-आधारित छात्रवृत्ति स्थापित कयल जाएत जकरा तहत चारि वर्षीय बी. एड. डिग्री सफलतापूर्वक पूरा कयलाक बाद स्थानीय क्षेत्रमे अधिमान्य रोजगार सेहो सम्मिलित होएत। एहि तरहक छात्रवृत्ति स्थानीय विद्यार्थी (विशेषकर छात्रा) सभ लेल स्थानीय - नौकरी केँ अवसर प्रदान करत जाहिसँ ई विद्यार्थी स्थानीय क्षेत्रक रोल मॉडलकेँ रूपमे आ उच्चतर- योग्य शिक्षा सेवा क' सकथि जे स्थानीय भाषा बजैत होथि। उत्कृष्ट शिक्षकक लेल ग्रामीण क्षेत्रमे शिक्षणक काज करबाक लेल प्रोत्साहन प्रदान कयल जाएत, विशेष रूपसँ एहन क्षेत्रमे जतए वर्तमानमे सभसँ बेसी शिक्षकक कमी केर सामना क' रहल छैक आ उत्कृष्ट शिक्षकक सभसँ बेसी आवश्यकता छैक। ग्रामीण विद्यालय मे पढ़एबाक लेल एकटा प्रमुख प्रोत्साहन विद्यालय परिसरमे या ओकर लगपासमे स्थानीय निवासक प्रावधान होएत या ग्रामीण क्षेत्रमे स्थानीय आवास राखबमे मदति करबाक लेल आवास भत्तामे वृद्धि कयल जायत।

5.3. विद्यार्थी केँ निरंतर रोल मॉडल आ शैक्षिक वातावरण भेटि सकय, एकरा सुनिश्चित करबाक लेल अत्यधिक शिक्षक स्थानांतरणक हानिकारक प्रथा पर रोक लगाओल जाएत। राज्य/केन्द्रशासित प्रदेश सरकारक द्वारा निर्धारित तरीकासँ स्थानांतरण बहुत विशेष परिस्थितिटा मे कयल जाएत। एकर अतिरिक्त पारदर्शिता बना क' राखबाक लेल स्थानांतरण एकटा ऑनलाइन कंप्यूटर आधारित व्यवस्थाक द्वारा कयल जाएत।

5.4. शिक्षक पात्रता परीक्षा (टीईटी) सामग्री आ शिक्षाशास्त्र दुनू केर सन्दर्भमे बेसी नीक परिक्षण सामग्रीकेँ विकसित करबाक लेल सुदृढ बनाओल जाएत। विद्यालय शिक्षाक सभ स्तर (बुनियादी, प्रारंभिक, मध्य आ माध्यमिक) केर शिक्षककेँ सम्मिलित करैत सेहो टीईटीकेँ विस्तृत कयल जाएत। विषय शिक्षकक भर्ती प्रक्रियामे हुनकर सम्बंधित विषयमे प्राप्त टीईटी या एनटीए परीक्षाक अंककेँ सेहो सम्मिलित कयल जाएत। शिक्षणक प्रति जोश आ उत्साह केर जांचबाक लेल साक्षात्कार या कक्षामे पढ़एबाक प्रदर्शनविद्यालय या विद्यालय परिसरमे शिक्षक भर्ती प्रक्रिया के एकटा अभिन्न अंग होएत। एहि साक्षात्कारक उपयोग स्थानीय भाषामे शिक्षणमे सहजता आ दक्षताक आकलन करबाक लेल कयल जाएत जाहिमे प्रत्येक विद्यालय/विद्यालय परिसरसँ कम-सँ-कम किछु शिक्षक होथि जे स्थानीय भाषा आ छात्रकेँ अन्य प्रचलित घरेलू भाषामे छात्रक संगे गप क' सकथि। निजी विद्यालयमे शिक्षककेँ सेहो टीईटी, कक्षामे पढ़ेबा मे प्रदर्शन/साक्षात्कार आ स्थानीय भाषा केर ज्ञानक माध्यमसँ समान रूप सँ योग्य हेबाक चाही।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

5.5. विषयमे शिक्षक केर पर्याप्त संख्या सुनिश्चित करबाक लेल - विशेष रूप सँ कला, शारीरिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा आ भाषा सन विषय मे-शिक्षक केर एकटा विद्यालय या विद्यालय परिसरमे भर्ती कयल जा सकैत अछि, विद्यालयमे शिक्षकक साझेदारी केँ राज्य/केंद्रशासित प्रदेश केर सरकार द्वारा अपनायल गेल गुपिंग - ऑफ़-विद्यालय प्रारूपक अनुसार कयल जा सकैत अछि।

5.6. विद्यालय/विद्यालय परिसरक छात्र केँ लाभान्वित करबाक लेल आ स्थानीय ज्ञान आ विशेषज्ञता केँ प्रोत्साहन देबाक लेल, विभिन्न विषय जेना पारम्परिक स्थानीय कला, व्यावसायिक शिल्प, उद्यमिता, कृषि वा कोनो अन्य विषय जतए स्थानीय विशेषज्ञ उपलब्ध छथि, मे स्थानीय प्रतिष्ठित व्यक्ति सभ या विशेषज्ञ सभकेँ 'विशेष प्रशिक्षक' केर रूपमे रखबाक लेल प्रोत्साहित कयल जाएत।

5.7. अगिला दू दशकमे अपेक्षित विषयवार शिक्षक केर रिक्त स्थानक आकलन करबाक लेल एकटा तकनीक-आधारित व्यापक शिक्षक-आवश्यकता आयोजन आ अनुमान केर काज प्रत्येक राज्यक द्वारा आयोजित कयल जाएत। भर्ती आ पदस्थापनमे ऊपर बताओल गेल सभ नव पहलु केर समयक संग जरूरतक अनुरूप बढ़ाओल जाएत, जकर उद्देश्य सभ रिक्त पद पर स्थानीय शिक्षक सहित योग्य शिक्षक केर नीचाँ वर्णित आजीविका प्रबंधन आ प्रगतिक लेल उपयुक्त प्रोत्साहन सहित भर्ती करब होएत। शिक्षक कार्यक्रम आ प्रस्ताव एहि प्रकार अनुमानित रिक्ति केर सामंजस्यमे होएत।

सेवाकालक दौरान कार्य-संस्कृति आ वातावरण

5.8. विद्यालय केर काजक वातावरण आ संस्कृतिमे अभूतपूर्व परिवर्तन करबाक प्राथमिक लक्ष्य शिक्षकक केर क्षमताकेँ अधिकतम स्तर धरि बढ़ाएबाक होएत, जाहि सँ ओ अपन काज प्रभावी ढंगसँ क' सकथि आ ई सुनिश्चित भ' सकए जे ओ शिक्षक, छात्र, अभिभावक, प्राध्यापक आ अन्य सहायक कर्मचारी केर एकटा समावेशी समुदाय जे कि जीवंत, ध्यान राखए बला आ समावेशी अछि केर हिस्सा बनि सकथि, जे सभ गोटा केँ एकटा सामान्य लक्ष्य ई सुनिश्चित करब होइत जे सभटा बच्चा सीखि रहल अछि।

5.9. एहि दिशामे पहिल आवश्यकता विद्यालयमे सभ्य आ सुखद कार्य स्थिति सुनिश्चित करब होएत। ई सुनिश्चित करबाक लेल विद्यालयमे पर्याप्त आ सुरक्षित भौतिक संसाधन, शौचालय, स्वच्छ पेयजल, सीखबाक लेल स्वच्छ आ आकर्षक स्थान, बिजली, कंप्यूटिंग उपकरण, इंटरनेट, पुस्तकालय, आ खेल आ मनोरंजनक साधन मुहैया करेबाक होएत, जाहिसँ विद्यालय सभक शिक्षक आ छात्र, सभ लैंगिकताकेँ छात्र आ दिव्यांग बच्चा सहित, एकटा सुरक्षित, सामवेदी आ प्रभावी शिक्षण वातावरण प्राप्त क' सकथि आ हुनकर विद्यालय मे शिक्षण-अधिगमक लेल सुविधाजनक आ प्रेरित महसूस करथि। सेवाकालीन प्रशिक्षणमे विद्यालय मे कार्यस्थल पर सुरक्षा, स्वास्थ्य, आ पर्यावरण पर निविष्ट होयताह जाहिसँ ई सुनिश्चित कयल जा सकत जे सभ शिक्षक एहि आवश्यकताक प्रति संवेदनशील छथि।

5.10. प्रभावशाली विद्यालयी प्रशासन, संसाधन केर बँटवारा आ समुदाय केर निर्माणक लेल राज्य/संघ राज्य क्षेत्रक सरकार परिसर वा विद्यालयक युक्तिकरण, विद्यालय धरि पहुँच कम केने बिना, कोना अभिनव प्रारूप अपना सकैत छथि। विद्यालय परिसरक निर्माण जीवंत शिक्षक समुदायक निर्माणक दिशामे एकटा नमगर रस्ता तय क' सकैत अछि। विद्यालय परिसर मे शिक्षक केर उत्कृष्ट विषयवार वितरण केँ सुनिश्चित करबामे सेहो मदति करत, जाहिमे एकटा बेसी जीवंत शिक्षक ज्ञानक आधार बनताह। बहुत छोट विद्यालयक शिक्षक आब अलग-थलग नहि रहतथि आ पैघ विद्यालय परिसर समुदायकेँ संग काज क' सकैत छथि आ सर्वोत्तम व्यवहार केर एक दोसरा सँ साझा क' सकैत छथि आ सामूहिक रूपसँ सहयोगी रूप केर लेल काज करतथि जे सभ बच्चा सीख रहल अछि। शिक्षककेँ आगाँ बढ़ाएबाक लेल आ सीखबाक लेल प्रभावी सामुदायिक वातावरण बनबए मे मदति करबाक लेल विद्यालय परिसर परामर्शदाता, सामाजिक कार्यकर्ता, तकनीकि आ रखरखाव कर्मचारी आदिक सेहो साझा क' सकैत छथि।

5.11. अभिभावक आ अन्य प्रमुख स्थानीय हितधारक सहयोगसँ शिक्षक सेहो विद्यालय आ विद्यालय परिसरक प्रशासनमे विद्यालय प्रबंधन समिति/विद्यालय परिसर प्रबंधन समितिक सदस्यक रूपमे बेसी सम्मिलित होएताह।

5.12. शिक्षक केर बेसी समय गैर-शैक्षणिक गतिविधि करबामे व्यतीत हेबासँ रोकबाक लेल शिक्षकक एहन काज जे शिक्षणसँ सीधा संबंधित नहि छैक हुनका व्यस्त नहि कयल जयतनि। विशेष रूपसँ शिक्षकक जटिल प्रशासनिक काज, मध्याह्न भोजनसँ सम्बंधित काजक लेल तर्कसंगत न्यूनतम समयसँ बेसी समयक लेल सम्मिलित नहि कयल जयतनि, जाहिसँ ओ पूर्ण रूपसँ शिक्षण-अधिगमक काज पर ध्यान द' सकताह।

5.13. ई सुनिश्चित करबाक लेल जे विद्यालय मे सीखबाक लेल सकारात्मक वातावरण होइक, प्रधानाचार्य आ शिक्षकक अपेक्षित भूमिकामे ई स्पष्ट रूपसँ सम्मिलित होएत जे ओ अपन विद्यालय मे प्रभावी अधिगम आ सभ हितधारकक लाभार्थ एकटा संवेदनशील आ समवेशी संस्कृतिक निर्माण करताह।

5.14. शिक्षकक पाठ्यक्रम आ शिक्षणक ओ पहलु सभक चयनित करबाक लेल बेसी स्वायत्ता देल जेतनि, जकरा ओ ओहि तरीकासँ पढा सकथि जे हुनका कक्षा आ समुदायक विद्यार्थी के लेल बेसी प्रभावी होइक। शिक्षक सामाजिक भावात्मक पक्ष पर सेहो ध्यान देताह जे कि विद्यार्थीक सर्वांगीण विकास लेल दृष्टिसँ नितांत आवश्यक पक्ष अछि। शिक्षकक एहन शिक्षण विधि अपनाबय लेल सम्मानित कयल जेतनि जकरासँ कक्षा मे विद्यार्थीक सीखबाक प्रतिफलमे वृद्धि होइक।

सतत व्यावसायिक विकास (सीपीडी)

5.15. शिक्षक के आत्मसुधार करबाक लेल आ पेशासँ सम्बंधित आधुनिक विचार आ नवाचार सीखबाक लेल सतत अवसर देल जेतनि। हुनका स्थानीय, क्षेत्रीय, राज्य, राष्ट्रीय आ अंतरराष्ट्रीय कार्यशालाक संगे-संग ऑनलाइन शिक्षक विकास प्रारूपक रूपमे बहुत रास तरीकासँ प्रस्तुत कयल जाएत। मंच (विशेष रूप सँ ऑनलाइन मंच) विकसित कयल जाएत जाहिसँ शिक्षक विचार आ सर्वोत्तम प्रथा केर साझा क' सकथि। प्रत्येक शिक्षकसँ अपेक्षित होइत जे ओ स्वयं केर व्यावसायिक विकासक लेल स्वेच्छासँ प्रत्येक वर्ष लगभग 50 घंटाक सीपीडी कार्यक्रममे हिस्सा लैथि। सीपीडी केर अवसरमे विशेष रूपसँ मूलभूत साक्षरता आ संख्यात्मक ज्ञानक नवीनतम शिक्षणशास्त्र, अधिगम परिणामक निर्माणत्मक आ अनुकूल आकलन योग्यता आधारित अधिगम आ सम्बंधित शिक्षणशास्त्र जेना अनुभवात्मक शिक्षण, कला-एकीकृत, खेल-एकीकृत, आ कहानी-आधारित दृष्टिकोण, आदि केर क्रमबद्ध रूपमे सम्मिलित कयल जाएत।

5.16. विद्यालयक प्रधानाचार्य आ विद्यालय परिसरक प्रमुखक लेल अपन नेतृत्व क्षमता/प्रबंधन कौशल के लगातार विकसित करबाक लेल एकटा समान मॉड्यूलर नेतृत्व क्षमता/प्रबंधन कार्यशाला आ ऑनलाइन विकास केर अवसर होएत जाहिसँ ओ अपन सर्वोत्तम प्रथा केर एक दोसरा सँ साझा क' सकथि। एहि संस्था प्रमुखसँ सेहो ई अपेक्षित अछि जे ओ प्रति वर्ष 50घंटाक सीपीडी कार्यक्रम मे भाग लेताह। एहि मे योग्यता आ परिणाम-आधारित शिक्षाक आधार पर शैक्षणिक योजनाक तैयार करबा आ लागू करब कें केंद्रित करैत नेतृत्वक्षमता आ प्रबंधन केर संग-संग विषय-वस्तु आ शिक्षण शास्त्र-सम्बन्धी कार्यक्रम सम्मिलित होइक।

व्यवसाय प्रबंधन आ प्रगति (सीएमपी)

5.17. उत्कृष्ट प्रदर्शन क' रहल शिक्षकक पहिचान कयल जएबाक चाही आ हुनका पदोन्नति आ वेतन वृद्धि देबाक चाही जाहिसँ सभ शिक्षकक अपन सर्वोत्तम काज करबाक लेल प्रोत्साहन भेटतनि। अतः एकटा सशक्त योग्यता-आधारित कार्यकाल, पदोन्नति आ वेतन व्यवस्थाक निर्माण कयल जाएत जाहिमे शिक्षकक प्रत्येक स्तर बहुस्तरीय होएत जकरासँ सर्वोत्तम शिक्षकक प्रोत्साहन आ पहिचान भेटतनि। शिक्षकक प्रदर्शनक सही आकलनक लेल राज्य/केंद्र शासित प्रदेशक सरकार द्वारा बहुत रास मापदंडक एकटा व्यवस्था केर स्थापना कयल जाएत जे सहकर्मी द्वारा कयल गेल समीक्षा, उपस्थिति, समर्पण, सीपीडी केर घंटा आ विद्यालय आ समुदायमे कयल गेल

अन्य सेवा या अनुच्छेद 5.20 में देल गेल एनपीएसटी पर आधारित अछि। एहि नीतिमें, आजीविकाक संदर्भमें 'कार्यकाल' सँ आशय प्रदर्शन आ योगदानक आकलनकेँ बाद स्थायी रोजगार सँ अछि, जखन कि 'कार्यकाल ट्रेक' सँ आशय स्थायी हेबासँ पूर्व परिवीक्षा अवधिसँ अछि।

5.18. एकर अतिरिक्त, ई सुनिश्चित कयल जाएत जे कि आजीविकाक वृद्धि (कार्यकाल, पदोन्नति, वेतन, वृद्धि, आदिक संदर्भ में) एकटा एकल चरण (अर्थात् बुनियादी, प्रारंभिक, मध्य, वा माध्यमिक) केर भीतर शिक्षकक लेल उपलब्ध अछि आ प्रारंभिक अवस्थाक बादक चरण में शिक्षकक लेल वा ओकर विपरीत (यद्यपि चरणमें एहि तरहक आजीविका संबंधी कदम उठेबाक इच्छा आ योग्यता होइक) जे आजीविकाक प्रगतिसँ संबंधित कोनो प्रोत्साहन नहि अछि। ई एहि तथ्यक स्थापना करबाक लेल अछि जे कि विद्यालयी शिक्षाक सभ चरणमें उच्चतम-गुणवत्ता बला शिक्षक केर आवश्यकता होएत, आ कोनो चरणकेँ कोनो अन्यक तुलनामें बेसी महत्वपूर्ण नहि मानल जाएत।

5.19. योग्यताक आधार पर शिक्षकक उदग्र गतिशीलता सेहो सर्वश्रेष्ठ होएत; उत्कृष्ट शिक्षक जे नेतृत्व आ प्रबंधन केर कौशल केँ देखौने हेताह हुनका समयक संग प्रशिक्षित कयल जायत जकरासँ ओ आगाँ जा कय विद्यालय, विद्यालय परिसर, बीआरसी, सीआरसी, बीआईटीई, डीआईटीई सभक संगे-संग संबंधित सरकारी विभाग आ मंत्रालय में अकादमिक नेतृत्व क' सकताह।

शिक्षकक लेल व्यावसायिक मानक

5.20. राष्ट्रीय शिक्षा परिषद् द्वारा एनसीईआरटी, एससीईआरटी, सभ स्तर आ क्षेत्रक शिक्षक, शिक्षकक तैयारी आ व्यावसायिक संस्थान आ उच्चतर शिक्षण संस्थानक संग परामर्शसँ सामान्य मानक परिषद (जीईसी) केर तहत व्यावसायिक मानक सेटिंग बोर्ड (पीएसएसबी) केर रूपमें पुनर्गठित अपन नव स्वरूपमें शिक्षक सभक लेल राष्ट्रीय व्यावसायिक मानक (एनपीएसटी) केर एकटा सामान्य मार्गदर्शक सेट 2022 धरि विकसित कयल जाएत। मानकमें विशेषज्ञता/पद केर विभिन्न स्तर पर शिक्षकक भूमिका आ ओहि पदक लेल आवश्यक दक्षताक अपेक्षा केँ सम्मिलित कयल जाएत। एहिमें सभ स्तर पर प्रदर्शन मूल्यांकनकेँ सेहो सम्मिलित कयल जाएत जे कि समय-समय पर कयल जाएत। एनपीएसटी सेवा पूर्व शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमक प्रारूपकेँ सेहो सूचित करताह। तखन जा कए एकरा राज्य द्वारा अपनाओल जा सकैत अछि आ एहि मानक केर आधार पर शिक्षकक आजीविका प्रबंधन होएत जाहिमें कार्यकाल, व्यावसायिक विकासक प्रयास, वेतन-वृद्धि, पदोन्नति आ अन्य पहिचान सम्मिलित होएत। कार्यकाल अवधि या वरिष्ठताक बजाए केवल निर्धारित मानक केर आधार पर पदोन्नति आ वेतनमें वृद्धि होएत। 2030 में राष्ट्रीय स्तर पर व्यावसायिक मानक केर समीक्षा आ संसोधन कयल जाएत आ ओकर बाद हर दस वर्षमें व्यवस्थाक गुणवत्ताकेँ कठिन प्रयोगसिद्ध विश्लेषण कयल जाएत।

विशिष्ट शिक्षक

5.21. विद्यालयी शिक्षाक किछु क्षेत्र में अतिरिक्त विशिष्ट शिक्षकक अति आवश्यकता अछि। एहि विशिष्ट आवश्यकता केर किछु उदाहरणमें मध्य आ माध्यमिक स्तरमें विकलांग/दिव्यांग बच्चा, एहन छात्र सहित जकरा सीखबामे दिक्कत (लर्निंग डिसेबिलिटी) होइत अछि, केर शिक्षण हेतु विषयक शिक्षण सम्मिलित अछि। एहि शिक्षक सभकेँ केवल विषय-शिक्षण ज्ञान आ विषय सम्बंधित शिक्षणक उद्देश्यक बोधटा नहि, अपितु विद्यार्थीक विशेष आवश्यकता केँ बुझबाक लेल उपयुक्त कौशल सेहो होयबाक चाही। एहि लेल एहि क्षेत्रमें विषय शिक्षक आ सामान्य शिक्षक केर हुनकर शुरुआती दौर में या फेर सेवा पूर्व शिक्षकक तैयारी हेबाक बाद द्वितीय केर विशेषज्ञता विकसित कयल जा सकैत अछि। एकरा लेल शिक्षक केर सेवाकालीन आ पूर्व-सेवाकालीन मोड में, पूर्णकालीन या अंशकालीन/मिश्रित कोर्स बहुविषयक महाविद्यालय आ विश्वविद्यालय में उपलब्ध कराओल जाएत। योग्य विशेष शिक्षक, जे विषय शिक्षण केँ सेहो सम्हारि सकैत छथि, केर पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करबाक लेल एनसीटीई आ आरसीआई केर पाठ्यक्रमक बीच व्यापक तालमेल केँ सक्षम बनाओल जाएत।

शिक्षक शिक्षाक दृष्टिकोण

5.22. ई मानैत जे शिक्षकक उच्चतर-गुणवत्ताक सामग्रीक संगे-संग शिक्षणशास्त्रमे प्रशिक्षणक आवश्यकता होएत, शिक्षक-शिक्षाक क्रमशः वर्ष 2030 धरि बहु-विषयक महाविद्यालय आ विश्वविद्यालयमे सम्मिलित कयल जाएत। जेना-जेना सभ महाविद्यालय आ विश्वविद्यालय बहु-विषयक बनबाक दिशामे बढत, ओकर लक्ष्य एहन उत्कृष्ट शिक्षा विभाग स्थापित करब होएत जे शिक्षामे बीएड., एम.एड. आ पीएच-डी केर डिग्री प्रदान करत।

5.23. वर्ष 2030 धरि, शिक्षणक लेल न्यूनतम योग्यता 4 वर्षीय एकीकृत बी. एड. डिग्री होएत जाहिमे बहुत तरहक ज्ञान सामग्री आ शिक्षा शास्त्रसँ शिक्षण कराओल जाएत जाहिमे स्थानीय विद्यालय मे छात्र-शिक्षणक रूपमे व्यावहारिक अभ्यास प्रशिक्षण होएत। 4 वर्षीय एकीकृत बी. एड. डिग्री प्रदान करए बला एहि बहु-विषयक संस्थानक द्वारा 2 वर्षीय बी. एड. कार्यक्रम सेहो प्रदान कयल जाएत आ ई केवल हुनकेटा लेल आवश्यक होयत जे पहिनेसँ अन्य विशिष्ट विषयमे स्नातकक डिग्री प्राप्त क' चुकल छथि। एहि बी.एड. कार्यक्रमक एक वर्षीय बी. एड. कार्यक्रमके रूपमे सेहो समुचित रूपमे विकसित कयल जा सकैत अछि जे केवल ओहि व्यक्ति केँ प्रदान कयल जाएत जे चारि-वर्षीय बहु-विषयक स्नातक डिग्री वा कोनो विशिष्टता मे स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त कयने होथि आ ओ विशिष्ट विषयमे विषय शिक्षक बनए चाहैत होथि। एहि प्रकारक सभटा बी. एड. डिग्री केवल चारि वर्षीय एकीकृत बी. एड. उपलब्ध करबए बला मान्यता प्राप्त बहु- विषयक उच्चतर शिक्षा संस्थान द्वारा प्रदान कयल जा सकैत अछि। चारि वर्षीय एकीकृत बी. एड. कार्यक्रम प्रदान करबएबला ओ बहु-विषयक उच्चतर शिक्षाक संस्थान, जकरा लग मुक्त दूरस्थ शिक्षण (ओडीएल) केर मान्यता सेहो अछि, दूर -दराज आ दुर्गम भौगोलिक स्थानक विद्यार्थी आ अपन अर्हता केँ बढएबाक इच्छा राखए बला सेवारत शिक्षकक लेल मिश्रित या ओडीएल मोड सँ सेहो उच्चतर गुणवत्ता बला बी. एड. कार्यक्रम प्रदान क' सकैत अछि जकरा लेल ओ कार्यक्रमक व्यावहारिक प्रशिक्षण आ छात्र-शिक्षण घटक आ सलाह हेतु उपयुक्त आ ठोस व्यवस्था करताह।

5.24. सभ बी. एड. कार्यक्रममे शिक्षण-शास्त्रक जाँचल-परखल तकनीक सभक संगे-संग हाल मे सभसँ नवीनतम तकनीकमे प्रशिक्षण देल जयतनि, जाहिमे बुनियादी साक्षरता आ संख्या-ज्ञानक सम्बन्ध मे शिक्षण शास्त्र, बहुस्तरीय शिक्षण आ मूल्यांकन, दिव्यांग बच्चा केर पढाबय पर, विशेष रुचि या प्रतिभा बला बच्चाक, शैक्षिक प्रौद्योगिकीक प्रयोग आ शिक्षार्थी केंद्रित एवं सहयोगात्मक शिक्षण सम्मिलित अछि। सभ बी. एड. कार्यक्रममे स्थानीय विद्यालय जा कए कक्षा मे शिक्षण करबाक व्यावहारिक प्रशिक्षणक रूपमे सम्मिलित कयल जाएत। सभ बी. एड. कार्यक्रम मे कोनो विषयकेँ पढएबाक या कोनो गतिविधि के करबाक अवधिमे भारतीय संविधानक मौलिक कर्तव्य (अनुच्छेद 51 ए) आ अन्य संवैधानिक प्रावधानक पालन करबा पर जोड़ देल जाएत। पर्यावरणक प्रति जागरूकता आ ओकर संरक्षण आ सतत विकासक प्रति संवेदनशीलताकेँ सेहो उचित रूपसँ एकीकृत कयल जाएत, जाहिसँ पर्यावरण शिक्षा विद्यालय पाठ्यक्रमक एकटा अभिन्न अंग बनि सकय।

5.25. किछु विशेष अल्प-अवधिक स्थानीय शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम बीआईटीई, डीआईईटी या स्वयं विद्यालय परिसरमे सेहो उपलब्ध होएत, जाहिसँ स्थानीय व्यवसाय, ज्ञान, आ कौशल सभ; स्थानीय कला, संगीत, कृषि, व्यवसाय, खेल, कमरगिरी, आ अन्य व्यवसाय शिल्पकेँ प्रोत्साहन देबाक उद्देश्यसँ प्रख्यात स्थानीय लोककेँ विद्यालय अथवा विद्यालय परिसरमे 'मास्टर प्रशिक्षक' केँ रूपमे पढएबाक लेल नियुक्त कयल जाएत।

5.26. बहु-विषयक महाविद्यालय आ विश्वविद्यालयमे ओहि बी. एड. के बाद किछु अल्प-अवधिक सर्टिफिकेट कोर्स सेहो व्यापक रूपसँ उपलब्ध कराओल जाएत जे शिक्षणकेँ विशिष्ट क्षेत्र जेना कि विशेष आवश्यकता बला विद्यार्थीकेँ प्रशिक्षण, या विद्यालयी शिक्षा प्रणालीमे नेतृत्व आ प्रबंधनक पद पर, अथवा मूलभूत, प्रारंभिक, उच्चतर प्राथमिक आ माध्यमिक स्तरकेँ बीच एकटा स्तरमे जएबाक इच्छा राखैत होथि।

5.27. ई मान्य अछि जे विशेष विषयकेँ शिक्षणक लेल अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कतेको शिक्षा विधि भ' सकैत अछि। एनसीईआरटी विभिन्न विषयकेँ शिक्षण विधिकेँ अध्ययन, अनुसंधान, आलेखन आ संकलन करत आ अनुशांसा करत

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

जे एहिमे सँ कोन चीज सीखल जा सकैत अछि आ भारतमे व्यवहारमे लाओल जा रहल शिक्षण विधिमे सम्मिलित कयल जा सकैत अछि।

5.28. वर्ष 2021 धरि एनसीटीई द्वारा एनसीईआरटी केर परामर्शसँ नव शिक्षा नीति 2020 केर सिद्धान्तक आधार पर एकटा नवीन आ व्यापक शिक्षक शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, एनसीएफटीआई 2021 तैयार कयल जाएत। ई रूपरेखा राज्य सरकार, केंद्र सरकारकेँ संबंधित मंत्रालय/विभाग आ विभिन्न विशेषज्ञ निकाय सहित सभ हितधारकसँ चर्चाक बाद तैयार कयल जाएत आ सभ क्षेत्रीय भाषामे उपलब्ध कराओल जाएत। एनसीएफटीआई 2021 मे व्यावसायिक शिक्षाक लेल शिक्षक शिक्षा पाठ्यचर्याकेँ अपेक्षाकेँ सेहो ध्यानमे राखल जाएत। तत्पश्चात, संशोधित एनसीएफमे परिवर्तन आ शिक्षक शिक्षामे उभरैत अपेक्षाकेँ देखबैत एनसीएफटीईमे प्रत्येक 5-10 वर्षमे संशोधन कयल जाएत।

5.29. अंततः शिक्षक शिक्षा प्रणालीक प्रमाणिकताकेँ पूर्णतया बनौने राखबाक लेल देशमे चलाओल जा रहल अवमानक स्टैंड अलोन शिक्षक शिक्षा संस्थान (टीईआई) क विरुद्ध कठोर कार्रवाई कयल जाएत जाहिमे जँ आवश्यक होइ त' ओकरा सभकेँ बंद करब सेहो सम्मिलित अछि।

6. समतामूलक आ समावेशी शिक्षा: सभक लेल अधिगम

6.1. शिक्षा, सामाजिक न्याय आ समानता प्राप्त करबाक एकमात्र आ सभसँ प्रभावी साधन अछि। सामयिक आ समावेशी शिक्षा ने केवल स्वयंमे एकटा आवश्यक लक्ष्य अछि, अपितु समतामूलक आ समावेशी समाज निर्माणक लेल सेहो अनिवार्य अछि, जाहिमे प्रत्येक नागरिककेँ सपना संजोगबाक, विकास करबाक आ राष्ट्रहितमे योगदान करबाक अवसर उपलब्ध होएत। ई शिक्षा नीति एहन लक्ष्यकेँ ल' कय आगू बढ़ैत अछि जाहिमे भारत देशक कोनो बच्चाकेँ सीखबाक आ आगू बढ़बाक अवसरमे ओकर जन्म या पृष्ठभूमिसँ सम्बंधित परिस्थिति बाधक नहि बनि पाओत। ई नीति एहि गपक पुनः पुष्टि करैत अछि जे विद्यालय शिक्षामे पहुँच, सहभागिता आ परिणाममे सामाजिक श्रेणीक अंतरालकेँ दूर करब सभ शिक्षा क्षेत्र विकास कार्यक्रमक मुख्य लक्ष्य होएत। एहि अध्याय केँ अध्याय 14क संग पढल जाए जाहिमे उच्चतर शिक्षामे समता आ समावेशनक मुद्दा पर चर्चा कयल गेल अछि।

6.2. यद्यपि, भारतीय शिक्षा प्रणाली आ सफल सरकारी नीति विद्यालय शिक्षाकेँ व्यवस्थाक मे लैंगिक आ सामाजिक श्रेणीक अंतरालकेँ कम करबाक दिशामे लगातार प्रगति कयलक अछि मुदा आइ ई सेहो देखल जा सकैत अछि- विशेष क' कए माध्यमिक स्तर पर, जे सामाजिक- आर्थिक रूपसँ वंचित एहन समूह अछि जे शिक्षाक क्षेत्रमे ऐतिहासिक रूपसँ पाछू रहल अछि। सामाजिक-आर्थिक रूपसँ वंचित (एसईडीजी) एहि समूहकेँ लैंगिक (विशेष रूपसँ महिला आ ट्रांसजेंडर व्यक्ति), सामाजिक-सांस्कृतिक पहिचान (जेना -अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति, ओबीसी आ भाषाई आ धार्मिक अल्पसंख्यक), भौगोलिक पहिचान (जेना गाम, कस्बा, वा आकांक्षी जिलाक विद्यार्थी, विशेष आवश्यकता (सीखबसँ सम्बंधित अक्षमता सहित) आ सामाजिक -आर्थिक स्थिति (जेना कि प्रवासी समुदाय, निम्न आय वला परिवार, आशय परिस्थितिमे रहए बला बच्चा, बाल-तस्करीक शिकार बच्चा अथवा बाल-तस्करीसँ शिकार बच्चाक बच्चा, अनाथ बच्चा जाहिमे शहर मे भीख मांगय बला या शहरी गरीब सेहो सम्मिलित अछि) केर आधार पर वर्गीकृत कयल जा सकैत अछि। अब जखन विद्यालयमे कक्षा 1 सँ कक्षा 12 धरि लगातार नामंकन घटि रहल छैक, नामांकनमे ई गिरावट सामाजिक-आर्थिक रूपसँ वंचित समूह (एसईडीजी) मे बेसी अछि आ विशेषकर एहि एसीडीजी के महिला विद्यार्थीक सन्दर्भमे ई आर बेसी स्पष्ट अछि आ उच्चतर शिक्षाक क्षेत्रमे एसीडीजी केँ नामांकनमे ई गिरावट आर बेसी अछि। सामाजिक आर्थिक पहिचानमे आवए बला एसईडीजीकेँ संक्षिप्त स्थिति अनुवर्ती उपखण्डमे देल गेल अछि।

6.2.1. यु-डीआईएसई 2016-17क आंकड़ाक अनुसार, प्राथमिक स्तर पर लगभग 19.6 % अनुसूचित जातिक छैक, मुदा उच्चतर माध्यमिक स्तर ई प्रतिशत कम भ' केँ 17.3% भ' गेल अछि। नामांकनमे भ' रहल ई कमी अनुसूचित जनजातिक छात्र (10.6% सँ 6.8%) आ दिव्यांग बच्चा (1.1% सँ 0.25 %) केँ लेल बेसी गंभीर अछि, एहिमे सँ

प्रत्येक श्रेणीमें महिला छात्रक लेल एहि नामांकनमें आर बेसी कमी आएल अछि। उच्च शिक्षामें नामांकनमें कमी आर बेसी अछि।

6.2.2. गुणवत्तापूर्ण विद्यालय धरि पहुँचबा मे कमी, गरीबी, सामाजिक रीति- रेवाज आ प्रथा आ भाषा सहित कतेको विभिन्न कारणसँ अनुसूचित जातिके बीच नामांकन आ प्रतिधारणक दर पर हानिकारक प्रभाव पड़ल अछि। अनुसूचित जातिक बच्चाक पहुँच, भागीदारी आ सीखबाक परिणाममें एहि अंतरालकेँ कम करब प्रमुख लक्ष्यमें सँ एक रहत। संगहि, अन्य पिछड़ल वर्ग (ओबीसी) जकरा पहिनेसँ सामाजिक आ शैक्षणिक रूपसँ पिछड़ल रहबाक आधार पर ऐतिहासिक रूपसँ पहिचान कएल जाइत अछि, पर सेहो विशेष ध्यान देबाक आवश्यकता अछि।

6.2.3. विभिन्न ऐतिहासिक आ भौगोलिक कारक सभक कारणे जनजातीय समुदाय आ अनुसूचित जनजातिक बच्चासभ सेहो कतेको स्तर पर प्रतिकूल परिस्थिति केर सामना करैत अछि। आदिवासी समुदायक बच्चा बेसी काल अपन विद्यालयी शिक्षाक सांस्कृतिक आ शैक्षणिक रूपसँ अप्रासंगिक आ विदेशी बुझैत अछि। यद्यपि वर्तमानमें आदिवासी समुदायक बच्चासभक उत्थानक लेल कतेको कार्यक्रम शुरू कयल जा रहल अछि आ आगाँ सेहो कयल जाएत रहत, ई सुनिश्चित करबाक लेल विशेष तंत्र बनएबाक आवश्यकता अछि जे जनजातीय समुदायक बच्चा सभकेँ एहि कार्यक्रमक लाभ भेटय।

6.2.4. विद्यालय आ उच्चतर शिक्षामें अल्पसंख्यक केर प्रतिनिधित्व सेहो अपेक्षाकृत कम अछि। ई नीति सभ अल्पसंख्यक विशेष रूपसँ ओहि समुदायकेँ बच्चाक शिक्षाकेँ प्रोत्साहन देबाक लेल हस्तक्षेपक महत्वकेँ स्वीकार करैत अछि, विशेष क'कए जिनकर शैक्षणिक रूपसँ प्रतिनिधित्व कम अछि।

6.2.5. ई नीति विशेष आवश्यकता बला बच्चा (सीडब्ल्यूएसएन) या दिव्यांग बच्चाकेँ कोनो अन्य बच्चाक समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करबाक समान अवसर प्रदान करबाक लेल सक्षम तंत्र बनएबाक महत्व के सेहो चिन्हैत अछि।

6.2.6. विद्यालय शिक्षामें सामाजिक श्रेणीक अंतरालकेँ कम करबा पर ध्यान केंद्रित करबाक लेल अलग रणनीति तैयार कयल जाएत, जेना कि निम्नलिखित उप-भागमें उल्लेख कयल गेल अछि।

6.3. ईसीसीई, बुनियादी साक्षरता, संख्या ज्ञान आ विद्यालय धरि पहुँच/नामांकन/उपस्थिति आदिसँ सम्बंधित समस्या व अनुशांसा जकर चर्चा अध्याय 1 से 3 धरि कयल गेल अछि विशेष रूपसँ अल्पप्रतिनिधित्व बला आ लाभवंचित समूहक लेल महत्वपूर्ण व प्रासंगिक अछि। अतः एसईडीजी केँ सन्दर्भमें अध्याय 1-3 में देल गेल उपाय केँ दृढ़तापूर्वक लागू कयल जाएत।

6.4. एकर अतरिक्त, लक्षित छात्रवृत्ति, माता-पिताकेँ अपन बच्चाकेँ विद्यालय पठएबाक लेल प्रोत्साहित करबाक लेल सशर्त नकद हस्तांतरण, परिवहनक लेल साइकिल प्रदान करब, आदि सन विभिन्न सफल नीति आ योजना चलाओल गेल अछि जाहिसँ किछु क्षेत्रमें एसडीजीक भागीदारी विद्यालय शिक्षा प्रणालीमें बहुत बढ़ि गेल अछि। एहि सफल नीति आ योजनाक पूरा देशमें आर बेसी सुदृढ़ कयल जेबाक चाही।

6.5. ई अनुसंधान सेहो ध्यानमें राखब आवश्यक होएत जाहिसँ ई पता लागत जे कोन उपाय किछु एसईडीजी लेल प्रभावी होएत। उदाहरणक लेल, साइकिल प्रदान करब आ विद्यालय धरि पहुँच केर लेल साइकिल व पैदल चलए बला समूहकेँ आयोजन करब महिला छात्रकेँ बढ़ैत भागीदारीक सन्दर्भमें विशेष रूपसँ शक्तिशाली तरीकाकेँ रूपमें उभरल अछि- एतय धरि कि कम दूरी बला स्थान पर सेहो सुरक्षाकेँ दृष्टि सँ आ माता-पिता केँ भेटए बला आश्वासनक कारणे ई बहुत प्रभावी तरीका रहल अछि। दिव्यांग बच्चा सबकेँ पहुँच सुनिश्चित करबाक दृष्टिसँ एकटा बच्चाकेँ संग एकटा शिक्षक, सहपाठी शिक्षण, मुक्त विद्यालय शिक्षा, उचित मूलभूत ढांचा आ उपयुक्त तकनीककेँ प्रयोग विशेष रूपसँ प्रभावी भ' सकैत अछि। जे विद्यालय गुणवत्तापूर्ण ढंगसँ बचपनकेँ देखरेख व शिक्षा (ईसीसीई) प्रदान करैत अछि सँ आर्थिक रूपसँ वंचित परिवारसँ आबए बला बच्चाक लेल विशेष रूपसँ लाभकारी अछि। एहि

बीच इहो देखल गेल अछि जे कि शहरी गरीब छात्रमे सलाहकार (काउन्सेलर) वा प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्ताकेँ जे छात्र, अभिभावक, विद्यालय व शिक्षककेँ संग मिल कय काज करैत अछि केर काज पर राखबसँ उपस्थिति आ सीखबाक परिणामकेँ बेहतर बनएबाक दृष्टिसँ विशेष रूपसँ प्रभावी अछि।

6.6. आकंडासँ ई पता चलैत अछि जे किछु भौगोलिक क्षेत्रमे एसईडीजी केर बहुत पैघ अनुपात छैक। एकर अतिरिक्त एहन भौगोलिक स्थान सेहो अछि जकर पहिचान महत्वाकांक्षी जिलाकेँ रूपमे कयल गेल अछि आ जकरा अपनौने शैक्षिक विकासकेँ प्रोत्साहन देबाक लेल विशेष हस्तक्षेपक आवश्यकता अछि। एहि कारणे ई अनुशंसा कयल जाएत अछि जे देशकेँ शैक्षिक रूपसँ वंचित एसईडीजीकेँ पैघ आबादी बला किछु क्षेत्रकेँ स्पेशल एजुकेशन जोन(एसईजेड) घोषित कयल जाए जतए शैक्षिक परिदृश्य केर बदलबाक लेल अतिरिक्त प्रयासक माध्यमसँ उपरोक्त सभ योजना आ नीतिकेँ पूर्ण रूपसँ लागू कयल जेबाक चाही।

6.7. हमसभ देख सकैत छी जे अल्पप्रतिनिधित्व बला सभ समूहमे करीब-करीब आधा संख्या महिला सभक छैक। दुर्भाग्यवश, एसईडीजीक संग होइ बला अन्यायकेँ सभसँ बेसी सामना एहि समूहक महिला सदस्य सभके करए पडैत छैक। ई नीति समाजमे महिलाकेँ विशिष्ट आ महत्वपूर्ण भूमिका, आ आगूक पीढीक सामाजिक आचार-विचारकेँ स्वरूप देबामे हुनकर योगदानकेँ ध्यानमे राखैत ई मानैत अछि जे एसईडीजी केर कन्या सभक लेल गुणवत्तापूर्ण शिक्षाकेँ व्यवस्था हुनक वर्तमान ओ आबय बला पीढीकेँ शैक्षिक स्तरकेँ ऊपर उठएबाक सर्वोत्तम तरीका होयत। अतः नीति एहि बातक अनुशंसा करैत अछि जे एसईडीजी छात्र सभक उत्थानक लेल बनाओल जा रहल नीति आ योजना सभ विशेष रूपसँ एहि समूहक बालिका लोकनि पर केंद्रित होयबाक चाही।

6.8. एकर अतिरिक्त, भारत सरकार सभ बालिका आ संगे ट्रांसजेंडर छात्रकेँ गुणवत्तापूर्ण आ न्यायसंगत शिक्षा प्रदान करबाक दिशामे देशक क्षमताकेँ विकास करबाक लेल एकटा 'लैंगिकता(जेन्डर) समावेशी निधि' केर गठन करत। केंद्र सरकार द्वारा निर्धारित प्राथमिकताकेँ लागू करबाक लेल राज्यसभ केर ई सुविधा उपलब्ध करएबाक लेल ई कोष उपलब्ध होइत ताकि महिला आ ट्रांसजेंडर बच्चा धरि शिक्षाक पहुँच सुनिश्चित करबाक दृष्टिसँ बहुत महत्वपूर्ण अछि (जेना स्वच्छता आ शौचालयसँ सम्बंधित सुविधा, साइकिल आ सशर्त नगद हस्तांतरण, आदि); ई कोष राज्यकेँ समुदाय आधारित कार्यक्रमकेँ प्रभावी बनाओत आ ओकरा पैघ स्तर धरि ल' जाएमे सक्षम बनाओत जे महिला व ट्रांसजेंडर बच्चा धरि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के पहुँच सुनिश्चित करबाक दिशामे परिस्थितिजन्य समस्याक समाधान हेतु एहि प्रकारकेँ 'समावेशी निधि' केँ व्यवस्था कयल जाएत। एहने 'समावेशी निधि' केँ विकास करबाक चाही ताकि अन्य एसईडीजीमे अनुरूप पहुँचक मुद्दा पर ध्यान देल जा सकय। संक्षेपमे, एहि नीतिक उद्देश्य कोनो लिंग वा अन्य सामाजिक-आर्थिक रूपसँ वंचित समूहकेँ बच्चा सभक लेल शिक्षा (व्यावसायिक शिक्षा सहित) धरि पहुँच मे शेष असमानताकेँ समाप्त करब अछि।

6.9. एहन स्थान जतए विद्यालय धरि आबए लेल छात्रकेँ बेसी दूरी तय करए पडैत होइक ओतए जवाहर नवोदय विद्यालयक स्तरक तर्ज पर निःशुल्क छात्रवासक निर्माण कयल जाएत, विशेष क' कय एहन बच्चा सभक लेल जे सामाजिक-आर्थिक रूपसँ वंचित पृष्ठभूमिसँ आबैत अछि, आ एहि छात्रावास मे सभ बच्चा विशेष क' कय लडकी सभक सुरक्षाकेँ उपयुक्त व्यवस्था कयल जाएत। सामाजिक-आर्थिक रूपसँ पिछड़ल समूहकेँ बालिकाक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा बला विद्यालय (ग्रेड 12 धरि) मे प्रतिभागिता बढ़एबाक दृष्टिसँ कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालयकेँ आर मजगूत बनाओल जाएत आ विस्तारित कयल जाएत। भारतकेँ हर कोणमे उच्चतर गुणवत्ताक शिक्षाकेँ अवसर प्रदान करबाक दृष्टिसँ विशेष क' कय आकांक्षात्मक जिला, विशेष शिक्षा क्षेत्र आ वंचित क्षेत्रमे अतिरिक्त जवाहर नवोदय विद्यालय आ केंद्रीय विद्यालय खोलल जायत। कम-सँ-कम एक वर्षकेँ प्रारंभिक बाल्यावस्था देखरेख आ शिक्षाकेँ समाहित करैत केंद्रीय विद्यालयमे व देशकेँ अन्य प्राथमिक विद्यालयमे विशेष क' कय वंचित क्षेत्रमे शिशु-विद्यालय वर्गकेँ जोडल जाएत।

6.10. ईसीसीई मे दिव्यांग बच्चाकेँ सम्मिलित करब आ हुनक समान भागीदारी सुनिश्चित करब सेहो एहि नीतिक सर्वोच्च प्राथमिकता होयत। दिव्यांग बच्चाकेँ प्रारंभिक स्तर सँ उच्चतर स्तर धरि नियमित शिक्षण प्रक्रियामे

सम्मिलित होएबाक लेल सक्षम बनाओल जाएत। दिव्यंगजन अधिकार अधिनियम 2016 (आरपीडब्लूडी) अधिनियम समावेशी शिक्षाक एकटा एहन व्यवस्थाक रूपसँ परिभाषित करैत अछि जतए सामान्य व दिव्यांग, बच्चा सभ एक संग सीखैत अछि आ शिक्षण आ अधिगमक प्रणालीकेँ एहि प्रकार अनुकूलित कयल जाएत अछि ताकि ओ सभ तरहक दिव्यांग बच्चाकेँ आवश्यकताकेँ पूरा करबाकमे सक्षम होइक। एहि नीति आर पीडब्लूडी अधिनियम 2016 केर सभटा प्रावधानकेँ संग पूर्ण रूपेँ सुसंगत अछि आ विद्यालयी शिक्षाकेँ संबंधमे ओकर द्वारा प्रस्तावित सभ सिफारिशकेँ समर्थन करैत अछि। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा तैयार करैत समय एनसीईआरटी द्वारा दिव्यांगजन विभागकेँ राष्ट्रीय संस्थान (डीईपीडब्लूडी) सन विशेषज्ञ संग परामर्श सुनिश्चित कयल जाएत।

6.11. एकरा लेल, दिव्यांग बच्चा सभक एकीकरण केर ध्यानमे राखैत विद्यालय/विद्यालय परिसरकेँ वित्तीय मदतिक दृष्टिसँ व्यवस्था कयल जाएत, आ एकरा संग ई सेहो ध्यान देल जाएत जे विद्यालय परिसरमे दिव्यांग बच्चाक आवश्यकतासँ संबंधित प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकक नियुक्ति कयल जाए, संगहि गंभीर अथवा एकसँ बेसी अक्षमता बला बच्चाक लेल जतए आवश्यकता होइक एकटा संसाधन केंद्र स्थापित कयल जाएत। आरपीडब्लूडी अधिनियमकेँ अनुरूप दिव्यांग बच्चाक लेल बाधा मुक्त पहुँच सुनिश्चित कयल जाएत। अलग-अलग श्रेणीक विकलांगता बला बच्चा के अलग अलग आवश्यकता होइत अछि। विद्यालय अथवा विद्यालय परिसर काज करत आ ओकरा मदति देल जाएत जाहिसँ प्रत्येक बच्चाकेँ आवश्यकताक अनुरूप मदति सुनिश्चित करबाक हेतु उपयुक्त प्रणाली विकसित कयल जाएत आकांक्षा-कक्षमे हुनकर पूर्ण प्रतिभागिता आ समावेशन सुनिश्चित कयल जाएत। कक्षमे शिक्षक आ अन्य सहपाठीक संग आसानीसँ जुडबाक लेल विशेष आवश्यकता बला बच्चा केर किछु सहायक उपकरण, उपयुक्त तकनीक-आधारित उपकरण, भाषा उपयुक्त शिक्षण सामग्री (जेना पैघ प्रिंट आ ब्रेल प्रारूपमे सुलभ पाठ्य पुस्तक सभ) पर्याप्त मात्रामे उपलब्ध कराओल जाएत। ई कला, खेल आ व्यावसायिक शिक्षा सहित सभ विद्यालय गतिविधि पर सेहो लागू होएत। एनआईओएस भारतीय संकेत भाषा सीखबाक लेल आ भारतीय संकेत भाषाक उपयोग करबाक लेल अन्य मूलभूत विषयकेँ सीखबाक उच्चतर गुणवत्ता बला माँड्यूल विकसित कयल जायत। संगहि दिव्यांग बच्चाक सुरक्षा पर पर्याप्त ध्यान देल जाएत।

6.12. आरपीडब्लूडी अधिनियम 2016 केँ अनुसार, मूल दिव्यांगता बला बच्चा ल'ग नियमित या विशेष विद्यालयी शिक्षाकेँ विकल्प होएत। विशेष शिक्षककेँ माध्यमसँ स्थापित संसाधन केंद्र, गंभीर अथवा विभिन्न विकलांगता बला बच्चाकेँ पुनर्वास आ शिक्षासँ संबंधित आवश्यकतामे मदति करत आ संगहि उच्चतर गुणवत्ताक शिक्षा घरमे उपलब्ध करएबाक (होम स्कूलिंग) आ कौशल विकसित करएबाक दिशामे हुनक माता-पिता/अभिभावककेँ सेहो मदति करत। विद्यालय जाए मे असमर्थ गंभीर आ गहन दिव्यांगता बला बच्चाकेँ लेल गृह-आधारित शिक्षाकेँ रूपमे एकटा विकल्प उपलब्ध रहत। गृह-आधारित शिक्षाकेँ तहत शिक्षा ल' रहल बच्चाकेँ अन्य सामान्य प्रणालीमे शिक्षा ल' रहल कोनो अन्य बच्चाक समतुल्य मानल जाएत। गृह-आधारित शिक्षाक कार्यक्षमता आ प्रभावशीलताकेँ जाँच हेतु समता आ अवसरक समानताकेँ सिद्धान्त पर आधारित ऑडिट कयल जाएत। आरपीडब्लूडी अधिनियम 2016 केर अनुरूप एहि ऑडिटक आधार पर गृह- आधारित विद्यालयी शिक्षाक लेल दिशानिर्देश आ मानक विकसित कयल जायत। ओना त' ई स्पष्ट अछि जे सभ विकलांग बच्चा केर शिक्षाक जिम्मेदारी राज्यक ऊपर छैक, एकर लेल माता/पिता देखरेख करए बला उन्मुखीकरणसँ ल' कय प्रौद्योगिकी आधारित समाधान कयल जाएत, जकर माध्यमसँ माता/पिता/देखरेख करबाकबल अपन बच्चा केर आवश्यकताक अनुरूप मदति क' सकत।

6.13. अधिकांश कक्षामे एहन बच्चा होइत अछि जाहिमे सीखबाक दृष्टिसँ किछु विशेष अक्षमता होइत छैक जकरा निरंतर मदति केर आवश्यकता होइत छैक। शोध सभ ई स्पष्ट करैत अछि जे एहन मामिलामे जतेक जल्दी मदति शुरू कयल जाइत अछि आगाँ प्रगतिक सम्भावना ओतबे बेसी होइत अछि। शिक्षककेँ सीखबसँ संबंधित एहि प्रकारकेँ अक्षमताक पहिचान करब आ ओकर निवारणक लेल योजना बनएबा मे विशेष रूपसँ मदति भेटबाक चाही। एकरा लेल कयल जाए बला विशिष्ट कार्य जाहिमे उपयुक्त तकनीकी मदतिसँ कयल जाए बला प्रयास सेहो सम्मिलित होएत, बच्चाकेँ अपन गतिक अनुरूप काज करबाक स्वतंत्रता देब, प्रत्येक बच्चाकेँ क्षमताक लाभ लेबाक दृष्टिसँ पाठ्यक्रमकेँ सभक लेल सक्षम आ लचकदार बनाएब संगहि उपयुक्त आकलन आ प्रमाणक लेल एकटा

अनुकूल परिस्थिति बनायब अछि। 'परख' नामक प्रस्तावित नव मूल्यांकन केंद्र सहित मूल्यांकन आ प्रमाणन संस्था दिशानिर्देश बनाओत आ मूलभूत स्तरसँ ल' कय उच्चतर शिक्षाक स्तर धरि एहि तरहक मूल्यांकनक संचालनक लेल उपयुक्त तरीकाक पैरवी करत, जाहिसँ सीखबाक अक्षमता बला सभ छात्रक लेल समान पहुँच आ अवसर सुनिश्चित कयल जाएत ।

6.14. विशिष्ट दिव्यांगता बला बच्चा (सीखबसँ संबंधित अक्षमताक संग) कें कोना पढाओल जाए, एकरासँ संबंधित जागरूकता आ ज्ञानकें सभ शिक्षक प्रशिक्षणकें अनिवार्य हिस्सा हेबाक चाही। संगहि लैंगिक संवेदनशीलता आ अल्प प्रतिनिधित्व बला समूहक प्रति संवेदनशीलता विकसित कयल जाएबाक चाही जाहिसँ हुनक प्रतिभागिताक स्थितिकें बेसी उत्तम कयल जा सकत।

6.15. विद्यालयक वैकल्पिक रूपकें अपन परंपरा आ वैकल्पिक शिक्षण-शास्त्रीय अभ्यास कें संरक्षित करबाक लेल प्रोत्साहित कयल जाएत। एकरा संगे-संग ओकरा अपन विषय, शिक्षण क्षेत्र आ पाठ्यक्रमकें राष्ट्रीय पाठ्यक्रमक (एनसीएफएसई) अनुरूप एकीकृत करबा मे सहायता प्रदान कयल जाएत जाहिसँ उच्चतर शिक्षाक क्षेत्रमे ओहेन विद्यार्थीकें प्रतिनिधित्वताकें कमी केर धीरे-धीरे कम कयल जाए आ अंततः खत्म कयल जा सकय। एहन विद्यालयक विज्ञान, गणित, सामाजिक, अध्ययन, हिंदी, अंग्रेजी, राज्य भाषा अथवा अन्य प्रसंगिक विषय कें अपन पाठ्यक्रममे सम्मिलित करबाक लेल वित्तीय सहायता प्रदान कयल जाएत, जेना कि भरिसक ओहि विद्यालय द्वारा वांछित भ' सकैत अछि। ई एहि विद्यालय सभमे पढए बला बच्चाकें ग्रेड 1-12 कें परिभाषित कयल गेल सीखबाक परिणामकें प्राप्त करबामे सक्षम करत। एकर अतिरिक्त, एहन विद्यालय मे छात्रकें एनटीए द्वारा राज्य या अन्य बोर्ड परीक्षा आ मूल्यांकनक लेल उपस्थित होयबाक लेल प्रोत्साहित कयल जाएत, आ विज्ञान, गणित, भाषा आ सामाजिक अध्ययनक शिक्षणमे शिक्षकक क्षमता सबकें नव शैक्षणिक विकास केर लेल उन्मुखीकरण सहित विकसित कयल जाएत। पुस्तकालय आ प्रयोगशाला कें मजगूत कयल जाएत आ पुस्तक, पत्रिका, आदि सन पर्याप्त पाठ्य सामग्री आ आन शिक्षण-अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराओल जाएत।

6.16. एसईडीजीकें अंतर्गत आ ऊपर वर्णित नीतिगत बिंदुकें सन्दर्भमे अनुसूचित जाति आ जनजातिकें शैक्षणिक विकासमे असमानताकें दूर करबाक लेल विशेष ध्यान देल जाएत। विद्यालय शिक्षामे भागीदारी बढ़एबाक प्रयासक तहत, सभ एसईडीजीसँ प्रतिभाशाली आ मेधावी छात्रक लेल पैघ स्तर पर समर्पित क्षेत्रमे विशेष छात्रावास, त्रिज पाठ्यक्रम आ शुल्क माफ़ करब आ छात्रवृत्तिक माध्यमसँ वित्तीय सहायता विशेष क' के माध्यमिक स्तर पर प्रदान कयल जाएत जाहि सँ उच्चतर शिक्षामे हुनक प्रवेश केर सुविधाजनक बनाओल जा सकय।

6.17. रक्षा मंत्रालयकें तत्वावधानमे राज्य सरकारकें, जनजाति बहुल प्रदेश सहित, माध्यमिक आ उच्चतर माध्यमिक विद्यालयमे एनसीसी विंग खोलबाक लेल प्रोत्साहित कयल जाएत। एहिसँ छात्रकें प्राकृतिक प्रतिभा आ अद्वितीय क्षमताक उपयोग कयल जा सकत जाहिसँ ओ रक्षा सेनामे सफल आजीविकाक लेल प्रेरित होएत।

6.18. एसडीजी छात्र-छात्राक लेल उपलब्ध छात्रवृत्ति, अवसर आ योजनामे प्रतिभाग करबाक दृष्टिसँ आ समताकें बढ़एबाक लेल किछु सरलीकृत तरीका स्थापित कयल जाएत जेना-कोनो एहन एकल एजेंसी या वेबसाइटक माध्यमसँ आवेदनल' के सभ विद्यार्थी धरि एहि योजना, छात्रवृत्ति अथवा अवसरकें पहुँच सुनिश्चित करब आ सिंगल विंडो प्रणालीकें माध्यम सँ अपन अर्हताकें देखैत हुनक आवेदन सुनिश्चित करब।

6.19. उपरोक्त सभ नीति आ उपाय सभ एसडीजीक लेल पूर्ण सामवेश आ समता प्राप्त करबाक लेल महत्वपूर्ण त' अछि मुदा पर्याप्त नहि। एकर अतिरिक्त इहो आवश्यक अछि जे विद्यालयक संस्कृतिमे बदलाव सेहो होइक। विद्यालय शिक्षा प्रणाली मे सभ प्रतिभागी, जाहिमे शिक्षक, प्राध्यापक, सलाहकार आ छात्र सम्मिलित अछि, सभ छात्रकें आवश्यकता, समावेशन आ समानताक धारणा आ सभ व्यक्तिकें सम्मान, प्रतिष्ठा आ निजताक प्रति संवेदनशील कयल जाएत। एहि तरहक शैक्षणिक संस्कृति छात्रकें सशक्त व्यक्ति बनेबा मे मदति करबाक लेल सभसँ

नीक साधन होएत, जे बदलामे एहन समाज बनेबा मे सक्षम होएत जे अपन सभसँ कमजोर नागरिक के लेल जिम्मेदार अछि। समावेशन आ समता शिक्षककेँ शिक्षणक एकटा प्रमुख पक्ष बनि जाएत (आ विद्यालयमे सभ नेतृत्व, प्रशासनिक आ अन्य पदक लेल प्रशिक्षण); संगहि सभ छात्रक लेल उत्कृष्ट रोल मॉडल अनबाक दिस ई प्रयास कयल जाएत जे एसईडीजीमे सँ उच्चतर गुणवत्ताक शिक्षक आ नेतृत्वकर्ताक बेसी सँ बेसी चयन कयल जायक।

6.20. छात्रकेँ शिक्षक आ अन्य विद्यालय कर्मी (जेना प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्ता आ परामर्शदाता) इत्यादि द्वारा लाओल गेल एहि नवविद्यालयी संस्कृति आ पाठ्यक्रमक माध्यम सँ संवेदनशील बनाओल जाएत। विद्यालयी पाठ्यक्रम मे प्रारंभ सँ, मानवीय मूल्य पर सामग्री, जेना सभ व्यक्तिक लेल सम्मान, सहानुभूति, सहिष्णुता, मानव अधिकार, लैंगिक समानता, अहिंसा, वैश्विक नागरिकता, समावेशन आ समता सम्मिलित होएत। एकरामे विभिन्न संस्कृति, धर्म, भाषा, लैंगिक पहिचान इत्यादिक बारे मे बेसी विस्तृत ज्ञान सम्मिलित होएत, जे विविधताक प्रति सम्मान आ संवेदनशीलता विकसित करत। विद्यालयक पाठ्यक्रममे कोनो तरहक पूर्वाग्रह आ रूढ़िवादिताकेँ हटा देल जाएत, ओहि सामग्रीकेँ बेसी-सँ-बेसी सम्मिलित कयल जाएत जे सभ समुदायक लेल प्रासंगिक आ सम्बंधित अछि।

7. विद्यालय परिसर/समूहक माध्यमसँ कुशल संसाधन आ प्रभावी प्रशासन

7.1. आब समग्र शिक्षा योजनाक तहत समाहित सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए) आ देशभरिक राज्यमे होइ बला आन प्रयासक द्वारा देशक प्रत्येक निवास-स्थानमे प्राथमिक विद्यालयक स्थापना प्राथमिक विद्यालय सभमे लगभग सार्वभौमिक पहुँच के सुनिश्चित करबा मे त' मदति कयलक अछि मुदा एहिसँ कतेको बहुत छोट विद्यालय सेहो विकसित भेल अछि। यू-डाइज(U-DISE) 2016 -17 केर आंकड़ाक अनुसार, भारतक 28 % सरकारी प्राथमिक विद्यालय आ 14.8 % उच्चतर प्राथमिक विद्यालयमे 30 सँ कम विद्यार्थी छैक। कक्षा 1 सँ 8 धरिक विद्यालय मे प्रति कक्षा औसतन 14 टा छात्र अछि जखन कि बहुत रास विद्यालय मे त' ई औसत मात्रा 6 सँ कम अछि। वर्ष 2016-17 मे 1, 08, 017 एकटा शिक्षक बला विद्यालय छल। एहिमे सँ अधिकांश (85743) कक्षा 1 सँ 5 बला प्राथमिक विद्यालय अछि।

7.2. एहि कम संख्या बला विद्यालयक चलते शिक्षकक नियोजनक संगे-संग महत्वपूर्ण भौतिक संसाधनक उपलब्धताक दृष्टिसँ नीक विद्यालयक संचालन जटिल आ आर्थिक रूपसँ व्यावहारिक नहि अछि। शिक्षककेँ बहुधा एक संग कतेको कक्षामे पढाबए पडैत अछि, आ कतेको विषयकेँ सेहो जाहिमे ओ विषय सम्मिलित अछि जाहिमे भ' सकैत अछि जे हुनक पहिनेसँ कोनो पृष्ठभूमि नहि होइत छनि; जेना संगीत, कला, खेल सन प्रमुख क्षेत्र बहुत बेरि सीखाओल नहि जाइत अछि आ भौतिक संसाधन जेना प्रयोगशाला आ खेल उपकरण आ पुस्तकालयक किताब विद्यालयमे कमे उपलब्ध होइत अछि।

7.3. छोट विद्यालयकेँ अलगाव केर सेहो शिक्षा आ शिक्षण/अध्ययन प्रक्रिया पर नकारात्मक प्रभाव पडैत अछि। शिक्षक, आ छात्र सेहो, सभ समुदाय आ समूहमे सभसँ नीक काज करैत अछि। छोट विद्यालय शासन आ प्रबंधनक लेल एकटा प्रणालीगत चुनौती सेहो प्रस्तुत करैत अछि। भौगोलिक विस्तार, चुनौतीपूर्ण पहुँच केर स्थिति आ विद्यालयक बहुत पैघ संख्या सभटा विद्यालय धरि समान रूपसँ पहुँचब कठिन बना दैत अछि। प्रशासनिक संरचना सभकेँ विद्यालयक संख्यामे वृद्धि या समग्र शिक्षा योजनाकेँ एकीकृत ढाँचामे नहि जोडल गेल अछि।

7.4. यद्यपि विद्यालयक समेकन एकटा एहन विकल्प अछि, जाहि पर प्रायः चर्चा कयल जाइत अछि, एकरा बहुत सोचि-विचारि कए कयल जेबाक चाही आ केवल तखन कयल जेबाक चाही जखन ई सुनिश्चित क' लेल जाए जे एकर पहुँच पर कोनो प्रभाव नहि पडतैक। एहि तरहक उपायक परिणाम सँ केवल छोट पैमाना पर समेकनक संभावना देखाइत अछि आ पैघ संख्यामे छोट विद्यालय सभक द्वारा उपजल संरचनात्मक समस्या आ चुनौतीक समाधान नहि होएत अछि।

7.5. एही चुनौतीकेँ राज्य/केंद्र शासित प्रदेशक सरकार सभक द्वारा 2025 धरि विद्यालयकेँ समूह बनायब या ओकर संख्याकेँ युक्तिसंगत रूप देबाक लेल नवीन प्रक्रिया अपना कय समाधान कयल जाएत। एहि तरहक प्रक्रियाक पाछूक उद्देश्य ई सुनिश्चित करब होएत जे कि सभटा विद्यालयमे: (क) कला, संगीत, विज्ञान, खेल, भाषा, व्यावसायिक विषय, आदि सहित सभ विषयक शिक्षणक लेल पर्याप्त संख्या मे परामर्शदाता/प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्ता आ शिक्षक (साझा या अन्यथा) रहैक; (ख) पर्याप्त संसाधन (साझा या अन्यथा) होइ, जेना कि एकटा पुस्तकालय, विज्ञान प्रयोगशाला, कंप्यूटर लैब, कौशल प्रयोगशाला, खेलक मैदान, खेल उपकरणक सुविधा सभ, आदि ;(ग) शिक्षक, छात्र आ विद्यालयक अलगावकेँ कम करबाक लेल एकटा सामुदायिक बोधक निर्माणक लेल संयुक्त व्यावसायिक विकास कार्यक्रम, शिक्षण-अधिगमक सामग्रीक साझाकरण, संयुक्त सामग्रीक साझाकरण, संयुक्त सामग्री निर्माण, कला आ विज्ञान प्रदर्शनी, खेल गतिविधि प्रश्नोत्तरी आ वाद विवाद आ मेलासँ संयुक्त गतिविधिकेँ आयोजन करब; आ (घ) दिव्यांग बच्चाक शिक्षाक लेल विद्यालयमे सहयोग आ संबलन (ङ) विद्यालय व्यवस्थाकेँ शासनमे सुधारक लेल क्रियान्वयन संबंधित महीन निर्णय विद्यालय समूहकेँ स्तर पर छोड़ि देल जाए जतए ओकरा स्थानीय स्तर पर प्रधानाचार्य, शिक्षक आ अन्य हितधारक द्वारा टा लेल जाए- आ मूलभूत स्तर सँ माध्यमिक स्तरधरि एहन विद्यालयक समूह एकटा एकीकृत अर्ध-स्वायत्त इकाईकेँ रूपमे देखल जाए।

7.6. उपरोक्त केँ पूरा करबाक लेल एकटा संभावित तंत्र विद्यालय परिसर नामक एकटा समूहक संरचनाकेँ स्थापना होएत, जाहिमे एकटा माध्यमिक विद्यालय होएत जाहिमे पांच सँ दस किलोमीटरक परिधिमे आंगनवाड़ी केंद्र सहित अपन आसपासमे नीचाँकेँ ग्रेड केर प्रस्तुत करए बला अन्य सभटा विद्यालय होएत। ई सुझाव सर्वप्रथम शिक्षा आयोग (1964- 1966) द्वारा देल गेल छल मुदा एकरा लागू नहि कयल गेल रहैक। ई नीति जतए धरि संभव होइक विद्यालय परिसर/समूहकेँ विचारक दृढतासँ समर्थन करैत अछि। विद्यालय परिसर/समूह केर उद्देश्य बेसी संसाधन दक्षता आ समूहमे विद्यालयकेँ बेसी प्रभावी कामकाज, समन्वय, नेतृत्व, शासन आ प्रबंधन होएत।

7.7. विद्यालय परिसर, समूह बनएसँ आ परिसरमे संसाधनकेँ साझा उपयोग सँ दोसर आओर बहुत रास लाभ होएत, जेना दिव्यांग बच्चाक लेल बेहतर सहयोग; बेसी विषय-आधारित क्लब आ विद्यालय परिसरमे अकादमिक/खेल/कला/शिल्प केँ साझा उपयोगसँ कक्षामे आभाषी (वर्चुअल) कक्षा सभ आयोजित करबाक लेल आईसीटी उपकरणक उपयोग सहित एहि गतिविधिक बेसी समावेश; सामाजिक कार्यकर्ता आओर सलाहकारक मदति सँ विद्यार्थीकेँ लेल बेसी नीक सहयोगक उपलब्धता आ नामांकन, उपस्थिति आ उपलब्धिमे सुधार, आ विद्यालय परिसर प्रबंधन समिति (केवल विद्यालय प्रबंधन समितिकेँ बजाए) केँ माध्यम सँ बेहतर आ मजगूत शासन, निरीक्षण, निगरानी, नवाचार आ स्थानीय हितधारक द्वारा उठाओल जा रहल कदम अछि। विद्यालय, विद्यालय प्रमुख, शिक्षक, विद्यार्थी, सहयोगी कर्मचारी, माता-पिता आ स्थानीय नागरिककेँ पैघ आ जीवंत समूह बनाबएसँ संसाधनकेँ कुशल उपयोग होएत आ पूरा शिक्षा व्यवस्था ऊर्जावान आ समर्थ बनत।

7.8. विद्यालय परिसर/समूह व्यवस्थासँ विद्यालयक शासन सेहो सुधरत आ बेसी कुशल बनत। पहिने, डीएसई विद्यालय परिसर/समूह के स्तर पर अधिकार देत जे एकटा अर्द्ध-स्वायत्त इकाईकेँ रूपमे कार्य करत। जिला शिक्षा अधिकारी (डीईओ) आ ब्लॉक शिक्षा अधिकारी (बीईओ) मुख्य रूपसँ सभटा विद्यालय परिसर/समूह के एकटा इकाई केर रूपमे समन्वय करत आ ओकरा काज केर सुलभ बनाओत। परिसर डीएसई द्वारा सौंपल जाए बला जिम्मेदारीकेँ निर्वाहन आ ओकरा तहत आबए बला प्रत्येक विद्यालयक समन्वय करत। डीएसई द्वारा विद्यालय परिसर/समूह के बहुत स्वायत्तता प्रदान कयल जाएत जकरा बल पर ओ राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचा (एनसीएफ) आ राज्य पाठ्यचर्या ढांचा (एससीएफ) के अनुपालन करैत, समन्वित शिक्षा प्रदान करबाक दीस आवश्यक रचनात्मक कदम उठा सकत आ पाठ्यक्रम, शिक्षण शास्त्रकेँ स्तर पर प्रयोगधर्मी भ' सकत। एहि संगठनकेँ तहत, विद्यालय मजगूत होएत, बेसी स्वायत्तता पूर्वक काज क' पाओत आ एहि सँ परिसर बेसी नवाचारी आ जिम्मेदार बनत। एहि दौरान, डीएसई पैघ स्तरकेँ लक्ष्य पर ध्यान द'सकत जकरासँ पूरा शिक्षा व्यवस्थाकेँ प्रभावितामे सुधार होयत।

7.9. एहि परिसर/समूह द्वारा दुनू दीर्घकालीन आ अल्पकालीन सन्दर्भमे एकटा योजनाबद्ध तरीकासँ काज करबाक संस्कृतिकें विकास होएत। विद्यालय एसएमसी केर मदतिसँ अपन योजना (एसडीपी) बनाओत। विद्यालयकें योजनाक आधार पर विद्यालय परिसर/समूह विकास योजना (एससीडीपी) बनाओल जाएत। एससीडीपी मे परिसरसँ संबंधित अन्य सभ संस्थान जेना व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, केर योजना सम्मिलित होएत आ एकरा परिसरकें प्रधानाचार्य एवं शिक्षक एससीएमसी केर मदतिसँ तैयार करत आ एही योजना केर सार्वजनिक रूपसँ उपलब्ध सेहो कयल जाएत। एही योजना मे सम्मिलित होएत - मानव संसाधन, शिक्षण अधिगम संसाधन, भौतिक संसाधन, आ मूलभूत सुधारक लेल कयल जाए बला प्रयास, वित्तीय संसाधन, विद्यालय संस्कृति संबंधी प्रयास, शिक्षक क्षमता संवर्धन योजना आ शैक्षणिक परिणाम सम्बन्धी लक्ष्य। ओहिमे परिसर भरिकें शिक्षक आ विद्यार्थी सभक समूह के एकटा जीवंत अधिगम केंद्रित समुदायकें रूपमे विकसित करबाक प्रयास सेहो होएत। एसडीपी आ एससीडीपी माध्यम होइत जकरा डीएसी समेत सभ हितधारक परस्पर जुडाब बनल रखतथि। एसएमसी आ एससीएमसी के द्वारा एसडीपी आ एससीडीपी के उपयोग विद्यालय के कार्य प्रणाली आ दिशा पर नजरि राखए लेल होएत आ योजनाक क्रियान्वनमे सहयोग होएत। डीएसई, बीईओ सँ उपयुक्त अधिकारी द्वारा सभ विद्यालय परिसरक एससीडीपी के स्वीकृति देत। एकर उपरांत डीएसी एहि योजनाकें सफलता के लेल, अल्पावधि (एक वर्ष) आ दीर्घावधि (3 सँ 5 वर्ष) कें लेल संसाधन (वित्तीय, मानव, आ भौतिक आदि) उपलब्ध कराओत। शैक्षणिक उपलब्धि के हासिल करबाक लेल अन्य प्रासंगिक सहयोग सेहो ओकर द्वारा प्रदान कयल जाएत। डीएसई आ एससीईआरटी सभ विद्यालय के संग एसडीपी आ एससीडीपी के विकासक लेल विशेष मानक (उदहारण के लेल वित्तीय, कर्मचारी प्रक्रिया सम्बन्धी) आ मूलभूत ढाँचा उपलब्ध कराओत जकरा समय-समय पर संशोधित कयल जाएत।

7.10. निजी आ सार्वजनिक विद्यालय सहित सभ विद्यालयक बीच परस्पर सहयोग आ सकारात्मक तालमेल बढेबाक लेल देश भरिमे एकटा निजी आ एकटा सार्वजनिक विद्यालयकें परस्पर संबद्ध कयल जाएत जाहिसँ एहन संबद्ध विद्यालय एक-दोसर सँ भेंट/समन्वय क' सकय आ सीखि सकय आ संभव हो त' संसाधान सेहो बाँटि सकय। निजी विद्यालयक नीक प्रथाक दस्तावेजिकरण कयल जाएत, वितरण कयल जाएत आ ओकरा सार्वजनिक विद्यालयक स्थापित प्रक्रियामे सम्मिलित कयल जाएत आ जतए संभव होयत ओकर विपरीत सेहो होएत।

7.11. सभ राज्य/जिला केर 'बाल भवन' स्थापित करबाक लेल प्रोत्साहित कयल जाएत आ प्रत्येक बएसक बच्चा सप्ताहमे एक बेरि (उदहारणक लेल सप्ताहांतमे) जा सकय, आ ओहि सँ बेसी विशेष दैनिक बोर्डिंग विद्यालयमे आ कला-संबंधित, आजीविका संबंधित आ खेल-संबंधित गतिविधिमे भाग ल' सकय। ई बाल भवन जतए संभव हो विद्यालय परिसर/समूहक हिस्सा भ' सकैत अछि।

7.12. विद्यालय पूरा समुदाय के लेल एकटा सम्मानक आ उत्सवक स्थल हेबाक चाही। एकटा संस्थानक रूपमे विद्यालयक प्रतिष्ठाकें पुनः स्थापित करबाक चाही आ विद्यालय स्थापना दिवस सन महत्वपूर्ण दिवस समुदाय केर संग मनेबाक चाही आ एहि दिन विद्यालयक विशिष्ट भूतपूर्व विद्यार्थीक सूची प्रदर्शित कयल जेबाक चाही आ हुनक सम्मान हेबाक चाही। उपयोगमे नहि आबए बला विद्यालयक भौतिक सुविधाक उपयोग समुदायक लेल बौद्धिक, सामाजिक आ स्वयंसेवी गतिविधिक आयोजनक लेल आ गैर-शैक्षणिक/विद्यालयक समयकें उपयोग सामाजिक मेलजोल के प्रोत्साहन लेल आ एकटा 'सामाजिक चेतना केंद्र' के लेल सेहो उपयोग कयल जा सकैत अछि।

8. विद्यालयी शिक्षाक लेल मानक निर्धारण आ प्रमाणन

8.1. विद्यालयी शिक्षा नियामक प्रणालीकें लक्ष्य शैक्षिक परिणाममे लगातार सुधार करब हेबाक चाही; ई विद्यालय, नवाचारकें बेसी सीमित नहि करए, वा शिक्षक, प्रधानाचार्य आ विद्यार्थीक उत्साह आ हिम्मतकें नहि तोड़ए। कुल मिलाकें विनियमनकें विद्यालय आ शिक्षककें विश्वासक संग सशक्त बनएबाक लक्ष्य हेबाक चाही,

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

जाहिसँ ओ उत्कृष्टताक लेल प्रयास क' सकय आ अपन सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन क' सकय आ सभ वित्त, प्रक्रिया आ शैक्षणिक परिणामक पूरा पारदर्शिताक संग सार्वजनिक करबाक माध्यमसँ प्रणालीकेँ अखंडता सुनिश्चित क' सकय।

8.2. वर्तमानमे विद्यालय शिक्षण प्रणालीमे, सार्वजनिक शिक्षाक प्रावधान, समस्त शैक्षणिक संस्थानकेँ नियमन, आ नीतिक निर्माणसँ संबंधित काजकेँ एकल निकाय अर्थात् विद्यालय शिक्षा विभाग या एकर अंगकेँ द्वारा संपन्न कयल जाइत अछि। जकर परिणाम शक्ति बहुत बेसी केन्द्रीयकरण आ हितक टकरावक रूपमे आगू अबैत अछि, एकर एकटा आर परिणाम विद्यालय प्रणाली अप्रभावी प्रबंधनक रूपमे आगू अबैत अछि किएक त' शिक्षा प्रावधानसँ सम्बंधित प्रयास, विद्यालय शिक्षा द्वारा आवश्यक रूपसँ निबाहल जाए बला विनियमन आ एहि तरहक अन्य भूमिका केर कारण बेसी काल अपन दिशा भटकि जाइत अछि।

8.3. वर्तमान नियामक व्यवस्था जतए एक दिस लाभक लेल अधिकतर फॉर-प्रॉफिट निजी विद्यालय द्वारा पैघ पैमाना पर भ' रहल शिक्षाक व्यवसायीकरण या अभिभावकक आर्थिक शोषण पर नियंत्रण नहि क' सकल अछि, ओतए, दोसर दिस ई प्रायः अनजानमे जनताक हितक लेल काज करए बला निजी/परोपकारी विद्यालय केर हतोत्साहित करैत रहल अछि। सार्वजनिक आ निजी विद्यालयक लेल आवश्यक नियामक दृष्टिकोणक बीच बहुत बेसी विषमता रहल अछि, जखन कि दुनू प्रकारक विद्यालयक लक्ष्य एकेटा हेबाक चाही: गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करब।

8.4. सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली एकटा जीवंत लोकतान्त्रिक समाजक आधार अछि, आ देशक लेल उच्चतम स्तरक शैक्षणिक परिणामकेँ हासिल करबाक लेल एकर संचालनक तरीकाकेँ अवश्य परिवर्तित आ मजगूत करबाक चाही। एकर संगहि निजी/परोपकारी विद्यालयक महत्वपूर्ण आ लाभदायक भूमिकाक निर्वहन करबाक लेल प्रोत्साहित आ सक्षम कयल जेबाक चाही।

8.5. विद्यालय शिक्षा प्रणालीसँ सम्बंधित उत्तरदायित्व आ ओकर विनियमनसँ सम्बंधित दृष्टिकोणक संबंधमे एहि नीतिक प्रमुख सिद्धान्त आ विशेष अनुशंसा एहि प्रकार अछि:

- क) विद्यालय शिक्षा विभाग, जे विद्यालय शिक्षामे सर्वोच्च राज्य- स्तरीय निकाय अछि, सार्वजनिक शिक्षा प्रणालीक निरंतर सुधार करबाक लेल समग्र निगरानी आ निति निर्धारणक लेल उत्तरदायी होएत; ई विद्यालयकेँ प्रावधान आ संचालन या विद्यालयकेँ विनियमनमे सम्मिलित नहि होएत जाहि सँ सार्वजनिक विद्यालयक सुधार पर ध्यान केंद्रित रहए आ हित सभक टकराव समाप्त भ' सकय।
- ख) सम्पूर्ण राज्यक सार्वजनिक विद्यालय प्रणालीक सेवा प्रावधान आ शैक्षिक संचालनक जिम्मेदारी विद्यालय शिक्षा निदेशालयक होएत (जाहिमे डीईओ, बीईओ अदि सेहो सम्मिलित छथि) ई शैक्षिक संचालन आ प्रावधानसँ सम्बंधित नीतिकेँ लागू करबाक काज स्वतंत्र रूपसँ करत।
- ग) पूर्व-प्राथमिक शिक्षा- निजी, सार्वजनिक आ परोपकारी-सहित आवश्यक गुणवत्ता मानक सभक अनुपालनकेँ सुनिश्चित करबाक लेल शिक्षाक सभ चरणक लेल एकटा प्रभावी गुणवत्तापूर्ण विनियमन या मान्यता प्रणाली स्थापित कयल जाएत। ई सुनिश्चित करबाक लेल जे सभ विद्यालय किछु न्यूनतम व्यावसायिक आ गुणवत्तापूर्ण मानक केर पालन करैत अछि, राज्य/केंद्र शासित प्रदेश राज्य विद्यालय मानक प्राधिकरण (एसएसएसए) नामक एकटा स्वतंत्र, राज्य- व्यापी निकायक स्थापना करत। एसएसएसए किछु मूलभूत मानक (जेना बचाव, सुरक्षा, आधारभूत ढाँचा, कक्षा आ विषयक आधार पर शिक्षकक संख्या, वित्तीय ईमानदारी आ नियंत्रणक उपयुक्त प्रक्रिया) पर न्यूनतम मानक केर स्थापना करत, जकर पालन सभ विद्यालयकेँ करय पड़तैक। एससीईआरटी द्वारा विभिन्न हितधारक, विशेष रूपसँ शिक्षक आ विद्यालयसँ परामर्शक द्वारा प्रत्येक राज्यक लेल एहि मानदंड सभक रूपरेखा तैयार कयल जाएत।

सार्वजनिक निगरानी आ जवाबदेहीक लेल एसएसएसए द्वारा निर्धारित सभ बुनियादी विनियामक सूचनाकें पारदर्शी सार्वजनिक स्व-प्रकटीकरण पैघ पैमाना पर उपयोग कयल जाएत। जाहि आयाम पर जानकारी केर स्व-प्रकटीकरण कयल जेबाक अछि, आ प्रकटीकरणक प्रारूप एसएसएसए द्वारा विद्यालयक लेल मानक-तय करबाक दुनिया भरि मे कयल जा रहल उत्कृष्ट प्रयासक अनुसार तय कयल जाएत। ई जानकारी सभ विद्यालय द्वारा अपडेट कयल जाएत आ सार्वजनिक वेबसाइट जकरा एसएसएसए द्वारा संचालित कयल जाइत अछि, पर उपलब्ध करेबाक होएत आ विद्यालय सभक वेबसाइट पर सेहो। सार्वजनिक क्षेत्रमे उठाओल गेल वा सार्वजनिक जीवनसँ जुड़ल हितधारक वा अन्य लोक केँ कोनो शिकायतक एसएसएसए द्वारा समाधान कयल जाएत। एकटा नियमित अंतराल पर, किछु चयनित छात्रसँ ऑनलाइन प्रतिक्रिया मंगाओल जाएत जाहिसँ नियमित अंतराल पर महत्वपूर्ण सुझाव भेटि सकय। एसएसएसए केर सभटा काज मे दक्षता आ पारदर्शिता सुनिश्चित करबाक लेल तकनीकी ज्ञानक उपयुक्त रूपसँ उपयोग कयल जाएत। एहिसँ विद्यालय द्वारा वर्तमानमे वहन कयल जाए बला विनियामक आज्ञापत्रमे बहुत कमी आओत।

- घ) राज्यमे अकादमिक मानक आ पाठ्यक्रम सहित शैक्षणिक मामिला, एससीईआरटी (जे एनसीईआरटी केँ संग परामर्श आ सहयोगक लेल ल'ग सँ जुड़ल होइत) केर नेतृत्वमे होएत, जे कि एकटा संस्थानक रूपमे सुदृढ कयल जाएत। एससीईआरटी सभ हितधारकक संग व्यापक परामर्शक माध्यमसँ एकटा विद्यालय क्वालिटी असेसमेंट एंड एक्रिडिटेशन फ्रेमवर्क (एसक्यूएएफ) तैयार करत। सीआरसी, बीआरसी आ डीआईईटी सन संस्थानकेँ पुनर्जीवित करबाक लेल एससीईआरटी एकटा 'परिवर्तन प्रबंधन प्रक्रिया' क नेतृत्व करत, जे 3 वर्षक अंदर निश्चित रूपसँ एकर सभक क्षमता आ कार्य-संस्कृति केर बदलि क' एकरा सभकेँ श्रेष्ठ जीवंत संस्थानक रूपमे स्थापित करत। एहि बीच, विद्यालय छोड़ए बला स्तर पर छात्र सभक दक्षता आ प्रमाणनकेँ प्रत्येक राज्य प्रमाणन/परीक्षा बोर्ड द्वारा नियंत्रित कयल जाएत।

8.6. विद्यालय, संस्थान, शिक्षक, अधिकारी, समुदाय आ अन्य हितधारककेँ सशक्त बनएबाक लेल आ हुनका संसाधनसँ परिपूर्ण बनएबाक लेल काज करए बला संस्कृति, संरचना, आ व्यवस्था एहि सभक जवाबदेही केँ सेहो सुनिश्चित करत। प्रत्येक हितधारक आ शिक्षा प्रणालीमे भागीदार लोक उच्चतम स्तरक ईमानदार, पूर्ण प्रतिबद्धता आ अनुकरणीय कार्य नीतिक संग अपन भूमिकाक लेल जवाबदेह हेताह। व्यवस्थाक प्रत्येक भूमिकासँ की अपेक्षा अछि से स्पष्ट रूपसँ व्यक्त कयल जाएत आ एहि अपेक्षाक अनुसार हितधारक केर काजक मूल्यांकन गंभीर रूपसँ होएत। जवाबदेही सुनिश्चित करैत मूल्यांकनक प्रणाली अपनाकेँ एकटा उद्देश्यपूर्ण आ विकासोन्मुख प्रक्रियाक रूपमे विकसित करत। एहिमे प्रतिक्रिया आ मूल्यांकनक बहुत रास स्रोत होएत, आ प्रदर्शनक संबंधमे पूरा जानकारी सुनिश्चित करबाक लेल (आ उदाहरणक लेल छात्रक अंकक संग, केवल सरलीकृत रूपसँ नहि जोड़ल जाएत) मूल्यांकन सँ ई पता चलत जे छात्रक शैक्षिक प्राप्तिसँ परिणाममे बहुत रास हस्तक्षेप करए बला आ बाहरी प्रभाव होइत अछि। ई मान्यता सेहो देत जे शिक्षाक लेल विशेष क' विद्यालयक स्तर पर समूहकर्मक आवश्यकता होइत अछि। सभ व्यक्तिक पदोन्नति, मान्यता, जवाबदेही एहन प्रदर्शन मूल्यांकन पर आधारित रहत। सभ अधिकारी ई सुनिश्चित करबाक लेल जिम्मेदार होएताह जे ई 'विकास, प्रदर्शन आ जवाबदेही' प्रणाली उच्चतर अखंडताक संग, आ व्यवस्थित रूपसँ, हुनक नियंत्रणमे रहैत समुचित रूपसँ अपन काज करैत रहए।

8.7. सार्वजनिक आ निजी विद्यालय (केंद्र सरकार द्वारा प्रबंधित/सहायता प्राप्त/नियंत्रित कयल जाय बला विद्यालयकेँ छोड़ि केँ) केर मूल्यांकन प्रमाणन समान मापदंड/मानक आ प्रक्रियाक आधार पर कयल जाएत, जे ऑनलाइन, ऑफलाइन सार्वजनिक प्रकटीकरण आ पारदर्शिता पर जोर दैत अछि, जाहिसँ ई सुनिश्चित कयल जा सकत जे सार्वजनिक हित बला विद्यालयकेँ प्रोत्साहित कयल जाए आ कोनो प्रकारकेँ बाधा उत्पन्न नहि होइक। गुणवत्तापूर्ण शिक्षाक लेल निजी परोपकारी प्रयास केँ प्रोत्साहित कयल जाएत-जाहिसँ कि शिक्षाक जे सार्वजनिक सेवा भावना अछि तकर पुष्टि भ' सकय एवं माता-पिता आ समुदायकेँ शिक्षा शुल्क मे मनमाना वृद्धिसँ सुरक्षित करबाक प्रयास सेहो कयल जाएत। विद्यालयक वेबसाइट आ एसएसएसए वेबसाइट पर- सार्वजनिक आ निजी दुनू

विद्यालयक सूचनाकें सार्वजनिक कयल जाएत- जाहिमे कम सँ कम) कक्षा, छात्र, शिक्षकक संख्या केर जानकारी, पढाओल जाए बला विषय, कोनो शुल्क, आ एनएएस आ एसएएस मूल्यांकनक आधार पर विद्यार्थीक समग्र परिणाम सम्मिलित कयल जाएत। केंद्र सरकार द्वारा नियंत्रित/प्रबंधित/सहायता प्राप्त विद्यालयक लेल, सीबीएसई एमएचआरडी केर परामर्शसँ एकटा मूलभूत ढाँचा तैयार करत। सभ शैक्षणिक संस्थान केर 'नॉट फॉर प्रॉफिट' एंटीटी केँ रूपमे लेखा परीक्षा आ समान प्रकटीकरण मानकक अनुसार मानल जाएत। जँ कोनो अधिशेष हो त' शैक्षिक क्षेत्रमे ओकर पुनर्निवेश कयल जाएत।

8.8. विद्यालय विनियमन, प्रमाणन आ संचालनक लेल तय मानक/विनियामक ढाँचा आ सुगम प्रणालीक समीक्षा कयल जाएत जाहि सँ पछिला दशकमे प्राप्त कयल गेल ज्ञान आ अनुभवक आधार पर सुधार कयल जा सकय। एहि समीक्षाक उद्देश्य ई सुनिश्चित करब होएत जे सभ छात्र, विशेष रूपसँ सुविधा सँ वंचित तबका केर छात्रकेँ उच्चतर-गुणवत्ता आ समतापूर्ण विद्यालय शिक्षा आरम्भिक बाल्यावस्था देखरेख आ शिक्षा (3 वर्षक) सँ ल' कए उच्चतर माध्यमिक शिक्षा (अर्थात, ग्रेड 12 धरि) निःशुल्क आ अनिवार्य होइका इनपुट सभ पर जोर देबाक, आ हुनक भौतिक आ संरचनात्मक विवरणक यांत्रिक प्रकृति-केँ बदलि देल जाएत आ आवश्यकता केँ जमीनी यथार्थक अनुसार सँ बनाओल गेल अछि, उदाहरणक लेल, भूमि क्षेत्र आ कक्षक आकार, शहरी क्षेत्रमे खेलक मैदान केर व्यावहार आदिक संबंधमे। एहन व्यवस्थाकेँ समायोजित आ ढील कयल जाएत, जाहिसँ संरक्षा, सुरक्षा आ एकटा सुखद आ उत्पादक अधिगम स्थल सुनिश्चित करबाक लेल उपयुक्त लचक भेटतैक। शैक्षिक परिणाम आ सभ वित्तीय, शैक्षिक आ परिचालन मामिलाक पारदर्शी प्रकटीकरणकेँ उचित महत्व देल जाएत आ विद्यालयक मूल्यांकनमे उपयुक्त रूपसँ सम्मिलित कयल जाएत। एहिसँ सभ बच्चाकेँ लेल निःशुल्क, न्यायसंगत आ गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक आ माध्यमिक शिक्षा सुनिश्चित करबाक सतत विकास लक्ष्य 4 (एसडीजी) प्राप्त करबाक दिशामे भारतक प्रगतिमे आर सुधार होएत।

8.9. सार्वजनिक-विद्यालय शिक्षा प्रणालीक उद्देश्य उच्चतम गुणवत्ता शिक्षा प्रदान करब होएत जाहिसँ अपन बच्चाकेँ शिक्षित करबाक लेल जीवनक सभ क्षेत्रसँ माता-पिताक लेल सभसँ आकर्षक विकल्प बनि जाए।

8.10. समय- समय पर समग्र प्रणालीक आवधिक जाँच-पड़तालक लेल, छात्रक सीखबाक स्तरकेँ एकटा नमूना-आधारित नेशनल अचीवमेंट सर्वे (एनएएस) प्रस्तावित नव राष्ट्रीय मूल्यांकन केंद्र, 'परख' द्वारा अन्य सरकारी निकाय जेना कि एनसीईआरटीक संग उपयुक्त सहयोगक संग कयल जाएत जे बहुत रास काज जेना डाटा विश्लेषणक संगे-संगे मूल्यांकन प्रक्रियामे सेहो सहायता क' सकैत अछि। मूल्यांकनमे सरकारीक संग- संग निजी विद्यालयक छात्रकेँ सेहो सम्मिलित कयल जाएत। राज्यक अपन स्वयं केर जनगणना-आधारित 'राज्य मूल्यांकन सर्वेक्षण' (एसएएस) केर संचालन करबाक लेल सेहो प्रोत्साहित कयल जाएत, जकर परिणामक उपयोग केवल विकासक उद्देश्यसँ कयल जाएत, विद्यालय शिक्षा प्रणालीक निरंतर सुधारक लेल ओकर समग्र आ विद्यार्थीक परिचय उजागर कयने बिना ओकर परिणामकेँ विद्यालय द्वारा सार्वजनिक कयल जाएत। प्रस्तावित नव मूल्यांकन केंद्र, "परख" केर स्थापना धरि एनसीईआरटी एनएएस केँ जारी राखि सकैत अछि।

8.11. अंतमे, विद्यालयमे नामांकित बच्चा आ किशोरकेँ एहि पूरा प्रक्रियामे नहि बिसरबाक चाही। अंततः, विद्यालय प्रणाली हुनका लेल निर्मित कयल गेल अछि। हुनक सुरक्षा आ अधिकार पर ध्यान देब-विशेष रूपसँ बालिका -आ किशोर द्वारा सामना कयल जाए बला विभिन्न गंभीर मुद्दा, जेना कि मादक द्रव्यक सेवन आ कतेको प्रकारक भेदभाव आ उत्पीड़न, बच्चा/किशोरक अधिकार अथवा सुरक्षाक खिलाफ कोनो तरहक उल्लंघनक सूचना आ ओहि पर प्रतिक्रियाक लेल स्पष्ट, सुरक्षित आ कुशल तंत्रक संग प्रणाली द्वारा सर्वोच्च महत्व प्रदान कयल जाएबाक चाही। एहन तंत्रक विकास जे सभ छात्रक लेल प्रभावी, सामयिक आ सर्वविदित होइ, उच्चतर प्राथमिकता बला होएत।

भाग II. उच्चतर शिक्षा

9. गुणवत्तापूर्ण विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय: भारतीय उच्चतर शिक्षा व्यवस्था हेतु एकटा नव आ भविष्योन्मुखी दृष्टिकोण

9.1. उच्चतर शिक्षा मनुष्य आ संगहि सामाजिक कल्याणकें प्रोत्साहनमे अति-आवश्यक भूमिकाक निर्वहन कए रहल अछि, भारतक विकास एकर संविधानक परिकल्पनाक अनुसार - एकटा लोकतान्त्रिक, न्यायपूर्ण, सामाजिक रूपसँ सचेत, संस्कारिक आ मानवीय राष्ट्र जतए सभक लेल न्याय, स्वतंत्रता, समानता, आ बंधुत्वक भाव होइ बला राष्ट्रकें रूपमे कएल गेल अछि। एकटा राष्ट्रक आजीविकाकें स्थायित्व देबामे आर्थिक विकासमे सहो उच्चतर शिक्षा एकटा महत्वपूर्ण योगदान दैत अछि। जेना-जेना भारत ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था आ समाजक दिस बढ़ल जा रहल अछि तेना-तेना आ बेसी भारतीय युवा उच्चतर-शिक्षाक दिस बढ़त।

9.1.1. एकैसम सदीक आवश्यकता कें देखैत, गुणवत्तापूर्ण उच्चतर शिक्षाक आवश्यक उद्देश्य, नीक चिंतनशील, बहुमुखी प्रतिभा बला रचनात्मक व्यक्ति विकास करब हेबाक चाही। ई एकटा व्यक्तिकें एक या ओहिसँ बेसी विशिष्ट क्षेत्रमे गहन स्तर पर अध्ययन करबा मे सक्षम बनेबामे, आ संगहि चरित्र, नैतिक आ संवैधानिक मूल्य, बौद्धिक जिज्ञासा, वैज्ञानिक स्वभाव, रचनात्मकता, सेवाक भावना आ विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी, भाषा संगहि पेशेवर, तकनीकी आ व्यावसायिक विषय सहित विभिन्न विषयमे एकैसम सदी केर क्षमताकें विकसित करबाक लेल सक्षम बनाबय। उच्चतर गुणवत्ता बला शिक्षा द्वारा व्यक्तिगत उपलब्धि आ ज्ञान, रचनात्मक सार्वजनिक सहभागिता आ समाजमे उत्पादक योगदानकें सक्षम करबाक चाही। एकरा छात्रकें बेसी सार्थक आ संतोषजनक जीवन आ कार्य भूमिकाक लेल तैयार करबाक चाही आ आर्थिक स्वतंत्रताक लेल सक्षम करबाक चाही।

9.1.2. व्यक्ति समग्र विकासक उद्देश्यक लेल ई आवश्यक अछि जे पूर्व-विद्यालय सँ उच्चतर शिक्षा धरि सीखबाक प्रत्येक चरणमे कौशल आ मूल्यक एकटा निर्धारित संग्रह सम्मिलित कएल जाएत।

9.1.3. सामाजिक स्तर पर, उच्चतर शिक्षाक उद्देश्य राष्ट्रकें प्रबुद्ध, सामाजिक रूपसँ जागरूक, जानकार आ कुशल बनएबाक अछि जे अपन नागरिक सभक उत्थान क' सकए आ समस्या सभक लेल सशक्त समाधान क' सकए। उच्चतर शिक्षा देशमे ज्ञान निर्माण आ नवपरिवर्तनक आधार सेहो बनबैत अछि आ एकरा चलते राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाक विकासमे एकटा महत्वपूर्ण भूमिका निबाहैत अछि। एहि कारण उच्चतर शिक्षाक उद्देश्य व्यक्तिगत रोजगारक अवसर केर सृजन करब टा नहि अछि। ई एकटा जीवंत आ सामाजिक रूपसँ जुडल सहकारी समुदायक संग मिल क' एकटा बेसी प्रसन्नतापूर्ण, सामंजस्यपूर्ण, सुसंस्कृत, उत्पादक, अभिनव, प्रगतिशील आ समृद्ध राष्ट्रक प्रतिनिधित्व करब अछि।

9.2. वर्तमानमे भारतमे उच्चतर शिक्षा प्रणालीक किछु प्रमुख समस्यामे निम्नलिखित सम्मिलित अछि:

- क. गंभीर रूपसँ खंडित उच्चतर शैक्षिक पारिस्थितिकी तंत्र;
- ख. संज्ञानात्मक कौशलक विकास आ सीखबाक परिणाम पर कम बल;
- ग. विषयक कठोर विभाजन, विद्यार्थीकें बहुत पहिनेसँ विशेषज्ञ आ अध्ययनक संकीर्ण क्षेत्रक दिस ठेल देब;
- घ. सीमित पहुँच, विशेष रूपसँ सामाजिक-आर्थिक रूपसँ वंचित क्षेत्रमे जतए किछुए टा एहन विश्वविद्यालय आ महाविद्यालय सभ छैक जे स्थानीय भाषा पढ़बैत छैक;
- ङ. सीमित शिक्षक और संस्थागत स्वायत्तता;
- च. योग्यता आधारित कैरियर प्रबंधन और संकाय और संस्थागत नेतृत्वक प्रगति के लेल अपर्याप्त तंत्र;

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

- छ. अधिकांश विश्वविद्यालय या महाविद्यालयमे शोध पर कम बल आ विषयक अनुशासन मे पारदर्शिता आ प्रतिस्पर्धी- समीक्षा शोध निधिक कमी;
- ज. उच्चतर शिक्षा संस्थानमे (एचईआई) संचालन आ नेतृत्व क्षमताक अभाव;
- झ. एकटा अप्रभावी विनियामक प्रणाली; आ
- ञ. बहुत रास संबंधित विश्वविद्यालय जेकर परिणामस्वरूप स्नातक शिक्षाक निम्न मानक।

9.3. ई नीति उच्चतर शिक्षा प्रणालीमे आमूल-चूल परिवर्तन आ नव उत्साहकें संचारक लेल उपयुक्त चुनौतीकें दूर करबाक लेल कहैत अछि जेकरासँ सभ युवा लोकनिकें ओकर आकांक्षाक अनुरूप गुणवत्तापूर्ण, समान अवसर देबए वला एवं समावेशी उच्चतर शिक्षा भेटए। एहि नीतिक दृष्टिमे वर्तमान उच्चतर शिक्षा प्रणालीमे निम्नलिखित प्रमुख परिवर्तन सम्मिलित अछि।

- क. एहन उच्चतर शिक्षा व्यवस्थाक दिस बढ़ब जाहिमे विशाल बहु-विषयक विश्वविद्यालय आ महाविद्यालय हो, जतए प्रत्येक जिलामे या ओकरा लग कम-सँ-कम एक आ पूरा भारतमे बेसी एचईआई एहन होइक, जे स्थानीय/भारतीय भाषामे शिक्षा या कार्यक्रमक माध्यम प्रदान करैत होइक।
- ख. आओर बेसी बहु-विषयक स्नातक शिक्षाक दिस बढ़ब;
- ग. संकाय आ संस्थागत स्वायत्तताक दिस बढ़ब;
- घ. विद्यार्थीक अनुभवमे वृद्धिक लेल पाठ्यचर्या, शिक्षण-शास्त्र, मूल्यांकन आ विद्यार्थीकें देल जाए बला सहयोगमे आमूल-चूल परिवर्तन करब;
- ङ. शिक्षण, अनुसंधान आ सेवाक आधार पर योग्यता- नियुक्ति आ व्यवसायक प्रगतिक माध्यमसँ संकाय आ संस्थागत नेतृत्वक स्थितिकें अखंडताक पुष्टि करब;
- च. गहन-समीक्षित उत्तम अनुसंधान आ विश्वविद्यालय आ महाविद्यालय मे सक्रिय रूपसँ अनुसंधानक नेओँ रखबाक लेल राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (एनआरएफ) केर स्थापना;
- छ. शैक्षणिक आ प्रशासनिक स्वायत्तता बला उच्चतर-योग्य स्वतंत्र बोर्ड सभ द्वारा एचईआई के नियंत्रण।
- ज. उच्चतर शिक्षाकें सभ एकल नियामक द्वारा 'सरल मुदा प्रभावशाली' विनियमन;
- झ. उपायक एकटा शृंखलाक माध्यम सँ पहुँच, समता आ समावेशनमे वृद्धि: एकरा संगहि उत्कृष्ट सार्वजनिक शिक्षाक लेल अवसर, वंचित आ निर्धन छात्रक लेल निजी/परोपकारी विश्वविद्यालय द्वारा छात्रवृत्तिमे पर्याप्त वृद्धि; मुक्त विद्यालय, ऑनलाइन शिक्षा आ मुक्त दूरस्थ शिक्षा (ओडीएल); आ दिव्यांग शिक्षार्थीक लेल सभ मूलभूत ढांचा आ शिक्षण सामग्रीक उपलब्धता आ ओकरा धरि हुनक पहुँच।

10. सांस्थानिक पुनर्गठन आ समेकन

10.1. उच्चतर शिक्षाक संबंधमे एहि नीतिक मुख्य जोर उच्चतर शिक्षा संस्थानकें पैघ एवं बहु-विषयक विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, आ एचईआई समूह/ज्ञान केंद्रमे स्थानांतरित क' कए उच्चतर शिक्षाक विखंडनकें समाप्त करब अछि। जाहिमे प्रत्येकक लक्ष्य 3000 या ओहिसँ बेसी छात्रक उत्थान करबाक होएत। ई पूरा उच्चतर शिक्षामे छात्रकें सीखबाक लेल विद्वान आ संगी सभकें जीवंत समुदायक निर्माण, विषय सभक बीच खाधि कें पाटब, छात्रकें हुनक सम्पूर्ण मानसिक, चहुमुखी (कलात्मक, रचनात्मक, विश्लेषणात्मक, आ खेल) विकास करबामे सक्षम, सक्रिय, अनुसंधान समुदाय, अंतर- अनुशासनिक अनुसंधान सहितकें विकसित करबाक लेल, आ संसंधान, सामग्री, मनुष्यक कार्य कुशलताक बढ़ोत्तरीमे मदति करत।

10.2. उच्चतर शिक्षाक ढांचाक बारेमे, ई नीति सबसँ बेसी अनुशंसा पैघ आ बहु-विषयक विश्वविद्यालय आ उच्चतर शिक्षा संस्थान (एचईआई) समूहक संबंधमे करैत अछि। भारतीय प्राचीन विश्वविद्यालय तक्षशिला, नालंदा, वल्लभी आ विक्रमशिला जाहिमे भारत आ अन्य देशक हजारक हजार छात्र जीवंत एवं बहु- विषयक परिवेशमे शिक्षा ल' रहल छल ओ सब पैघ सफलताक प्रदर्शन कएलक जे एहि तरहक पैघ एवं बहु-विषयक अनुसंधान आ शिक्षण विश्वविद्यालय टा भ' सकैत अछि। भारतकेँ बहुमुखी प्रतिभा बला योग्य आ अभिनव व्यक्तिकेँ बनएबाक लेल एहि परंपराकेँ पुनर्स्थापित करबाक आवश्यकता छैक, जाहिसँ कतेको देश पहिनहिसँ शैक्षिक आ आर्थिक रूपसँ एहि दिशामे परिणत भ' रहल अछि।

10.3. उच्चतर शिक्षाक एहि दृष्टिक लेल विशेष रूपसँ एकटा नव वैचारिक धारणा/बोध केर आवश्यकता होएत जाहिमे एकटा उच्चतर शिक्षा संस्थान (एचईआई) अर्थात एकटा विश्वविद्यालय या एकटा महाविद्यालयक गठन सम्मिलित अछि। विश्वविद्यालयसँ अभिप्राय एकटा एहन बहु-विषयक संस्थान, जे उच्चतर स्तरीय अधिगमक लेल उच्च श्रेणी केर शिक्षण, शोध आ सामुदायिक भागीदारीक संग स्नातक आ स्नातकोत्तर कार्यक्रम चलाबैत अछि। एहि लेल जँ विश्वविद्यालयकेँ परिभाषित कएल जाए त' कतेको एहन संस्थान जे गुणवत्तापूर्ण शिक्षण ओ बेसी बल देबए बला होइत मुदा महत्वपूर्ण अनुसंधानकेँ संचालन करए बला होइत जत' शिक्षक गहन विश्वविद्यालय प्राथमिक तौर पर, एकटा स्वायत्त डिग्री देबय बला महाविद्यालय (एसी) उच्चतर शिक्षा एकटा पैघ बहु- विषयक संस्थानकेँ संदर्भित करत जे स्नातक केर डिग्री प्रदान करैत अछि आ मुख्य रूपसँ स्नातक शिक्षण पर केंद्रित अछि, यद्यपि ई ओतहि धरि सीमित नहि होएत आ एकरा ओतहि धरि सीमित करबाक आवश्यकता नहि अछि आ ई आमतौर पर एकटा विशिष्ट विश्वविद्यालय सँ छोट होएत।

10.4. श्रेणीबद्ध मान्यता केर एकटा पारदर्शी प्रणालीक माध्यमसँ, महाविद्यालयकेँ ग्रेडेड स्वायत्तता देबाक लेल एकटा चरणबद्ध प्रणाली स्थापित कएल जाएत। मान्यता प्राप्त करबाक लेल सभ स्तर पर आवश्यक न्यूनतम मानककेँ पूरा करबाक लेल महाविद्यालयक प्रोत्साहन, मार्गदर्शन, सहायता आ प्रेरित कएल जाएत। कालांतरमे धीरे-धीरे सभटा महाविद्यालय की त' डिग्री प्रदान करए बला स्वायत्त महाविद्यालय बनि जायत, वा कोनो विश्वविद्यालयक अंगक रूपमे विकसित होएत, वा पूर्ण रूपसँ ओकर हिस्सा होएत। जँ ओ चाहए त' उपयुक्त मान्यताक संग, स्वायत्त डिग्री प्रदान करए बला महाविद्यालय अनुसंधान-गहन या शिक्षण- गहन विश्वविद्यालयमे विकसित भ' सकैत अछि।

10.5. ई ध्यान राखब महत्वपूर्ण अछि जे एहि तीनू प्रकारक संस्थानक वर्गीकरण एकटा स्पष्ट आ अलग-अलग श्रेणी नहि अछि, अपितु एक निरन्तरताक संग अछि। एचईआई केँ अपन योजनामे काज, आ प्रभावशीलताक आधार पर एक श्रेणीसँ दोसर श्रेणीमे जेबाक स्वायत्तता आ स्वतंत्रता होएत। एहि संस्थाकेँ चिह्नित करबाक लेल सभसँ प्रमुख काज ओकर लक्ष्य आ काज पर ध्यान केंद्रित करबाक होएत। प्रत्यायन प्रणाली एहि प्रकारक संस्थान (एचईआई) केर लेल उचित रूपसँ भिन्न आ प्रासंगिक मापदंडक विकास आ उपयोग करत। यद्यपि, सभ प्रकारक संस्थान (एचईआई) मे उच्चतर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा आ शिक्षण-अधिगम अपेक्षा समान होएत।

10.6. शिक्षण आ शोधक अतिरिक्त उच्चतर शिक्षा संस्थान (एचईआई) सभक आन महत्वपूर्ण जिम्मेदारी रहतैक जेकरा ओ उपयुक्त संसाधन, प्रोत्साहन आ संरचनाकेँ उपलब्ध करेबाक माध्यमसँ निर्वहन करत। एहिमे सम्मिलित अछि अन्य उच्चतर शिक्षा संस्थान (एचईआई) केँ विकसित आ स्थापित करबा मे सहयोग, सामुदायिक सहभागिता आ सेवा, कार्यप्रणालीक विभिन्न क्षेत्रमे योगदान, उच्चतर शिक्षा प्रणालीक लेल प्राध्यापक केर योग्यताक विकास आ विद्यालयी शिक्षामे मदति।

10.7. 2040 धरि सभटा वर्तमान उच्चतर शिक्षा संस्थान (एचईआई) केर उद्देश्य अपनाकेँ बहु-विषयक संस्थानकेँ रूपमे स्थापित करब होएत आ मूलभूत ढाँचा आ संसाधनकेँ सर्वोत्तम उपयोगक लेल आ जीवंत बहु-विषयक समुदायक निर्माणक लेल हजारक संख्यामे छात्र नामांकन करबाक लक्ष्य राखए। किएक तँ एहि प्रक्रियामे समय

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

लगतैक, सभ उच्चतर संस्थान सबसँ पहिने 2030 धरि बहु-विषयक संस्थान बनबाक योजना बनाओत, आ क्रमशः छात्रक नामांकन संख्या वांछित स्तर धरि बढ़ाओत।

10.8. वंचित क्षेत्रमे पूर्ण उपलब्धता, न्यायसंगतता आ समावेशक लेल उचित संख्यामे उच्चतर शिक्षा संस्था स्थापित आ विकसित कएल जाएत। 2030 धरि प्रत्येक जिलामे वा ओकर लगीच कम-सँ-कम एकटा पैघ बहु-विषयक उच्चतर शिक्षा संस्थान (एचईआई) होएत। श्रेष्ठ गुणवत्तापूर्ण उच्चतर संस्थान सार्वजनिक आ निजी यूएनयू केँ विकसित करबाक दिशा मे ठोस डेग उठाओल जाएत, जेकर निर्देशक माध्यम स्थानीय/भारतीय भाषा या द्विभाषिक होएत। एकर उद्देश्य सकल नामांकन अनुपात के 2018 मे 26.3% सँ बढ़ा कए वर्ष 2035 धरि 50% करबाक होएत। यद्यपि, एहि लक्ष्यकेँ प्राप्त करबाक लेल कतेको नव संस्थानक विकास कएल जा सकैत अछि, मुदा क्षमता निर्माणकेँ एकटा पैघ भाग मौजूद एचईआई केर समेकित महत्वपूर्ण रूपसँ विस्तारित आ बेसी नीक बनबाक माध्यमसँ प्राप्त कएल जाएत।

10.9. पैघ संख्यामे उत्कृष्ट सार्वजनिक संस्थानक विकासमे जोर देबाक संग, सार्वजनिक आ निजी दुनू संस्थानक विकास होएत। सार्वजनिक उच्चतर शिक्षा संस्थान (एचईआई) केर लेल सार्वजनिक वित्त पोषण सहायताक स्तर केँ बढ़एबाक लेल एकटा निष्पक्ष आ पारदर्शी प्रणाली होएत। ई प्रणाली सभ सार्वजनिक संस्थानक विकासक लेल समान अवसर देत। ई प्रत्यायन प्रणाली, प्रत्यायन नियम जेना पारदर्शिता आ पूर्व-प्रचारित मानदंड पर आधारित होएत। एहि नीतिक नियमक अनुसार जे उच्चतर शिक्षा संस्थान (एचईआई) श्रेष्ठतम प्रदर्शन करत, ओकरा सभकेँ अपन क्षमताक विस्तार क' कए प्रोत्साहित कएल जाएत।

10.10. संस्थान केर अपन कार्यक्रमक सीट, पहुँच आ सकल नामांकन अनुपात बढ़एबाक लेल आ जीवनपर्यंत सीखबाक अवसरकेँ प्रदान करेबाक (एसडीजी 4) लेल मुक्त दूरस्थ शिक्षा आ ऑनलाइन कोर्स केँ संचालित करबाक अवसर होएत, बस ई शर्त होएत जे हुनका एना करबाक लेल मान्यता प्राप्त हो। सभ मुक्त दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (आ ओकर घटक) केँ कोनो डिप्लोमा या डिग्री केर मानक आ गुणवत्ता, एचईआई कए परिसर मे संचालित उच्चतम-गुणवत्ता बला कार्यक्रमक समतुल्य होएत। ओडीएल केर लेल मान्यता प्राप्त उत्कृष्ट संस्थानक उच्चतर-गुणवत्ता बला ऑनलाइन कोर्स विकसित करबाक लेल प्रोत्साहित कएल जाएत आ हुनक सहायता कएल जाएत। एहन गुणवत्ता बला ऑनलाइन कोर्सकेँ एचईआई केर पाठ्यक्रमक संग समन्वित कएल जाएत आ एहि प्रकारेँ पाठ्यक्रमक मिश्रित स्वरूपकेँ वरीयता देल जाएत।

10.11. एकहि स्ट्रीम बला संस्थान(एचईआई) केँ समयक संग जीवंत बहु-विषयक संस्थान या बहु-विषयक एचईआई समूह केर अंगक रूपमे चरणबद्ध तरीकासँ परिवर्तित कएल जाएत जेकरा उच्चतर गुणवत्ता बहु-विषयक आ अंतर-विषयक शिक्षण आ अनुसंधानक लेल सक्षम आ प्रोत्साहित कएल जाएत। एक स्ट्रीम बला एचईआईमे विभिन्न विषयक संकायकेँ जोडल जाएत जेकरासँ ओ सुदृढ़ होएत। उपयुक्त प्रत्यायन उपलब्धिक माध्यमसँ, सभ संस्थान (एचईआई) धीरे- धीरे पूर्ण -अकादमिक आ प्रशासनिक स्वायत्तताक दिस बढ़त जाहिसँ एहन जीवंत संस्कृतिक निर्माण होइक। सार्वजनिक संस्थानक स्वायत्तता केर पर्याप्त सार्वजनिक वित्त सहायतासँ स्थायित्व आ ताकत भेटत। निजी संस्थान जे सार्वजनिक हितक लेल उच्चतर गुणवत्ता, समतापूर्ण शिक्षा केर लेल प्रतिबद्ध अछि ओकरा प्रोत्साहित कएल जाएत।

10.12. एहि नीति द्वारा कल्पित नव विनियामक प्रणाली एहि संस्कृति केर सशक्तिकरण आ स्वायत्तताक दिस नवाचारकेँ प्रोत्साहन देत आ वर्गीकृत स्वायत्तताक प्रणालीसँ एकरा एकटा चुनौतीक रूपसँ लेत। आ 15 वर्षक अंतरालमे धीरे-धीरे चरणबद्ध तरीका सँ सम्बद्ध (अफ्लिएटेड) महाविद्यालयक प्रणालीकेँ समाप्त करत। प्रत्येक सम्बद्ध विश्वविद्यालय अपन सम्बद्ध महाविद्यालयक लेल उत्तरदायी होएत जाहिसँ ओ अपन क्षमताकेँ विकसित क' सकए एवं अकादमिक आ पाठ्यक्रम सम्बन्धी मामिलामे न्यूनतम मानदंड; शिक्षण आ मूल्यांकन; शासन सुधार; वित्तीय ताकत; आ प्रशासनिक दक्षता केँ प्राप्त कए सकए। वर्तमानमे विश्वविद्यालयसँ सम्बद्ध सभ महाविद्यालय प्रत्यायन करबाक आ स्वायत्त डिग्री दइ बला महाविद्यालय बनएबाक लेल निर्धारित स्तर एक समय-अवधिमे

प्राप्त करता। एकरा उचित सलाह आ सरकारक सहयोग सहित एकटा संयुक्त राष्ट्रीय प्रयासक माध्यम सँ प्राप्त कएल जाएत।

10.13. समूचा उच्चतर शिक्षा क्षेत्रक लक्ष्य एकटा एकीकृत उच्चतर शिक्षा प्रणाली बनएबाक होइत-जाहिमे व्यावसायिक आ पेशेवर शिक्षा सम्मिलित अछि। ई नीति आ एकर दृष्टिकोण वर्तमानमे एचईआई स्ट्रीम पर समान रूपसँ लागू होएत जे अंततः उच्चतर शिक्षाकेँ एकटा अनुकूल पारिस्थितिकीमे विलय भ' जाएत।

10.14. वैश्विक स्तर पर विश्वविद्यालय केर अर्थ अछि, उच्चतर शिक्षाक एकटा बहु-विषयक संस्थान जे स्नातक, स्नातकोत्तर, आ पीएच-डी कार्यक्रम चलबैत अछि आ उच्चतर गुणवत्ता बला शिक्षण आ अनुसन्धान करैत अछि। आब देशमे एचईआई केँ जटिल नामकरण 'समवत विश्वविद्यालय' 'सम्बद्ध विश्वविद्यालय', 'सम्बद्ध तकनीकी विश्वविद्यालय' 'एकात्मक विश्वविद्यालय' अछि जेकरा मानकक अनुसार मानदंड पूरा करबा पर केवल 'विश्वविद्यालय' नाम सँ प्रतिस्थापित कएल जाएत।

11. समग्र आ बहु-विषयक शिक्षाक दिस

11.1. भारतमे समग्र एवं बहु- विषयक तरीकासँ सीखबाक एकटा प्राचीन परम्परा अछि, तक्षशिला आ नालंदा सन विश्वविद्यालयसँ ल' कए एहन कतेको व्यापक साहित्य अछि, जे विभिन्न क्षेत्रमे विषय सभक संयोजनकेँ प्रकट करैत अछि। प्राचीन भारतीय साहित्य जेना बाणभट्ट केर *कादंबरी* शिक्षाक 64 कलाक ज्ञानक रूपमे परिभाषित/वर्णित करैत अछि, आ एहि 64 कलामे ने केवल गायन आ चित्रकला सन विषय सम्मिलित अछि, अपितु वैज्ञानिक क्षेत्र जेना रसायनशास्त्र आ गणित, व्यावसायिक क्षेत्र जेना बढई केर काज आ कपडा सीबाक काज, पेशेवर काज जेना औषधि तथा अभियांत्रिकी आ संगे- संग संप्रेषण, चर्चा आ वाद- संवाद करबाक व्यावहारिक कौशल (सॉफ्ट स्किल्स) सेहो सम्मिलित अछि। ई विचार जे मानवीय सृजनक सभ क्षेत्र, जेना गणित, विज्ञान, पेशेवर आ व्यावसायिक विषय आ व्यावहारिक कौशल सम्मिलित अछि, केँ 'कला' केर रूपमे देखल जेबाक चाही, भारतीय चिंतनक देन अछि। विभिन्न 'कला सभक ज्ञानक एहि विचार, वा जेना कि आधुनिक युगमे जेकरा 'लिबरल आर्ट्स' (कला सभकेँ एकटा उदार दृष्टिकोण) कहल जाइत अछि, केर भारतीय शिक्षामे पुनः सम्मिलित करबाक होएत, किएक तँ ई वएह शिक्षा थिक जेकर एकैसम शताब्दीमे आवश्यकता होएत।

11.2. आकलनसँ ई पता चलैत अछि कि, स्नातक शिक्षाक समय, एहि शैक्षणिक पद्धति सभ जे एसटीईएम (विज्ञान, तकनीकी, अभियांत्रिकी, आ गणित) केर संग मानविकी आ कला शिक्षाकेँ समाहित करैत अछि, त' रचनात्मकता आ नवाचार, आलोचनात्मक चिंतन एवं उच्चतर स्तरीय चिंतनक क्षमता, समस्या समाधान योग्यता, समूह कार्यमे दक्षता, संचार कौशल, सीखबा मे बेसी गहनता आ पाठ्यक्रमकेँ सभ विषय सभ पर पकड़, सामाजिक आ नैतिकताक प्रति जागरूकता आदि जेना सकारात्मक शैक्षणिक परिणाम प्राप्त भेल अछि। समग्र आ बहु-विषयक शिक्षा दृष्टिकोणक माध्यमसँ अनुसन्धानमे सुधार आ बढोतरी सहो भेल अछि।

11.3. एकटा समग्र आ बहु-विषयक शिक्षाक उद्देश्य मनुष्यक सभ क्षमता-बौद्धिक, सौंदर्यात्मक, सामाजिक, शारीरिक, भावात्मक तथा नैतिक- केर एकीकृत तरीकासँ विकसित करब होएत। एहन शिक्षा व्यक्तिक सर्वांगीण विकास: कला, मानविकी, भाषा, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, आ व्यावसायिक, तकनीकी आ व्यावसायिक क्षेत्रमे महत्वपूर्ण एकैसम सदीक क्षमता; सामाजिक जुडाव आ नैतिकता; व्यावहारिक कौशल (सॉफ्ट स्किल्स): जेना सम्प्रेषण, चर्चा, वाद- विवाद; आ एकटा चुनल क्षेत्र या क्षेत्र सभमे नीक विशेषज्ञतामे मदति करत। एहि प्रकारक एकटा समग्र शिक्षा, दीर्घ समय धरि व्यावसायिक, तकनीकी आ पेशेवर विषय सभ सहित सभ स्नातक कार्यक्रमक दृष्टिकोण होएत।

11.4. एकटा समग्र आ बहु-विषयक शिक्षा जे कि भारतक इतिहासमे सुन्दर ढंगसँ वर्णित कएल गेल अछि, वास्तवमे आजुक भारतक शिक्षणकेँ आवश्यकता अछि, जाहिसँ ई देश एकैसम शताब्दी आ चारिम औद्योगिक

क्रांतिक नेतृत्व कए सकए। एत' धरि कि अभियांत्रिक संस्थान जेना आईआईटी, कला आ मानविकीक संग समग्र आ बहु-विषयक शिक्षाक दिस बढ़त। कला आ मानविकी केर छात्रक लक्ष्य बेसी विज्ञान सीखबाक रहतैक, आ सभक प्रयास इएह होएत जे बेसी व्यावसायिक विषय आ व्यावहारिक कौशल (सॉफ्ट स्किल्स) केर समन्वय हो।

11.5. कल्पनाशील आ लोचदार पाठ्यक्रम संरचना अध्ययनक लेल विषयक रचनात्मक संयोजन केँ सक्षम करत, आ कतेको प्रवेश आ निकास बिंदुक विकल्प होएत, एहि प्रकारसँ, एखनुक कठोर अनुसाशनात्मक सीमाकेँ हटा कए आजीवन सीखबाक नव संभावना केर प्रोत्साहन भेटतैक। पैघ बहु-विषयक विश्वविद्यालयमे स्नातक स्तर, स्नातकोत्तर आ डॉक्टरेट शिक्षा, कठोर अनुसन्धान-आधारित विशेषज्ञता प्रदान करबाक संगे-संग अकादमिक (शिक्षा जगत) सरकार आ उद्योग सहित, बहु-विषयक काज केर अवसर सेहो प्रदान करत।

11.6. पैघ बहु- विषयक विश्वविद्यालय आ महाविद्यालयमे उच्चतर-गुणवत्ता केर समग्र आ बहु-विषयक शिक्षा दिस डेग बढ़ाओल जाएत। विषयमे कठोर विशेषज्ञताक अतिरिक्त, छात्रकेँ पाठ्यचर्या मे लोच रहत, आ नव आ रोचक पाठ्यक्रम केर विकल्प देल जाएत। पाठ्यक्रम निर्धारित करबाकमे संकाय आ संस्थागत स्वायत्तता द्वारा एकरा प्रोत्साहित कएल जाएत। शिक्षाशास्त्रमे संचार, चर्चा, बहस, अनुसन्धान आ परा-विषयक आ अन्तःविषयक सोचक अवसर पर बेसी जोर देल जाएत।

11.7. देशक विभिन्न उच्चतर शिक्षा संस्थान (एचईआई) मे भाषा, साहित्य, संगीत, दर्शन, भारत-विद्या, कला, नृत्य, नाट्यकला, गणित, सांख्यिकी, सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक विज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, खेल, अनुवाद एवं व्याख्या आ अन्य एहन विषय केँ विभागक बहु- विषयक, भारतीय शिक्षा आ वातावरणकेँ प्रोत्साहित करबाक लेल स्थापित आ मजबूत कएल जाएत। स्नातक उपाधि कार्यक्रममे एहि विषयमे सभमे क्रेडिट देल जाएत जेँ ओ एहन विभागसँ या ओडीएल मोडक माध्यमसँ कएल जाइत अछि, जखन ओकरा एचईआई केर कक्षामे उपलब्ध नहि कराओल जाइत अछि।

11.8. एहन समग्र आ बहु-विषयक शिक्षाक प्राप्ति लेल सभ एचईआई केर लोचदार आ नवीन पाठ्यक्रममे क्रेडिट-आधारित आ सामुदायिक जुड़ाव आ सेवा, पर्यावरण शिक्षा आ मूल्य-आधारित शिक्षा के क्षेत्र सम्मिलित होएत। पर्यावरण शिक्षामे जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, अपशिष्ट प्रबंधन, स्वच्छता, जैविक विविधता केर संरक्षण, जैविक संसाधनकेँ प्रबंधन आ जैव विविधता, वन आ वन्यजीव संरक्षण आ सतत विकास आ जीवन सन क्षेत्र सम्मिलित होएत। मूल्य आधारित शिक्षामे निम्न सम्मिलित होएत: मानवीय, नैतिक, संवैधानिक आ सार्वभौमिक मानवीय मूल्य जेना सत्य, सही आचरण (धर्म) शांति, प्रेम, अहिंसा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नागरिक मूल्य आ जीवन- कौशल; सेवा तथा सामुदायिक कार्यक्रममे सहभागिता समग्र शिक्षाक अभिन्न अंग होएत। जेना-जेना दुनिया तेजीसँ एक दोसरसँ जुड़ल जा रहल अछि, वैश्विक नागरिकता शिक्षा (जीसीईडी) समकालीन वैश्विक चुनौती के प्रतिक्रिया, शिक्षार्थी सभ के वैश्विक मुद्दा के बुझब आ बेसी शांतिपूर्ण, सहिष्णु, समावेशी, सुरक्षित, आ सतत समाजक सक्रिय प्रवर्तक बनएबाक लेल प्रदान कएल जाएत। अन्ततः समग्र शिक्षाक अंतर्गत, उच्चतर शिक्षा संस्थान अपनहि संस्थानमे वा अन्य उच्चतर शिक्षा/शोध संस्थानमे इंटरनशिप केर अवसर उपलब्ध कराओत, जेना -स्थानीय उद्योग, व्यवसाय, कलाकार, शिल्पकार, आदिकेँ संग इंटरनशिप आ शिक्षक सभ आ शोधार्थीक संग, शोध इंटरनशिप जाहिसँ छात्र सक्रिय रूपसँ सीखबाक व्यावहारिक पक्षक संग जुड़ाए आ संगे- संग स्वयं केर रोजगारक सम्भावनाकेँ सेहो बढ़ा सकए।

11.9. डिग्री कार्यक्रमक अवधि आ संरचनामे तदनुसार बदलाव कएल जाएत। स्नातक उपाधि 3 वा 4 वर्षक होएत, जाहिमे उपयुक्त प्रमाणपत्रक संग निकास केर बहुत रास विकल्प होएत, उदाहरणक रूपमे, व्यावसायिक तथा पेशेवर क्षेत्र सहित कोनो विषय अथवा क्षेत्र मे 1 साल पूरा कयला पर सर्टिफिकेट या 2 साल पूरा करबा पर डिप्लोमा या 3 सालक कार्यक्रमक बाद स्नातकक डिग्री। 4 वर्षीय स्नातक कार्यक्रम, जाहिमे बहु-विषयक शिक्षाकेँ प्रोत्साहन देल जाएत, किएक त' ओकर बीच ई विद्यार्थीक अभिरुचि अनुसार चुनल मुख्य आ वैकल्पिक पर ध्यान केंद्रित करबाक अतिरिक्त समग्र तथा बहु-विषयक शिक्षाक अनुभव लेबाक अवसर प्रदान करैत अछि। एकटा

अकादमिक क्रेडिट बैंक (एबीसी) स्थापित कएल जाएत जे अलग-अलग मान्यता प्राप्त उच्चतर शिक्षण संस्थानसँ प्राप्त क्रेडिटके डिजिटल रूपसँ संकलित करत जाहि सँ प्राप्त क्रेडिटके आधार पर उच्चतर शिक्षण संस्थान द्वारा डिग्री देल जा सकए। जँ छात्र एचईआई द्वारा निर्दिष्ट अध्ययन के अपन प्रमुख क्षेत्र (क्षेत्र सभ) मे एकटा कठोर शोध परियोजना केँ पूरा करैत अछि त' ओकरा 4 वर्षीय कार्यक्रम मे 'शोध सहित' डिग्री सेहो देल जा सकैत छैक।

11.10. उच्चतर शिक्षण संस्थान (एचईआई) केँ विभिन्न प्रारूपमे स्नातकोत्तर कार्यक्रमकेँ उपलब्ध करबाक छूट होइत (क) एहन विद्यार्थीके लेल जे 3 सालक स्नातक कार्यक्रम पूरा कएनए होइ, ओकरा 2 वर्षीय कार्यक्रम प्रदान कएल जा सकैत अछि, जेकर दोसर वर्ष पूर्ण रूपसँ शोध पर केंद्रित हो। (ख) ओ विद्यार्थी जे 4 वर्षक स्नातक कार्यक्रम शोधकेँ संग पूरा कएनए हो, हुनका लेल एक वर्षक स्नातकोत्तर कार्यक्रम भ' सकैत छैक। (ग) 5 वर्षकेँ एकटा एकीकृत स्नातक/स्नातकोत्तर कार्यक्रम भ' सकैत अछि। पीएच-डी केर लेल या त' स्नातकोत्तर डिग्री या 4 सालक शोधक संग प्राप्त स्नातक डिग्री अनिवार्य होएत। एम. फिल कार्यक्रमकेँ बंद क' देल जाएत।

11.11. समग्र आ बहु-विषयक शिक्षाक लेल आईआईटी, आईआईएम आदि केर तर्ज पर, मेरु (बहु-विषयक, शिक्षा आ शोध विश्वविद्यालय) नामक आदर्श सार्वजनिक विश्वविद्यालयक स्थापना कएल जाएत जेकर उद्देश्य, गुणवत्तापूर्ण शिक्षामे उच्चतम वैश्विक मानक के अर्जित करब होएत। ई देश भरिमे बहु-विषयक शिक्षाकेँ उच्चतम स्तर पर करत।

11.12. उच्चतर शिक्षण संस्थान स्टार्ट-उप, ऊष्मायन केंद्र, प्रौद्योगिकी विकास केंद्र, अनुसन्धानक प्रमुख क्षेत्रक केन्द्र, अधिकतम उद्योग-अकादमिक जुड़ाव, आ मानविकी आ सामाजिक विज्ञान अनुसन्धान सहित अंतर-विषय अनुसंधान केर स्थापना क' कए अनुसन्धान आ नवाचार पर ध्यान केंद्रित करत। संक्रामक रोग आ वैश्विक महामारीक परिदृश्य केँ देखैत, ई महत्वपूर्ण अछि कि उच्चतर-शैक्षणिक संस्थान, संक्रामक रोग, महामारी विज्ञान, वायरोलॉजी, डायग्नोस्टिक्स, इंस्ट्रुमेंटेशन, वेक्सीनॉलजी आ अन्य प्रासंगिक क्षेत्रमे अनुसन्धान करबाक नेतृत्व करए। छात्र समुदायक बीच नवाचार के प्रोत्साहन देबाक लेल उच्चतर शिक्षण संस्थान विशिष्ट हेडहोल्डिंग तंत्र विकसित करत। एनआरएफ, उच्चतर शिक्षण संस्थान अनुसंधान प्रयोगशाला आ अन्य अनुसंधान संगठनमे एहि तरहक एकटा जीवंत अनुसंधान आ नवाचार संस्कृतिकेँ सक्षम करब आ समर्थन करबा मे मदति करबाक लेल काज करत।

12. सीखबाक लेल अनुकूल वातावरण आ छात्रकेँ सहयोग

12.1. प्रभावी ढंगसँ सीखबाक लेल एकटा व्यापक दृष्टिकोणक आवश्यकता होइत अछि जाहिमे उपयुक्त पाठ्यक्रम, आकर्षक शिक्षण, निरंतर निर्माणात्मक मूल्यांकन आ छात्रकेँ पर्याप्त सहयोग सम्मिलित अछि। पाठ्यक्रम रोचक आ प्रासंगिक हेबाक चाही जेकरा समय-समय पर अद्यतन करैत रहबाक चाही जाहिसँ ज्ञानक नवीन आवश्यकता आ सीखबाक निर्दिष्ट प्रतिफल केँ प्राप्त कएल जा सकए। उच्चतर गुणवत्ता बला शिक्षण-विद्या छात्र धरि पाठ्यक्रम सामग्री केँ सफलतापूर्वक ल' जेबाक लेल आवश्यक अछि, शैक्षणिक प्रथासँ छात्रकेँ उपलब्ध सीखबाक अनुभव निर्धारित होएत अछि आ ओहिसँ सीधा सीखबाक प्रतिफल पर प्रभाव होइत अछि। आकलन केर तरीका वैज्ञानिक हेबाक चाही जे कि सीखबा मे लगातार सुधार व ज्ञानकेँ प्रयोगक परीक्षण केर लेल बनल हेबाक चाही। अंतमे किछु एहन क्षमता जे छात्रकेँ बेसी नीक बनएबाक लेल आवश्यक अछि जेना- आरोग्य, नीक स्वास्थ्य, मनो-सामाजिक कल्याण, बेसी नीक नैतिक मूल्यक आधार आदि केर विकास सहो गुणवत्तापूर्ण अधिगमक लेल महत्वपूर्ण अछि।

अतः पाठ्यक्रम, शिक्षण शास्त्र, निरंतर मूल्यांकन आ छात्रक मदति गुणवत्तापूर्ण ढंगसँ सीखबाक आधारशिला अछि। ई सभ उपयुक्त संशाधन आ बुनियादी ढाँचा जेना उत्तम पुस्तकालय, कक्षा -कक्ष, प्रयोगशाला सभ, प्रौद्योगिकी, खेल/मनोरंजनक स्थान, छात्रक संवाद हेतु स्थान, आ भोजनक लेल स्थान आदि प्रदान करबाक संगे-संग एहि मामिला पर बहुत रास प्रयास करबाक आवश्यकता होएत जेकरासँ सीखबाक वातावरण आकर्षक आ सहायक बनाओल जा सकए आ सभ छात्र केँ सफल हेबाक लेल सक्षम बनाओल जा सकए।

12.2. पहिल, उच्चतर शिक्षाक व्यापक ढाँचामे रचनात्मकताकें बढावा देबाक लेल संस्थान आ संकाय केर पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि आ आकलन आदि पर नवाचार करबाक स्वायत्तता देल जाएत, जे कि सभ संस्थान, कार्यक्रम आ मुक्त दूरस्थ शिक्षा (ओडीएल) ऑनलाइन, आ पारम्परिक कक्षा-कक्ष शिक्षण मे समान रूपसँ निरन्तरता सुनिश्चित करैत अछि। छात्रकें एकटा बेसी नीक आकर्षक शिक्षण अनुभव देबाक लेल संस्थान आ प्रेरित संकाय सभ द्वारा एकर अनुरूप पाठ्यक्रम आ शिक्षण-विधा रचल जाएत आ प्रत्येक कार्यक्रमकें ओकर लक्ष्य धरि पहुँचएबाक लेल निर्माणात्मक आकलन केर उपयोग कएल जाएत। उच्चतर शिक्षण संस्थान द्वारा सभ मूल्यांकन प्रणाली सेहो तय कएल जाएत, जाहिमे अंतिम रूपसँ प्रमाणन सेहो सम्मिलित अछि। नवाचार आ लोच आनबाक लेल विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (सीबीसीएस) कें संशोधित कएल जाएत। उच्चतर शिक्षण संस्थान एकटा मानदंड-आधारित ग्रेडिंग प्रणाली केर निर्माण करत, जे प्रत्येक कार्यक्रमक लेल सीखबाक लक्ष्यक आधार पर छात्रकें उपलब्धि केर आकलन करत, जेकरासँ प्रणाली निष्पक्ष बनत आ परिणाम बेसी तुलनीय होएत। उच्चतर शिक्षण संस्थान सेहो बेसी-महत्वपूर्ण परीक्षा सभसँ आ बेसी सतत आ व्यापक मूल्यांकनक दिस बढत।

12.3. दोसर, प्रत्येक संस्थान अपन संस्थागत विकास योजना (आईडीपी) मे शैक्षणिक योजना सभकें पाठ्यक्रम सुधारसँ ल' कए कक्षा-कक्ष केर गुणवत्तापूर्ण आदान- प्रदान केर एकीकृत करत। प्रत्येक संस्थान छात्रक समग्र विकासक लेल प्रतिबद्ध रहत, एकरा लेल एकटा एहन आन्तरिक प्रणाली बनाओल जाएत जे विविध प्रकारक छात्र समूह केर शैक्षणिक आ सामाजिक क्षेत्रमे सहयोग करत। एहि लेल कक्षाक भीतर आ बाहर औपचारिक अकादमिक वार्ता सुनिश्चित कएल जाएत। उदाहरणक लेल सभ उच्चतर शिक्षण संस्थानमे छात्र द्वारा संकाय आ आन विशेषज्ञक मदति सँ विषय आधारित क्लब आ गतिविधि जेना कि विज्ञान, कविता, भाषा, साहित्य, वाद-विवाद, संगीत, खेल, आदि केर लेल समर्पित क्लब ओ कार्यक्रमक आयोजनक लेल अवसर ओ वित्तक व्यवस्था होएत। समयक संग-संग जखन एहि गतिविधि सभक लेल छात्रक मांग आ संकाय केर दक्षता पूर्ण भ' जाएत त' एकरा पाठ्यक्रममे सम्मिलित कएल जा सकैत अछि। संकायमे एहि स्तरक प्रशिक्षण आ क्षमता होएत जे ओ नहि केवल शिक्षककें रूपमे अपितु संरक्षक व मार्गदर्शकक रूपमे छात्रकें संग जुड़ि सकथि।

12.4. तेसर, सामाजिक आर्थिक रूपसँ वंचित पृष्ठभूमिक छात्रक उच्चतर शिक्षा धरि सफलतापूर्वक पहुँचएबाक लेल विशेष प्रोत्साहन आ सहायताक आवश्यकता होएत अछि। एकरा लेल विश्वविद्यालय आ महाविद्यालयकें उच्चतर गुणवत्ता बला सहायता केंद्र स्थापित करबाक आवश्यकता होएत आ एकरा प्रभावी ढंगसँ पूर्ण करबाक लेल हुनका पर्याप्त धन आ शैक्षणिक संसाधन देल जाएत। सभ छात्रक लेल व्यावसायिक अकादमिक आ आजीविका परामर्श उपलब्ध होएत, संगे-संग हुनक शारीरिक, मानसिक आ भावात्मक कल्याणकें सुनिश्चित करबाक लेल सेहो परामर्शदाता होएत।

12.5. चारिम, ओडीएल आ ऑनलाइन शिक्षा गुणवत्तापूर्ण उच्चतर शिक्षा धरि पहुँच सुनिश्चित करबाक लेल एकटा प्राकृतिक मार्ग प्रदान करैत अछि। एकर पूरा क्षमताक लाभ लेबाक लेल ओडीएल केर विस्तारक दिशामे ठोस, साक्ष्य-आधारित प्रयासक माध्यमसँ नवीनीकृत कएल जाएत, संगहि एकरा लेल निर्धारित स्पष्ट मानक केर पालन सुनिश्चित कएल जाएत। ओडीएल कार्यक्रम उच्चतर-गुणवत्ता बला कक्षा-कक्ष कार्यक्रमकें बराबर होएबाक लक्ष्य राखत। ओडीएलक प्रणालीगत विकास, विनियमन आ मान्यताक लेल, मानदंड, मानक आ दिशानिर्देश तैयार कएल जाएत आ ओडीएलक गुणवत्ताक लेल एकटा रूपरेखा तैयार कएल जाएत, जे सभ उच्चतर शैक्षणिक संस्थानक लेल अनुशंसित कएल जाएत।

12.6. अंतमे सभटा कार्यक्रम, पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्या, विषयमे शिक्षण विधि, कक्षा-कक्ष, ऑनलाइन, ओडीएल आ छात्रकें समर्थन सन कार्यक्रमक लक्ष्य होएत जे ओ वैश्विक मानककें प्राप्त कए सकए।

अंतर्राष्ट्रीयकरण

12.7. उपरोक्त वर्णित विभिन्न प्रयाससँ भारतमे पढ़ए बला अंतर्राष्ट्रीय छात्र सभक संख्या बढत आ ई भारतमे रहि रहल ओ सभ छात्र केर एहन आर गतिशीलता प्रदान करत जे विदेशी संस्थानमे शोध करबाक लेल, क्रेडिट

स्थानांतरित करबाक लेल, या एकर बाहर शोध करबाक इच्छा राखैत छथि आ एकर उलट सेहो होएत। इंडोलोजी, भारतीय भाषा सभ, आयुष चिकित्सा पद्धति, संगीत, इतिहास, संस्कृति, आ आधुनिक भारत सन विषयमे पाठ्यक्रम आ कार्यक्रम, विज्ञान, सामाजिक जुड़ावमे गुणवत्ता आधारित आवासीय सुविधा, कैंपस मे सीखबाक लेल सार्थक अवसर आदि केर वैश्विक गुणवत्ता मानकक लक्ष्य केँ प्राप्त करबाक दिस विकसित कएल जाएत। संगहि अंतर्राष्ट्रीय छात्रकेँ बेसी संख्याकेँ आकर्षित करब आ 'देशमे अन्तर्राष्ट्रीयकरण' केर लक्ष्य केँ प्राप्त करबाक लेल प्रोत्साहन देल जाएत।

12.8. भारतक वहनीय लागत पर उच्चतर शिक्षा प्रदान करए बला वैश्विक अध्ययन केर गंतव्यक रूपमे प्रोत्साहन देल जाएत, जाहिसँ विश्व गुरुक रूपमे अपन भूमिका केँ स्थापित करबामे मदति भेटतैक। विदेशसँ आबए बला छात्रक स्वागत आ समर्थनसँ सम्बंधित सभ मामलकेँ समन्वित करबाक लेल विदेशी छात्रके आतिथ्य करए बला प्रत्येक उच्चतर शिक्षा संस्थानमे एकटा अंतर्राष्ट्रीय छात्र कार्यालय स्थापित कएल जाएत। उच्चतर गुणवत्ता बला विदेशी संस्थानक संग अनुसन्धान/शिक्षण सहयोग आ संकाय/छात्र आदान-प्रदान केर सुविधाकेँ बढ़ाओल जाएत संगे विदेशक संग प्रासंगिक पारस्परिक रूपसँ लाभप्रद एमओयू पर हस्ताक्षर कएल जाएत। उच्चतर प्रदर्शन करए बला भारतीय विश्वविद्यालयकेँ आन देशमे परिसर स्थापित करबाक लेल प्रोत्साहन देल जाएत, आ ओहिना विदेशक चुनिंदा विश्वविद्यालय, जेना दुनियाक शीर्ष 100 विश्वविद्यालय, केर भारतमे संचालित करबाक अनुमति देल जाएत। एहि तरहक सुविधाकेँ सुनिश्चित करबाक लेल एकटा वैधानिक आधारभूत विकसित कएल जाएत आ एहन विश्वविद्यालयक लेल भारतक अन्य स्वायत्त संस्थानक तुलनामे नियम, शासन आ मानदंडक स्तर पर उदारता देखाओल जाएत। एकर अतिरिक्त, भारतीय संस्थान आ वैश्विक संस्थानक बीच अनुसन्धान सहयोग आ छात्रक आदान-प्रदान केँ विशेष प्रयासक माध्यमसँ प्रोत्साहन देल जाएत। विदेशी विश्वविद्यालयमे अर्जित कएल गेल क्रेडिट एतय मान्य होएत, आ जँ ओ ओहि उच्चतर शिक्षण संस्थानक आवश्यकताक अनुसार अछि त' ओकरा डिग्री प्रदान करबाक लेल सेहो स्वीकार कएल जाएत।

छात्रक गतिविधि आ भागीदारी

12.9. छात्र, शिक्षा प्रणालीमे प्रमुख हितधारक अछि। उच्चतर गुणवत्तायुक्त शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाक लेल जीवंत कैंपस आवश्यक अछि। एहि दिशामे छात्र सभकेँ खेल, संस्कृति/कला क्लब, पर्यावरण क्लब, गतिविधि क्लब, सामुदायिक सेवा परियोजना आदिमे सम्मिलित हेबाक लेल पूरा अवसर देल जाएत। प्रत्येक शिक्षा संस्थानमे तनावसँ जुझबाक लेल आ भावात्मक तारतम्यता बनएबाक लेल काउंसलिंग केर व्यवस्था होएत। एकर आलावा, ग्रामीण पृष्ठभूमिक छात्रकेँ अपेक्षित सहायता प्रदान करबाक लेल एकटा बेसी नीक व्यवस्था बनाओल जाएत, जाहिमे आवश्यकतानुसार छात्रावासक सुविधा सभ बढ़ायब सम्मिलित अछि। सभ उच्चतर शिक्षण संस्थान अपन संस्थानमे छात्र केर लेल गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सुविधा सुनिश्चित करत।

छात्रक लेल वित्तीय सहायता

12.10. छात्रकेँ विभिन्न उपायक माध्यमसँ वित्तीय सहायता उपलब्ध कएल जाएत। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग आ बेसी कमजोर वर्गक अन्य छात्रकेँ योग्यताक प्रोत्साहित करबाक प्रयास कएल जाएत। एहन छात्रक प्रगति केर बढ़एबाक लेल, प्रोत्साहन लेल आ नजरि राखबाक लेल राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल केर विस्तार कएल जाएत। निजी उच्चतर शिक्षण संस्थान छात्रकेँ महत्वपूर्ण संख्यामे निःशुल्कता आ छात्रवृत्ति लेबाक लेल प्रोत्साहित कएल जाएत।

13. अभिप्रेरित, सक्रिय आ सक्षम संकाय

13.1. उच्चतर शिक्षण संस्थानक सफलताक सभसँ महत्वपूर्ण कारण एतय कार्यरत संकाय सदस्यक गुणवत्ता आ संलग्नता अछि। उच्चतर शिक्षासँ जुड़ल लक्ष्यकेँ हासिल करबामे संकाय सदस्यक महत्वपूर्ण भूमिकाक ध्यान राखैत, हुनक भर्ती प्रक्रियामे पछिला बहुत वर्षमे किछु महत्वपूर्ण डेग उठाओल गेल छल जाहिसँ भर्ती आ सेवा कालक

दौरान कार्यस्थलमे आगू बढ़वाक अवसरकेँ व्यवस्थित कएल जाए, आ संकाय सदस्यक भर्ती प्रक्रियामे विभिन्न समूहक दिससँ न्यायसंगत प्रतिनिधित्व केर सुनिश्चित कएल जाए। सार्वजनिक संस्थानक स्थायी संकाय सदस्य सभक वेतन भत्ताक स्तरमे पर्याप्त वृद्धि कएल गेल अछि। संकाय सदस्य सभक व्यावसायिक विकाससँ सम्बंधित विभिन्न अवसरकेँ सुनिश्चित करबाक दिशामे सेहो बहुत रास डेग उठाओल गेल अछि। यद्यपि, अकादमिक पेशा केर प्रतिष्ठामे विभिन्न सुधार सभक बावजूद शिक्षण, शोध आ सेवाक मामिलामे उच्च शिक्षा संस्थान सभमे संकाय सभक उत्साह वांछित स्तरसँ कम होइत अछि। संकाय सदस्य सभमे प्रेरणा आ उत्साहक कमीसँ सम्बंधित कारण सभकेँ सम्बोधित कएल जेबाक चाही जाहिसँ कि ई सुनिश्चित कएल जा सकए कि प्रत्येक संकाय सदस्य अपन छात्र, संस्थान आ पेशामे प्रगतिक लेल प्रसन्न, उत्साहित आ जुड़ल रहए। एहि मामिलामे, उच्चतर शिक्षण संस्थानमे सर्वोत्कृष्ट, प्रेरित, आ सक्षम संकाय सदस्य सभकेँ सुनिश्चित करबाक लेल ई नीति अपन दिस सँ निम्न पहल केर अनुशंसा करैत अछि।

13.2. सभसँ मूलभूत पहल सभक रूपमे सभ उच्चतर शिक्षण संस्थान स्वच्छ शौचालय, ब्लैकबोर्ड, कार्यालय, शिक्षा सामग्री, पुस्तकालय, प्रयोगशाला आ सुखद कक्षा वातावरण आ परिसर सन आवश्यक मूलभूत ढांचा आ सुविधासँ युक्त होएत। सभ कक्षामे नवीनतम शैक्षणिक प्रौद्योगिकी धरि पहुँच हेबाक चाही जे सीखवाक बेसी नीक अनुभव केर सक्षम बनाबैत अछि।

13.3. शिक्षणक अतिरिक्त बोझ नहि होएत, छात्र-शिक्षक अनुपात सेहो बहुत बेसी नहि होएत, जाहिसँ शिक्षण प्रक्रिया एकटा सुखद गतिविधि बनल रहए, छात्र सभसँ चर्चा करब, शोध करब, आ विश्वविद्यालय सँ जुड़ल आन गतिविधिक लेल पर्याप्त समय भेट सकए। प्रत्येक संकायक नियुक्ति एकल संस्थानमे कएल जाएत आ विभिन्न संस्थानमे हुनक सामान्यतः स्थानांतरण नहि कएल जाएत जाहिसँ कि ओ अपन संस्थान आ ओतय केँ लोकक प्रति सही मायनामे तत्पर, संलग्न आ प्रतिबद्ध अनुभव कए सकए।

13.4. संकाय सदस्यक स्वीकृति मूलभूत आधारकेँ भीतर पाठ्यपुस्तकक चयन आ देल गेल काज आ आकलन केर प्रक्रियाकेँ निर्मित करबाक संग-संग अपन स्वयं केर पाठ्यक्रम सम्बन्धी आ शैक्षणिक प्रक्रियाकेँ रचनात्मक रूपसँ निर्मित करबाक स्वतंत्रता देल जाएत। संकाय सदस्यकेँ हुनक अपन अनुसार श्रेष्ठ रचनात्मक शिक्षण, शोधक लेल प्रेरित आ सशक्त कएल जाएब हुनक उत्कृष्ट आ रचनात्मक काज केँ करबाक सभसँ महत्वपूर्ण प्रेरक होएत।

13.5. उत्कृष्ट काजकेँ उपयुक्त पुरस्कार, पदोन्नति, काजक सराहनाक संग-संग संस्थागत नेतृत्वकर्तामे उचित स्थान सुनिश्चित क' कए प्रोत्साहन देल जाएत। एकरा संगहि ओहि संकाय सदस्यक जवाबदेही सेहो तय कएल जाएत जे निर्धारित मूलभूत मानदण्डक अनुसार काज नहि कए पाबि रहल छथि।

13.6. उत्कृष्टताकेँ प्रोत्साहन देबासँ जुड़ल स्वायत्त संस्थानक लक्ष्यकेँ ध्यान राखैत उच्चतर शिक्षण संस्थानमे संकाय सदस्यक भर्तीसँ सम्बंधित प्रक्रिया आ मानदंड स्पष्ट रूपसँ परिभाषित, स्वतंत्र आ पारदर्शी होएत। वर्तमान नियुक्ति प्रक्रियाकेँ जारी राखैत सेहो उत्कृष्टता केर सुनिश्चित करबाक लेल एकटा 'कार्यकाल ट्रैक' प्रणाली अर्थात् उपयुक्त परिवीक्षा अवधिकेँ जोड़ल जाएत। अत्यंत प्रभावी अनुसन्धान आ योगदानकेँ महत्व प्रदान करबाक लेल एकटा फ्रास्ट-ट्रैक पदोन्नति प्रणाली सुनिश्चित कएल जाएत। काजकेँ उचित मूल्यांकन, 'कार्यकाल' (अर्थात् परिवीक्षाक बाद स्थायी नियुक्ति) निर्धारित, पदोन्नति, वेतनमे वृद्धि, मान्यता आदि सहित सहकर्मि द्वारा समीक्षा, छात्र समीक्षा, शिक्षण आ शिक्षण-शास्त्रमे नवाचार, शोधक गुणवत्ता आ प्रभाव, व्यावसायिक विकाससँ जुड़ल गतिविधि आ संस्थान आ समाजसँ सम्बंधित काजकेँ अन्य विभिन्न रूपसँ आ ओकर प्रभावक उचित आकलनक लेल मापदंड केर समाहित करैत प्रणालीकेँ सभ उच्चतर शिक्षण संस्थान द्वारा विकसित कएल जाएत आ ओकरा संस्थानकेँ संगठन विकास योजना (आईडीपी) मे स्पष्ट रूपसँ निर्दिष्ट कएल जाएत।

13.7. उत्कृष्टता आ नवाचारकेँ प्रोत्साहन प्रदान करए बला उत्कृष्ट आ उत्साही संस्थागत नेतृत्वकर्ता सभक आवश्यकता आजूक समयक मांग अछि। एकटा संस्था आ ओकरा संकाय सदस्यक सफलताकेँ लेल उच्चतर गुणवत्ता युक्त संस्थानिक नेतृत्व के होएब अत्यंत महत्वपूर्ण अछि। उच्चतर अकादमिक आ सेवा प्रत्यय पत्र केर संगे-संग

नेतृत्व आ प्रबंध कौशलक प्रदर्शन करए बला विभिन्न संकाय सदस्यकेँ समय रहैत चिन्हल जाएत, आ फेर हुनका नेतृत्वसँ जुड़ल विभिन्न पदसँ ल' जाइत प्रशिक्षित कएल जाएत। संस्थानमे नेतृत्वसँ जुड़ल पद रिक्त नहि रहत, बल्कि नेतृत्वमे परिवर्तनक दौरान एकटा निश्चित अतिव्यापी समयावधिक प्रावधान सभ संस्थानमे हेबाक चाही, जाहिसँ कि संस्थान सभकेँ सुचारु संचालनकेँ सुनिश्चित कएल जा सकए। संस्थाक नेतृत्वकर्ता एहन उत्कृष्टताक संस्कृति निर्माण केर सभ संकाय सदस्य सभ आ उच्चतर शिक्षण संस्थान सभक नेतृत्वकर्ता सभकेँ उत्कृष्ट आ नवोन्मेषी शिक्षण, शोध, संस्थागत आ सामुदायिक काजकेँ दिस प्रेरित आ उत्साहित करए।

14. उच्चतर शिक्षामे समता आ समावेश

14.1. उच्चतर शिक्षाक अनुभवजन्य क्षेत्रमे प्रवेश एहन अपार सम्भावनाक द्वार खोलि सकैत अछि जे व्यक्ति सभ आ संगे- संग समुदायकेँ सही प्रतिकूल परिस्थिति सभक कुचक्रसँ निकालि सकैत अछि। एहि कारण सभक लेल उच्चतर गुणवत्ता युक्त शिक्षाक अवसर उपलब्ध कराएब हमर सभक सर्वोच्च प्राथमिकता हेबाक चाही। ई नीति एसईडीजी पर विशेष जोर दैत छात्र धरि गुणवत्तापूर्ण शिक्षाक समान पहुँच सुनिश्चित करैत अछि।

14.2. डायनेमिक्स आ शिक्षा प्रणालीसँ एसईडीजीकेँ बाहर भ' गेलासँ जुड़ल बहुत रास कारण सेहो विद्यालयी शिक्षा प्रणाली आ उच्चतर शिक्षा प्रणालीमे समान अछि। एहि लेल, विद्यालयी शिक्षा आ उच्चतर शिक्षाक क्षेत्रमे समानता, आ समावेशसँ जुड़ल दृष्टिकोण एक समान हेबाक चाही। एकर संगे- संग स्थायी सुधार सुनिश्चित करबाक लेल एकरासँ जुड़ल सभ चरणमे निरंतरता हेबाक चाही। अतः उच्चतर शिक्षामे समानता आ समावेशनक लक्ष्यकेँ पूरा करबाक लेल आवश्यक नीतिगत प्रयासकेँ विद्यालयी शिक्षक लेल सेहो देखल जेबाक चाही।

14.3. एहि समूह सभक बाहर भ' गेलासँ जुड़ल कतेको पहलू सभ अछि जे अपने कारण आ प्रभाव दुनू अछि आ उच्चतर शिक्षासँ विशेष रूपसँ जुड़ल अछि। एकरा उच्चतर शिक्षामे विशेष रूपसँ दूर करबाक चाही, आ एकर अंतर्गत उच्चतर शिक्षाकेँ अवसरक जानकारी केर अभाव, उच्चतर शिक्षा ग्रहण करबाक अवधिक समयमे सम्मिलित आर्थिक अवसरकेँ हानि, आर्थिक बाधा, प्रवेश प्रक्रिया, भौगोलिक बाधा, भाषायी अवरोध, बहुत रास उच्चतर शिक्षा कार्यक्रमकेँ सीमित रोजगार क्षमता आ विद्यार्थीक लेल उपयुक्त सहायता तंत्रक कमीसँ जुड़ल चुनौतीकेँ सम्मिलित कएल जेबाक चाही।

14.4. एकर प्रयोजनार्थ, सभ सरकार आ उच्चतर शिक्षण संस्थान द्वारा उच्चतर शिक्षा विशिष्ट अपनाओल जाए बला किछु अतिरिक्त डेग एहि प्रकार अछि:

14.4.1. सरकार द्वारा उठाओल जाए बला डेग:

- क. एसईडीजी केर शिक्षाक लेल समुचित सरकारी निधिक निर्धारण;
- ख. उच्चतर जीईओ तथा एसईडीजी केर लेल स्पष्ट लक्ष्यक निर्धारण;
- ग. उच्चतर शिक्षण संस्थानक प्रवेश प्रक्रियामे लैंगिक-संतुलनकेँ प्रोत्साहन देब;
- घ. विकासक दिस उन्मुख जिलामे उच्च गुणवत्तायुक्त उच्चतर शिक्षण संस्थान बना कए आ पैघ संख्यामे एसईडीजी लेल भेल विशेष शिक्षा क्षेत्र बना कए पहुँच केर सुधारब;
- ङ. उच्चतर गुणवत्ता युक्त एहन उच्चतर शिक्षण संस्थानक विकास आ सहारा देब जे स्थानीय/भारतीय भाषामे वा द्विभाषी रूपसँ शिक्षण कराबए;
- च. सार्वजनिक आ निजी दुनू प्रकारक उच्चतर शिक्षण संस्थानमे एसईडीजीकेँ बेसी वित्तीय सहायता आ छात्रवृद्धि प्रदान करब;
- छ. एसईडीजी केर बीच उच्चतर शिक्षक अवसर आ छात्रवृत्तिसँ जुड़ल जागरूकताक लेल प्रचार प्रसार करब;

ज. बेसी नीक भागीदारी आ सीखबाक परिणामक लेल प्रौद्योगिकीक निर्माण आ विकास;

14.4.2. सभ शिक्षण संस्थान द्वारा उठाओल जाए बला डेग:

क. उच्चतर शिक्षा प्राप्त करबाकसँ जुड़ल लागत आ एहि अवधिमे भेल आर्थिक अवसरक हानि केर कम करब;

ख. सामाजिक आर्थिक रूपसँ वंचित छात्रकेँ बेसी वित्तीय सहायता आ छात्रवृत्ति प्रदान करब;

ग. उच्चतर शिक्षाक अवसर आ छात्रवृत्तिसँ जुड़ल जागरूकताक लेल प्रचार-प्रसार करब;

घ. प्रवेश प्रक्रिया केँ बेसी समावेशी बनायब;

ङ. पाठ्यक्रम केँ बेसी समावेशी बनायब;

च. उच्चतर शिक्षा कार्यक्रम केँ बेसी रोजगारपरक बनायब;

छ. उच्चतर शिक्षा आ द्विभाषी रूपसँ पढल जाए बला बेसी डिग्री पाठ्यक्रम विकसित करब;

ज. ई सुनिश्चित करब कि सभ संबंधित मकान आ अन्य मूलभूत सुविधा व्हीलचेयर सुलभ आ दिव्यांगजनक लेल अनुकूल होइ;

झ. वंचित शैक्षिक पृष्ठभूमिसँ आबए बला विद्यार्थीक लेल ब्रिज-कोर्स केर निर्माण करब;

ञ एहन सभ विद्यार्थीकेँ उपयुक्त सुझाव परामर्श कार्यक्रमक द्वारा सामाजिक, भावनात्मक आ अकादमिक सहायता आ सुझाओ प्रदान करब;

ट. पाठ्यक्रम सहित उच्चतर शिक्षण संस्थान केँ सभ पक्ष द्वारा संकाय सदस्य, परामर्शदाता सभ आ विद्यार्थी केर लैंगिक-पहिचानक केँ मुद्दाक प्रति संवेदनशील आ समावेशीत करब;

ठ. भेदभाव आ उत्पीड़नक विरुद्ध बनल सभ नियमकेँ सख्ती सँ लागू करब;

ड. एसईडीजी सँ बढ़ैत भागीदारी केर सुनिश्चित करबा सँ जुड़ल विशिष्ट योजनाकेँ सम्मिलित करैत संस्थागत विकास योजनाक निर्माण करब, जाहिमे उपरोक्त बिंदु सम्मिलित होइ मुदा एतहि धरि सीमित नहि होइ।

15. शिक्षक शिक्षा

15.1. अगिला पीढ़ीकेँ आकार देबए बला विद्यालय शिक्षक केर एकटा टीम केर निर्माणमे शिक्षक शिक्षण भूमिका महत्वपूर्ण अछि। शिक्षककेँ तैयार करब एहन प्रक्रिया अछि जेकरा लेल बहु-विषयक दृष्टिकोण आ ज्ञानक आवश्यकता छैक, संगे-संग उत्कृष्ट उपदेशक केर निर्देशनमे मान्यता आ मूल्य सभक निर्माण आ ओकर अभ्यासक सेहो आवश्यकता होइत अछि। ई सुनिश्चित कएल जेबाक चाही जे शिक्षक शिक्षा आ शिक्षण प्रक्रियासँ सम्बंधित अद्यतन प्रगतिक संग भारतीय मूल्य, भाषा, ज्ञान, लोकाचार आ परम्परा जनजातीय परम्पराक प्रति सेहो जागरूक रहए।

15.2. उच्चतम न्यायलय द्वारा गठित न्यायमूर्ति जे.एस.वर्मा आयोग (2012) केर अनुसार, स्टैंड-अलोन टीईआई, जेकर संख्या 10, 000 सँ बेसी अछि, शिक्षक शिक्षाक प्रति लेशमात्र गंभीरतासँ प्रयास नहि क' रहल अछि, अपितु एकर स्थान पर ऊँच दाम पर डिग्रीकेँ बेच रहल अछि। एहि दिशामे एखनहुँ धरि कएल गेल विनियामक प्रयास नहि त' व्यवस्थामे पैघ स्तर पर व्याप्त भ्रष्टाचार केँ रोकि सकल अछि, आ नहि गुणवत्ताकेँ ल' के निर्धारित मूलभूत मानक केँ लागू क' सकल अछि, अपितु एहन प्रयासक एहि क्षेत्रमे उत्कृष्टता आ नवाचार पर नकारात्मक प्रभाव पड़ल अछि। अतः एहि क्षेत्र आ एकर नियामक प्रणालीमे महत्वपूर्ण कार्यवाहीक द्वारा पुनरुद्धार केर तात्कालिक आवश्यकता अछि जाहिसँ गुणवत्ता केर उच्चतर मानक केँ निर्धारित कएल जा सकए आ शिक्षक शिक्षा प्रणालीमे अखंडता, विश्वसनीयता, प्रभाविता आ उच्चतर गुणवत्ता केर बहाल कएल जा सकए।

15.3. शिक्षण कार्यक प्रतिष्ठा केर बहाल करबाक लेल आवश्यक नैतिकता आ विश्वसनीयताक स्तरमे सुधार केँ सुनिश्चित करब आ फेर एकर द्वारा एकटा सफल विद्यालयी प्रणाली सुनिश्चित करबाक लेल, नियामक प्रणालीकेँ ओहि निम्न स्तरीय आ बेकार शिक्षक शिक्षा संस्थान टीईआई कए खिलाफ उल्लंघनक लेल एक वर्षक समय देबाक बाद, कठोर कार्रवाई करबाक अधिकार हो जे बुनियादी शैक्षिक मानदंड केँ पूरा नहि क' पाबि रहल अछि। वर्ष 2030 धरि, केवल शैक्षिक रूपसँ सुदृढ, बहु-विषयक आ एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम टा कार्यान्वित होएत।

15.4. चूँकि, शिक्षक शिक्षाक लेल बहु-विषयक/बहु-विषयक निविष्टक संगे-संग उच्चतर गुणवत्तायुक्त विषयवस्तु आ शैक्षणिक प्रक्रियाकेँ आवश्यकता होइत अछि, अतः एकरा ध्यानमे राखैत सभ शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमके केवल समग्र बहु-विषयी संस्थानमे आयोजित कएल जेबाक चाही। एकरा लेल सभ पैघ बहु-विषयक विश्वविद्यालयक संगे-संग सभ बहु-विषयक विश्वविद्यालय आ महाविद्यालयकेँ लक्ष्य होएत जे ओ अपन ओतए एहन शिक्षा विभागकेँ स्थापना करए, जे कि शिक्षाकेँ अलग-अलग पक्ष पर अत्याधुनिक अनुसन्धान करबाक अतिरिक्त मनोविज्ञान, दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र, तांत्रिकविज्ञान, भारतीय भाषा, कला, संगीत, इतिहास, आ साहित्यक संगे-संग विज्ञान आ गणित सन अन्य विशिष्ट विषयसँ संबंधित विभागक सहयोगसँ बी.एड. कार्यक्रम सेहो संचालित करत। एकरा संगे-संग वर्ष 2030 धरि सभ एकल शिक्षाकेँ संस्थानकेँ बहु-विषयक संस्थानकेँ रूपमे बदलबाक आवश्यकता होएत किएक त' ओकरा सेहो 4 वर्षीय एकीकृत शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम केर संचालित करबाक होएत।

15.5. वर्ष 2030 धरि बहु-विषयक उच्चतर शिक्षण संस्थान द्वारा प्रदान कएल जाए बला ई 4 वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रम विद्यालयी शिक्षकक लेल न्यूनतम डिग्री योग्यता बनि जाएत। ई 4 वर्षीय एकीकृत बी.एड. शिक्षा आ ओकर संग एकटा अन्य विशेष विषय जेना भाषा, इतिहास, संगीत, गणित, कंप्यूटर विज्ञान, रसायनशास्त्र, अर्थशास्त्र, आदि मे एक समग्र डूअल मेजर स्नातक डिग्री होएत। अत्याधुनिक शिक्षाशास्त्रक शिक्षणकेँ संगे-संग शिक्षक-शिक्षामे समाजशास्त्र, इतिहास, विज्ञान, मनोविज्ञान, प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा, बुनियादी साक्षरता आ संख्याज्ञान, भारतसँ जुडल ज्ञान, आ एकर मूल्य/लोकाचार/कला/परंपरा आ बहुत किछु सम्मिलित होएत। 4 वर्षीय एकीकृत बी. एड. प्रदान करए बला प्रत्येक उच्चतर शिक्षा संस्थान, कोनो एक विषय विशेषमे पहिनेसँ स्नातक डिग्री हासिल क' चुकल अछि, कए लेल 2 वर्षीय बी. एड. कार्यक्रमक निर्माण क' सकैत छथि। कोनो विशेष विषय मे 4 वर्षक स्नातक केँ डिग्री प्राप्त कएल विद्यार्थीक लेल 1 वर्षीय बी-एड. कार्यक्रमक प्रस्ताव सेहो राखि सकैत छथि। एहि 4 वर्षीय, 2 वर्षीय, आ 1 वर्षीय बी. एड. कार्यक्रमक लेल उत्कृष्ट उम्मीदवारकेँ आकर्षित करबाक लेल मेधावी विद्यार्थी सभक लेल छात्रवृत्तिक स्थापना कएल जाएत।

15.6. शिक्षक शिक्षा प्रदान करए बला उच्चतर शिक्षण संस्थान, शिक्षा आ ओकरा सँ संबंधित विषयक संगे- संग विशेष विषयमे विशेषज्ञताकेँ उपलब्धता सुनिश्चित करत। प्रत्येक उच्चतर शिक्षा संस्थानक लग सघन जुडावक संग काज करबाक लेल सार्वजनिक आ निजी विद्यालय आ विद्यालय परिसरक एकटा नेटवर्क रहत, जतए भविष्यक शिक्षक अन्य सहायक गतिविधि जेना सामुदायिक सेवा, व्यस्क आ व्यावसायिक शिक्षा, आदिमे सहभागिताक संग शिक्षणक काज करत।

15.7. शिक्षक-शिक्षाक लेल एक तरहक मानक केँ बनाओल राखबाक लेल, पूर्व-सेवा शिक्षक तैयारी कार्यक्रममे प्रवेश राष्ट्रीय परिक्षण एजेंसी द्वारा आयोजित उपयुक्त विषय आ योग्यता परिक्षणक माध्यमसँ होएत, आ देशक भाषाई आ संस्कृतिक विविधताकेँ ध्यान मे राखैत मानकीकृत कएल जाएत।

15.8. शिक्षा विभागमे संकाय सदस्यक प्रोफाइलमे विविधता होएब एकटा आवश्यक लक्ष्य होएत, मुदा शिक्षण/फील्ड/शोध केँ अनुभव केर महत्ता प्रदान कएल जाएत। सोझा-सोझी विद्यालयी शिक्षासँ जुडय बला सामाजिक विज्ञानक क्षेत्र (जेना मनोविज्ञान, बालविकास, भाषाविज्ञान, समाजशास्त्र, दर्शन, अर्थशास्त्र, आ राजनीति विज्ञान) कए संगे- संग विज्ञान, शिक्षा, गणित शिक्षा, सामाजिक विज्ञान शिक्षा, आ भाषा शिक्षा सन कार्यक्रमसँ संबंधित विषयमे प्रशिक्षण प्राप्त संकाय सदस्यक शिक्षक-शिक्षा संस्थानमे आकर्षित आ नियुक्त कएल

जाएत, जाहिसँ कि शिक्षक के बहु-विषयी शिक्षाकेँ आ ओकर अवधारणात्मक विकासकेँ मजबूती प्रदान कएल जा सकए।

15.9. सभ नव पीएच-डी प्रवेशकर्ता, चाहे, ओ कोनो विषयमे प्रवेश लिअए, सँ अपेक्षित होइत जे ओ अपन डॉक्टरल प्रशिक्षण अवधिक दौरान अपन द्वारा चुनल गेल पीएच-डी विषय सँ सम्बंधित शिक्षण/शिक्षा/अध्यापन/लेखन मे क्रेडिट आधारित पाठ्यक्रम लिअए। हुनक डॉक्टरेट प्रशिक्षण अवधिक दौरान हुनका शैक्षणिक प्रक्रिया, पाठ्यक्रम निर्माण, विश्वसनीय मूल्यांकन प्रणाली, आ संचार सन क्षेत्रक अनुभव प्रदान कएल जाएत, किएक त' संभव अछि जे एकरामे सँ कोनो शोध विद्वान अपन चुनल विषयके संकाय सदस्य या सार्वजनिक प्रतिनिधि/संचारक बनत। पीएच-डी छात्रक लेल शिक्षण सहायक आ अन्य साधनक माध्यमसँ अर्जित कएल गेल वास्तविक शिक्षण अनुभवक न्यूनतम घंटा सेहो तय होएत। देशभरिक विश्वविद्यालयमे संचालित पीएच-डी कार्यक्रमक ई उद्देश्यक लेल पुनरुत्पन्नीकरण कएल जाएत।

15.10. महाविद्यालय आ विश्वविद्यालय शिक्षकक लेल सेवारत सतत व्यावहारिक विकासक प्रशिक्षण वर्तमान संस्थागत व्यवस्थामे जारी प्रयास सभक माध्यमसँ जारी रहत; गुणवत्तापूर्ण शिक्षाक लेल आवश्यक समृद्ध शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाक आवश्यकताकेँ पूरा करबाक लेल एकर सुदृढीकरण आ विस्तार कएल जाएत। शिक्षण केर ऑनलाइन प्रशिक्षणक लेल स्वयम/दीक्षा सन प्रौद्योगिकी मंचक उपयोग केँ प्रोत्साहित कएल जाएत, जाहिसँ मानकीकृत प्रशिक्षण कार्यक्रमकेँ कम समयक भीतर बेसी शिक्षककेँ उपलब्ध कराओल जा सकैत अछि।

15.11. सलाह (मेंटरिंग)क लेल एकटा राष्ट्रीय मिशनक स्थापना कएल जाएत जाहिमे पैघ संख्यामे वरिष्ठ/सेवानिवृत्त उत्कृष्ट संकाय सदस्यकेँ जोडल जाएत, एकरामे ओ संकाय सदस्य सम्मिलित हेताह जिनका भारतीय भाषामे पढ़एबाक क्षमता छनि आ जे विश्वविद्यालय/महाविद्यालय शिक्षक केँ लघु आ दीर्घकालिक परामर्श/व्यावसायिक सहायता प्रदान करबाक लेल तैयार हेताह।

16. व्यावसायिक शिक्षाक पुनर्कल्पना

16.1. 12म पंचवर्षीय योजना (2012-2017) केर अनुमानक अनुसार 19-24 आयुवर्ग मे आबए बला भारतीय कार्यबलक अत्यंत कम प्रतिशत (5% सँ कम) लोक औपचारिक व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त केलक; जखन कि संयुक्त राज्य अमेरिकामे 52%, जर्मनी मे 75% आ दक्षिण कोरिया मे 96% पर ई संख्या बहुत बेसी अछि। ई संख्या भारतमे व्यावसायिक शिक्षाक प्रसारमे तेजी आनबाक आवश्यकता केँ पूर्ण स्पष्टतासँ रेखांकित करैत अछि।

16.2. व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करए बला छात्रक कम संख्या हेबाक पाछे एकटा प्रमुख कारण ई तथ्य अछि जे अतीतमे व्यावसायिक शिक्षा मुख्य रूपसँ कक्षा 11 -12 आ कक्षा 8 आ ओकर ऊपरक कक्षाक विद्यालय छोड़ए बला विद्यार्थी पर केंद्रित रहए। एकर अतिरिक्त, व्यवसायिक विषयक संगे एगारहम- बारहम कक्षा पास करए बला विद्यार्थी लग प्रायः उच्चतर शिक्षामे अपन चुनल व्यवसाय क्षेत्रमे आगू बढ़बाक स्पष्ट मार्ग नहि होइत अछि। सामान्य उच्चतर शिक्षाक लेल प्रवेश मानदंड सेहो व्यावसायिक शिक्षाक योग्यता बला विद्यार्थी सभक लेल अवसर केँ उपलब्धताकेँ सुनिश्चित करबाक दृष्टि सँ निर्मित नहि कएल गेल रहय, ओकर फल ई भेल जे ओ अपने देशमे आन लोकक सापेक्ष 'मुख्य धाराक शिक्षा' वा अकादमिक शिक्षा' सँ वंचित रहि जाइत छल। ई व्यवसायिक शिक्षाक विषयसँ संबंधित विद्यार्थीक लेल सोझा-सोझी आगू बढ़बाक रस्ताकेँ पूर्ण रूपसँ बंद क' देलक, ई एकटा एहन मुद्दा अछि, जेकरा एखन वर्ष 2013 मे राष्ट्रीय कौशल योग्यता प्रारूप (एनएसक्यूएफ) केर घोषणाक माध्यमसँ संबोधित कएल गेल अछि।

16.3. ई मानल जाइत अछि जे व्यावसायिक शिक्षाकेँ मुख्यधाराक शिक्षासँ कम महत्त्वक शिक्षा मानल जाइत अछि आ इहो मानल जाइत अछि जे ई मुख्य रूपसँ ओहि विद्यार्थीक लेल अछि जे मुख्यधाराक शिक्षाक संग सामंजस्य नहि बैसा पाबैत अछि। ई एकटा एहन धारणा अछि जे विद्यार्थी द्वारा चुनल गेल विकल्पकेँ प्रभावित करैत अछि।

ई एकटा गंभीर चिंतनक विषय अछि आ एकरासँ निपटबाक लेल एहि तथ्यकेँ पुनर्कल्पित कएल जेबाक आवश्यकता अछि जे भविष्यमे छात्रकेँ व्यवसायिक शिक्षणक प्रस्ताव कोन प्रकारसँ कएल जाएत अछि।

16.4. एहि नीतिक उद्देश्य व्यावसायिक शिक्षासँ जुड़ल सामाजिक पदानुक्रमक स्थितिकेँ दूर करबाक अछि, आ एकरा लेल आवश्यक होएत जे समस्त शिक्षण संस्थान, जेना- विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, चरणबद्ध तरीकासँ व्यावसायिक शिक्षाक कार्यक्रमके मुख्यधाराक शिक्षा संग एकीकृत कएल जाए। एकर प्रारंभ आरंभिक वर्षमे व्यावसायिक शिक्षाकेँ अनुभव प्रदान करबा सँ होए जे पुनः सुचारु रूपसँ उच्चतर प्राथमिक, माध्यमिक, कक्षासँ होइत उच्चतर शिक्षा धरि जाए। ई सुनिश्चित करत जे प्रत्येक बच्चा कम-सँ-कम एकटा व्यवसायसँ जुड़ल कौशलकेँ सीखबाक आ अन्य कतेको व्यवसायसँ एहि प्रकार परिचित होइ। एहन करबाक परिणामस्वरूप ओ श्रमक महत्ता आ भारतीय कला आ कारीगरी सहित अन्य विभिन्न व्यवसायक महत्तासँ परिचित होएत।

16.5. वर्ष 2025 धरि, विद्यालय आ उच्चतर शिक्षा प्रणालीक माध्यमसँ कम-सँ-कम 50 % विद्यार्थीकेँ व्यावसायिक शिक्षाक अनुभव प्रदान कएल जाएत जेकर लक्ष्य आ समय-सीमाक संग एकटा स्पष्ट रूपमे विकसित कएल जाएत। ई सतत विकास लक्ष्यक लक्ष्य संख्या 4.4 केर संग संगतता राखैत अछि आ भारतक जनसंख्या-रूपी संसाधनक पूर्ण लाभकेँ प्राप्त करबामे मदति करत। जीईआर केर लक्ष्यकेँ तय करैत समय व्यावसायिक शिक्षासँ जुड़ल विद्यार्थीक संख्याकेँ सेहो ध्यानमे राखल जाएत। व्यावसायिक क्षमताक विकास आ 'अकादमिक' या अन्य क्षमताक विकास संगे-संग होएत। अगिला दशकमे चरणबद्ध तरीकासँ सभ माध्यमिक विद्यालयक शैक्षणिक विषयमे व्यावसायिक शिक्षाकेँ एकीकृत कएल जाएत। एकरा लेल, माध्यमिक विद्यालय, आईटीआई पॉलिटेक्निक आ स्थानीय उद्योग आदिसँ संपर्क आ सहयोग करत। विद्यालयमे कौशल प्रयोगशालाक केंद्र आ स्पोक मॉडल सेहो स्थापित आ सृजित कएल जाएत, जतए अन्य विद्यालय सेहो एहि सुविधाक उपयोग क' सकत। उच्चतर शिक्षा संस्थान अपने वा उद्योग सभ आ गैर- सरकारी संगठन सभक संग साझेदारीमे व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करत। वर्ष 2013 मे शुरू कएल गेल डिग्री बी.वोक. पूर्व जेकाँ जारी रहत, मुदा एकर अतिरिक्त सेहो व्यावसायिक पाठ्यक्रम अन्य सभ स्नातक डिग्री कार्यक्रममे नामांकित छात्रक लेल उपलब्ध होएत, जाहिमे 4 वर्षीय बहु-विषयक स्नातक कार्यक्रम सेहो सम्मिलित रहत। उच्चतर शिक्षण संस्थानकेँ सॉफ्ट स्किल्स सहित विभिन्न कौशलमे सीमित अवधिकेँ सर्टिफिकेट कोर्स करबाक सेहो अनुमति होएत। 'लोक विद्या', अर्थात भारतमे विकसित महत्वपूर्ण व्यावसायिक ज्ञानसँ जुड़ल विषय सभकेँ व्यवसायिक शिक्षा पाठ्यक्रममे एकीकरणक माध्यमसँ छात्रक लेल सुलभ बनाओल जाएत। ओडीएल मोडक माध्यमसँ सेहो व्यावसायिक पाठ्यक्रमकेँ संचालित करबाक संभावना ताकल जाएत।

16.6. अगिला दशकमे व्यावसायिक शिक्षाकेँ चरणबद्ध तरीकासँ सभ विद्यालय आ उच्चतर शिक्षा संस्थानमे एकीकृत कएल जाएत। व्यावसायिक शिक्षाक ध्यान क्षेत्रक चुनाव कौशल अंतर विक्षेपण (स्किल गैप एनालिसिस) आ स्थानीय अवसरक आधार पर कएल जाएत। मानव संसाधन विकास मंत्रालय एहि आरंभक देखरेखक लेल उद्योगक सहयोगसँ, व्यावसायिक शिक्षाक विशेषज्ञ सभ आ व्यावसायिक मंत्रालयक प्रतिनिधि सभक संग एकटा राष्ट्रीय समिति, *नेशनल कमिटी फॉर द इंटीग्रेशन ऑफ़ वोकेशनल एजुकेशन (एनसीआईवीई)* केर गठन करत।

16.7. सभसँ पहिने ई प्रक्रियाक आरम्भ करए बला संस्थानक लेल ई आवश्यक अछि जे ओ नवाचारक माध्यमसँ एहन मॉडल आ प्रणालीक खोज करए जे सफल होइ आ फेर ओकरा एनसीआईवीई द्वारा स्थापित तंत्रक माध्यमसँ अन्य संस्थानक संग साझा करए, जाहि सँ व्यावसायिक शिक्षाक पहुँचकेँ विस्तार देबामे सहयता भेटि सकए। व्यावसायिक शिक्षा आ प्रशिक्षुता प्रदान करए बला विभिन्न मॉडलक उच्चतर शिक्षा संस्थान द्वारा सेहो प्रयोगमे आनल जाएत। उद्योगक संग साझेदारीक तहत उच्चतर शिक्षा संस्थानमे ऊष्मायन केंद्र स्थापित कएल जाएत।

16.8. राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क (एनएसक्यूएफ) केर प्रत्येक विषय व्यवसाय/रोजगारक लेल बेसी विस्तारपूर्वक निर्मित कएल जाएत। एकर अतिरिक्त, भारतीय मानककेँ अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन द्वारा बनाओल गेल व्यवसाय केर अंतर्राष्ट्रीय मानक वर्गीकरणक संग जोड़ल जाएत। ई फ्रेमवर्क पूर्ववर्ती शिक्षाक आवश्यकताक लेल आधार प्रदान करत। एकर माध्यमसँ, विद्यालयसँ निकलि चुकल बच्चाकेँ व्यवहारिक अनुभवक ढाँचाक प्रासंगिक

स्तरक संग जोड़िक' ओकरा पुनः औपचारिक प्रणालीसँ जोड़ल जाएत। क्रेडिट आधारित ई फ्रेमवर्क, छात्रकें 'सामान्य'सँ व्यवसायिक शिक्षा धरि जएबाकें सुगम बनाओत।

17. नव राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (एनआरएफ) केर माध्यमसँ सभ क्षेत्रमे गुणवत्तायुक्त अकादमिक अनुसंधानकें उत्प्रेरित करब ।

17.1. एकटा पैघ आ जीवंत अर्थव्यवस्थाक विकसित करबाक लेल आ बना कए रखबाक लेल ज्ञान सृजन आ अनुसंधानक महत्वपूर्ण भूमिका होइत अछि, जेकरासँ समाजक उत्थान होइत अछि आ लगातार राष्ट्रकें आर बेसी ऊंच ल' जएबाक प्रेरणा भेटैत अछि। निःसंदेह, पूरा इतिहासमे सभसँ समृद्ध सभ्यता (जेना भारत, मेसोपोटामिया, मिस्र, चीन, आ ग्रीस) सँ ल' कए आधुनिक सभ्यता सभ (जेना संयुक्त राज्य अमरीका, जर्मनी, इजराइल, दक्षिण कोरिया, आ जापान) धरि एहन समाज रहि रहल छैक जे अपन बौद्धिक आ भौतिक संपत्तिकें मुख्यतः नव ज्ञानक लेल प्रख्यात एवं मूलभूत योगदान द्वारा प्राप्त कएलक अछि- जेना विज्ञानक संगे- संग कला, भाषा, आ संस्कृतिक क्षेत्रमे -जे ने केवल अपन सभ्यताकें अपितु दुनियाभरिक सभ्यता सभकें परिष्कृत आ उन्नत बनओनए अछि।

17.2. अनुसंधानक एकटा मजगूत पारिस्थितिकी तंत्र आइ दुनियामे तेजीसँ होइ बला परिवर्तनक संग संभवतः पहिनेसँ कतेको बेसी महत्वपूर्ण भ' गेल अछि, उदाहरणक लेल, जलवायु परिवर्तन, जनसांख्यिकी गतिशीलता आ प्रबंधन, जैव प्रौद्योगिकी, एकटा डिजिटल बाजारक विस्तार, मशीन लर्निंग आ कृत्रिम बुद्धिमत्ता आदि केर उठएबाक सन परिवर्तन अछि। जँ भारत कें एहि विषय क्षेत्रमे एकटा नेतृत्वकर्ता बनबाक अछि आ वास्तवमे अपन विशाल प्रतिभा कुंडकें फेरसँ एकटा प्रमुख ज्ञान समाज बनएबाक क्षमता प्राप्त करबाक अछि त' आबए बला वर्ष आ दशकमे, राष्ट्रकें अपन अनुसंधान क्षमता- सम्भावना सभकें सभ विषय (डिसिप्लिन्स) मे उत्पादनक संग एकटा महत्वपूर्ण विस्तारक आवश्यकता होएत। आइ, कोनो राष्ट्रक आर्थिक, बौद्धिक, सामाजिक, पर्यावरणीय आ प्रौद्योगिकीय विकासकें लेल शोधक महत्व पहिनेसँ कतेको बेसी अछि।

17.3. अनुसंधानक एतेक महत्व हेबाक बावजूद, भारतमे वर्तमान समयमे अनुसंधान आ नवाचार निवेश जीडीपीक केवल 0.69 % अछि ओकर तुलनामे संयुक्त राज्य अमेरिकामे 2 % इजराइलमे 4.3 % आ दक्षिण कोरियामे 4.2 % अछि।

17.4. आइ भारतकें सामाजिक चुनौतिक समाधान करबाक आवश्यकता अछि, जेना कि अपन सभ नागरिकक लेल पीबाक पानिक स्वच्छता, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा आ स्वास्थ्य, उत्कृष्ट परिवहन- गुणवत्तापूर्ण वायु, बिजली, आ मूलभूत सामग्री सभक पहुँच आदि। एकरा लेल एकटा व्यापक दृष्टिकोण आ समाधानात्मक रवैया आ क्रियान्वयनक आवश्यकता होइत जे नहि केवल शीर्ष- विज्ञान आ प्रौद्योगिकी पर पर्यावरणीय आयाम केर गहीर बोध पर आधारित हो। एहि चुनौतिक सामना करबाक लेल आ एकर समाधान ताकबाक लेल भारतक विभिन्न क्षेत्रमे उच्च-स्तरीय अंतर- विषयक अनुसंधान करबाक स्वयं केर क्षमताक होएब महत्वपूर्ण होएत। स्वयं केर शोध करबाक क्षमता कोनो देशक अत्यधिक आसानीसँ अन्य देशसँ अनुसंधानकें आयात करबाक लेल आ ओहिमे सँ अनुकूल शोधकें अपनेबाक योग्य बनैत अछि।

17.5. एकर अतिरिक्त, सामाजिक समस्याक समाधान निकालबाक दृष्टिसँ मूल्यवान हेबाक संगे-संग, कोनो देशक पहिचान, ओकर प्रगति, आध्यात्मिक आ बौद्धिक संतुष्टि आ रचनात्मकताक सेहो ओकर इतिहास, भाषा, कला, आ संस्कृतिक माध्यमसँ प्राप्त कएल जा सकैत अछि। एहि कारणेँ विज्ञान आ सामाजिक विज्ञानक क्षेत्रमे नवाचारक संगे-संग कला आ मानविकीक क्षेत्रमे अनुसंधान कोनो देशक प्रगति आ प्रबुद्धता हेतु अति महत्वपूर्ण अछि।

17.6. भारतमे शिक्षा संस्थानमे अनुसंधान आ नवाचार, बहुत महत्वपूर्ण अछि, विशेष रूपसँ जे उच्चतर शिक्षासँ जुड़ल अछि। पूरा इतिहासमे दुनियाक सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयसँ भेटए बला साक्ष्यसँ पता चलैत अछि कि उच्चतर शिक्षाक स्तर पर सर्वोत्तम शिक्षण आ सीखबाक प्रक्रिया ओहि वातावरणमे होइत अछि जतए अनुसंधान आ ज्ञान

सृजन केर एकटा मजबूत संस्कृति रहल अछि; एकरा संगे, दुनियाक श्रेष्ठ अनुसंधान, बहु-विषय विश्वविद्यालयमे भेल अछि।

17.7. भारतमे विज्ञान आ गणितसँ ल' कए कला, साहित्य, स्वर विज्ञान आ भाषासँ ल' कए चिकित्सा आ कृषि धरिक विषयमे अनुसंधान आ ज्ञान सृजनक एकटा पैघ ऐतिहासिक परंपरा रहल अछि। आब समयक मांग अछि जे भारत जल्दी सँ जल्दी एकटा मजबूत आ प्रबुद्ध ज्ञान- समाजक रूपमे हेरायल स्तिथिकेँ पुनः प्राप्त करए, आ दुनियाक तीन सभसँ पैघ अर्थव्यवस्थामे सँ एक केर रूपमे एकैसम सदीमे अनुसंधान आ नवाचारक नेतृत्व करबाक लेल तैयार रहए।

17.8. अतः ई नीति भारतमे अनुसंधानक गुणवत्ता आ ओकर मात्राकेँ बदलबाक लेल एकटा व्यापक दृष्टिकोणकेँ लागू करैत अछि। एहिमे विद्यालयी शिक्षामे निश्चित बदलाव, जाहिमे सीखबाक, खोज आ खोज-आधारित शैली, वैज्ञानिक पद्धति आ तार्किक चिंतन पर बल सम्मिलित अछि। छात्र हित आ प्रतिभाक पहिचान करबाक लेल विद्यालयमे आजीविका परामर्श, उच्चतर शिक्षाक संस्थागत पुनर्गठन जे विश्वविद्यालयमे अनुसंधानकेँ प्रोत्साहन देबाक, सभ उच्चतर शिक्षण संस्थानमे बहु-विषयी आ समग्र शिक्षा पर बल, स्नातक पाठ्यक्रममे अनुसंधान आ इंटरनशिप केर समावेश, संकाय करियर अनुसंधान पर समुचित बल दैक, प्रशासनिक आ विनियामक परिवर्तन जे शिक्षक केर आ संस्थागत स्वायत्तता आ नवाचारकेँ प्रोत्साहित करए बला अछि। ऊपरका सभ आयाम देशमे एकटा शोध मानसिकताकेँ मजबूत करबाक लेल अत्यंत महत्वपूर्ण अछि।

17.9. एहि विभिन्न तत्व पर सहक्रियात्मक तरीकासँ काज करबाक लेल ई नीति एकटा राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (एनआरएफ) केर स्थापनाक प्रस्तावित करैत अछि जाहिसँ राष्ट्रमे गुणवत्तायुक्त अनुसंधानकेँ सही रूपमे विकसित आ उत्प्रेरित कएल जा सकए। एनआरएफ केर व्यापक लक्ष्य हमर सभक विश्वविद्यालयक माध्यमसँ शोधक संस्कृतिकेँ सक्षम बनएबाक होएत। विशेष रूपसँ एनआरएफ योग्यता-आधारित एवं पियर रिब्यू पर आधारित शोध निधि केँ एकटा विश्वसनीय आधार प्रदान करत, जे उत्कृष्ट शोधक लेल उपयुक्त प्रोत्साहनक माध्यमसँ देशमे अनुसंधानक संस्कृति विकसित करबा मे मदति करत। राज्य विश्वविद्यालय आ अन्य सार्वजनिक संस्थानमे अनुसंधान केँ स्थापित करबाक संगे एकरा विकसित करबाक काज करत जतए अनुसंधान केर सम्भावना वर्तमानमे सीमित अछि। एनआरएफ प्रतिस्पर्धाक रूपसँ सभ बहु-विषयक मे अनुसंधानकेँ राशि देत। सफल अनुसंधानकेँ मान्यता देल जाएत आ प्रासंगिक सरकारी एजेंसीक संगे-संग उद्योग आ निजी/परोपकारी संगठनक संग घनिष्ठ सम्बन्धक माध्यमसँ एकरा कार्यान्वित कएल जाएत।

17.10. एहन संस्था जे वर्तमानमे कोनो स्तर पर अनुसंधानकेँ निधि प्रदान करैत अछि, जेना विज्ञान आ प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), परमाणु ऊर्जा विभाग (डीई) जैव-प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएचआर) भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर), भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद (आईसीएचआर) आ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी)क संगे- संग विभिन्न निजी आ परोपकारी संगठनसँ ओ अपन प्राथमिकता आ आवश्यकता केर अनुसार स्वतंत्र रूपसँ निधिगत अनुसंधान जारी राखत। यद्यपि, एनआरएफ सघन रूपसँ अन्य फंडिंग एजेंसीक संग समन्वय स्थापित करत आ विज्ञान, इंजीनियरिंग, आ अन्य सक्षम अकादमी सभक संग काज करत। एकरा संगे ओहि सँ जुडल अपेक्षित उद्देश्य आ प्रयासमे तालमेल आ दोहरावक कमी केँ सुनिश्चित करबाक प्रयास करत। एनआरएफ स्वतंत्र रूपसँ सरकारक एकटा रोटेटिंग बोर्ड ऑफ गवर्नर्स द्वारा शासित होएत, जाहिमे विभिन्न क्षेत्रक बहुत बेहतर शोधकर्ता आ आविष्कारकर्ता सम्मिलित होएत।

17.11. एनआरएफ केर प्राथमिक गतिविधि एहि प्रकारेँ रहतः

(क) सभ प्रकारक आ विभिन्न विषयमे, प्रतिस्पर्धी आ पियर-रिब्यू कएल गेल शोध प्रस्तावक लेल वित्त देब,

- (ख) शिक्षा संस्थानमें विशेषतः विश्वविद्यालयमें आ महाविद्यालय में जतए एखन अनुसंधान शैशवावस्थामें अछि, एहि संस्थानकेँ परामर्श प्रदान क' कए अनुसंधान आरंभ करब, विकसित करब आ ओकरा लेल सुविधा देब,
- (ग) शोधार्थी सभ आ सरकारक सम्बंधित शाखा सभ आ उद्योगक बीच संपर्क बनएबाक एवं समन्वयनक काज करब, जाहिसँ शोधार्थी सभकेँ लगातार अति तात्कालिक राष्ट्रीय अनुसंधान मुद्दाक बारेमें कहल जा सकए आ जेकरासँ नवीनतम सफलताक प्रति जागरूक रहैत नीति निर्माता सेहो अनुसंधानक क्षेत्रमें भ' रहल खोजक महत्वपूर्ण सफलताक बारे में जानकारी राखए। एकरासँ एहि सफलता सभक सर्वश्रेष्ठ तरीकासँ नीति आ/वा ओकरा क्रियान्वनमें दर्ज कएल जाए सकत।
- (घ) उत्कृष्ट अनुसंधान आ ओकर प्रगतिक पहिचान करब।

18. उच्चतर शिक्षाक नियामक प्रणालीमें परिवर्तन

18.1. कतेको दसक सँ उच्चतर शिक्षा केर विनियमन बहुत सख्त रहल अछि; जाहिसँ बहुत कम प्रभावक संग बहुत रास चीजक विनियमित करबाक प्रयास कएल गेल अछि, विनियामक प्रणाली केर कृत्रिम आ विघटनकारी स्वाभाव बहुत मूलभूत समस्यासँ प्रभावित रहल अछि -जेना किछुए निकायमें शक्तिक अत्यधिक केन्द्रीयकरण, एहि निकाय सभक बीच स्व-हित केर टकराव होइत रहल अछि, जेकर परिणामस्वरूप जवाबदेहीक कमी व्याप्त रहल अछि। उच्चतर शिक्षाक क्षेत्रकेँ पुनः सक्रिय करब आ एकरा सफल करबाक लेल नियामक प्रणालीकेँ पूर्ण रूपसँ बदलबाक आवश्यकता अछि।

18.2. उपर्युक्त मुद्दा सभक समाधान करबाक लेल, उच्चतर शिक्षाक नियामक प्रणालीमें ई सुनिश्चित करबाक होइत जे विनियमन, प्रत्यायन, निधिकरण, आ शैक्षणिक मानकक निर्धारणसँ विशेष काज, विशिष्ट, स्वतंत्र आ सशक्त संस्था/व्यवस्था सभ द्वारा संचालित कएल जाइ। एहि प्रणालीमें नियंत्रण संतुलन बनायब, निकायकेँ आपसी हितक टकरावकेँ कम करब आ किछु निकायमें शक्ति सभक अत्यधिक केन्द्रीयकरणकेँ समाप्त करबाक लेल आवश्यक अछि। ई सुनिश्चित करबाक लेल संगे-संग साझा उद्देश्यक प्राप्ति लेल तारतम्यताक संग काज करए पड़त। एहि चारि टा संरचना सभकेँ एकटा प्रमुख संस्था, भारतीय उच्चतर शिक्षा आयोग (एचइसीआई) केर तहत चारि टा स्वतंत्र व्यवस्थाक रूपमें स्थापित कएल जाएत।

18.3. एचइसीआई केर पहिल अंग राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा विनियामक परिषद(एनएचएआरसी) होएत। ई उच्चतर शिक्षा क्षेत्रक लेल एकटा साझा आ एकल बिन्दु नियामककेँ जेना काज करत जाहिमें शिक्षक-शिक्षा सम्मिलित अछि किन्तु चिकित्सीय एवं विधिक शिक्षा सम्मिलित नहि अछि, आ एहि तरहक नियामक प्रक्रियामें दोहराव आ अव्यवस्थाक समाप्त करत। ई एहि चलते होइत अछि कि एक त' व्यवस्थाक भीतर वर्तमानमें अनेक विनियामक संस्थान उपस्थित अछि। एहि एकल बिन्दु विनियमनकेँ सक्षम करबाक लेल मौजूदा अधिनियमक पुनर्संरचना, निरीक्षण आ विभिन्न मौजूदा नियामक निकायकेँ पुनर्गठन केर आवश्यकता होएत। एनएचएआरसीकेँ 'सरल मुद्दा प्रभावशाली' आ सुविधात्मक तरीकासँ संस्थानकेँ विनियमित करबाक लेल स्थापित कएल जाएत, जेकर अर्थ अछि कि किछु महत्वपूर्ण मामिला- विशेष रूपसँ वित्तीय ईमानदारी, सुशासन आ सभ ऑनलाइन आ ऑफलाइन वित्त संबंधी मसलाक स्व-प्रकटीकरण, ऑडिट, प्रक्रिया, मूलभूत आधार, संकाय/कर्मचारी, पाठ्यक्रम आ शैक्षिक प्रतिफल केर प्रभावी तरीकासँ नियंत्रित कएल जाएत। ई सूचना सभ उच्चतर शिक्षा संस्थान द्वारा अपन वेबसाइट पर आ सार्वजनिक वेबसाइट जे कि एनएचएआरसी द्वारा संचालित कएल जाएत अछि, पर उपलब्ध कराओल जाएत, अद्यतन कएल जाएत आ सटीक राखल जाएत। सार्वजनिक कएल गेल सूचनासँ संबंधित हितधारक आ अन्य लोकक द्वारा कोनो शिकायत या गोहारि एनएचएआरसी द्वारा सुनल जाएत आ एकर हल कएल जाएत। एकटा निश्चित समय-अंतराल पर प्रत्येक उच्चतर शिक्षा संस्थानमें क्रम-रहित तरीकासँ दिव्यांग छात्र सहित चुनल गेल छात्रकेँ मूल्यवान पुनर्निवेश तरीकासँ ऑनलाइन कएल जाएत।

18.4. एहन विनियमनकेँ सक्षम बनएबाक प्राथमिक प्रक्रिया प्रत्यायन होएत। एहिलेल, एचईसीआई केर दोसर अंग एकटा ‘मेटा-एक्केडिटिंग’ निकाय होएत, जेकरा राष्ट्रीय प्रत्यायन परिषद (एनएसी) क नामसँ जानल जाएत। संस्था सभक प्रत्यायन मुख्यतः किछु बुनियादी नियम- कानून, सार्वजनिक स्व-प्रकटन, मजगूत नियंत्रण, आ परिणामक आधार पर होएत संगे ई पूरा प्रक्रिया मान्यता दइ बला संस्थानकेँ एकटा स्वतंत्र समूह द्वारा पूरा कएल जाएत आ एनएसी द्वारा एहि सभक निगरानी आ एकर संचालन कएल जाएत। एनएसी द्वारा एकटा समुचित संख्यामे संस्थानकेँ मान्यता देबाक अधिकार हेतु काज कएल जाएत। कम समयमे ग्रेडेड मान्यता देबाक लेल एकटा मजगूत प्रणालीकेँ स्थापित कएल जाएत, जे सभ उच्चतर शिक्षा संस्थान द्वारा स्वायत्ता, स्व-प्रशासन, आ गुणवत्ताक तय मानककेँ प्राप्त करबाक लेल चरणबद्ध स्तर (बेंचमार्क) तय करत। परिणामस्वरूप, सभ उच्चतर शिक्षा संस्थान अपन अपन संस्थान विकास योजना (आईडीपी) केर माध्यमसँ अगिला 15 वर्षमे मान्यताकेँ उच्चतर स्तरकेँ प्राप्त करबाक उद्देश्य तय करत आ एहि प्रकारेँ ई संस्थान एकटा स्व-संचालित डिग्री प्रदान करए बला संस्थान/समूहक सन बनबाक लेल प्रतिबद्ध बनत। आगू चलि क’ ई प्रक्रिया वैश्विक मानकक अनुसार एकटा द्विआधारी प्रक्रिया बनि जाएत।

18.5. एचईसीआई केर तेसर अंग उच्चतर शिक्षा अनुदान परिषद (एचईजीसी) केर गठन कएल जाएत जे पारदर्शी मानदण्डक आधार पर उच्चतर शिक्षाक निधिकरण आ वित्तपोषणक काज करत जाहिमे संस्थान सभ द्वारा विकसित आईडीपी आ ओकर क्रियान्वयनक केर माध्यमसँ प्राप्त कएल गेल उन्नति सम्मिलित अछि। एचईजीसीकेँ छात्रवृत्तिक वितरणक लेल आ नव ध्यानकेन्द्र क्षेत्र केर शुरू करबाक लेल आ बहु-विषयी क्षेत्रमे उच्चतर शिक्षा संस्थानके गुणवत्ता कार्यक्रमक प्रस्तावक संग ओकर विस्तारक लेल विकासात्मक निधिकेँ काजक भार सौंपल जाएत।

18.6. एचईसीआईकेँ चारिम विभाग सामान्य शिक्षा परिषद (जीईसी) होएत, ई उच्चतर शिक्षा कार्यक्रमक लेल अपेक्षित परिणाम तय करत, जेकरा ‘स्नातक परिणाम’ केर नामसँ जानल जाएत। जीईसी द्वारा एकटा राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा फ्रेमवर्क (एनएसक्यूएफ) संगत होएत जाहिसँ व्यवसायिक शिक्षा केर उच्चतर शिक्षा आसानीसँ समन्वित करए मे आसानी होए। एहि तरहँ सीखबाक परिणामक सन्दर्भमे एनएचईक्यूएफ द्वारा अग्रणी उच्चतर शिक्षा योग्यताक निर्देशन कएल जाएत जे एकटा डिग्री/डिप्लोमा/प्रमाण पत्रक रूपमे होएत। एकर अतिरिक्त, जीईसी, एनएचक्यूएफ केर माध्यमसँ क्रेडिट ट्रांसफर, समानक, आदि मुद्दा सभक लेल सुविधाजनक मानदंड स्थापित करत। जीईसी ओहि विशिष्ट कौशलक पहिचान करत जे छात्रकेँ अपन शैक्षणिक कार्यक्रमक बीच एकैसम शताब्दीक कौशलक संग पूर्ण विकसित शिक्षार्थी सभक तैयार करबाक उद्देश्यसँ प्राप्त करबाक चाही।

18.7. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) वेटनरी काउन्सिल ऑफ इंडिया (वीसीआई), राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद (एनसीटीई) आर्किटेक्चर काउन्सिल (सीओए), फार्मसी काउन्सिल ऑफ इंडिया (पीसीआई) राष्ट्रीय व्यावसायिक शिक्षा आ प्रशिक्षण परिषद (एनसीवीईटी) आदि केर पुनर्गठन व्यावसायिक मानक निर्धारण निकाय (पीएसएसबी) केर रूपमे कएल जाएत; ओ उच्चतर शिक्षा प्रणालीमे एकटा महत्वपूर्ण भूमिकाक निर्वहन करत आ ओकरा जीईसी कए सदस्य बनएबाक लेल आमंत्रित कएल जाएत। ई निकाय, पीएसएसबी केर रूपमे पुनर्गठनक बाद, जीईसी केर सदस्यक रूपमे पाठ्यक्रम संरचना, शैक्षणिक मानककेँ निर्धारित करब आ ओकर डोमेन/अध्ययनक विषय केर शिक्षण, अनुसंधान आ विस्तारक बीच समन्वय करब जारी राखत। जीईसी केर सदस्यक रूपमे ओ पाठ्यक्रमक ढांचाकेँ निर्दिष्ट करबामे मदति करत, जेकर आधार पर उच्चतर शिक्षा संस्थान अपन स्वयं केर पाठ्यक्रम तैयार क’ सकैत अछि। एहि प्रकारे, पीएसएसबी बिना कोनो नियामक भूमिका केर अधिगम आ अभ्यासक विशेष क्षेत्रमे मानक या अपेक्षा केर निर्धारित करत। सभ उच्चतर शिक्षा संस्थान ई तय करत जे ओकर शैक्षणिक कार्यक्रम कोना मानक या अन्य विचार पर प्रतिक्रिया दैत अछि आ जँ आवश्यक होए त’ ओ पीएसएसबी/मानक-व्यवस्था निकायसँ सहयोग लेबा मे सेहो समर्थ होएत।

18.8. एहि तरहक संरचना विभिन्न भूमिकाक बीच आपसी हितक टकरावकेँ समाप्त करैत; प्रत्येक लोक केर भूमिका एवं काजकेँ एक दोसरा सँ अलग करबाक सिद्धान्तकेँ कायम करत। एकर उद्देश्य किछु आधारभूत मसला पर ध्यान दैत उच्चतर शिक्षा संस्थानकेँ सशक्त बनायब सेहो रहत। एकरासँ जुड़ल जिम्मेदारी आ जवाबदेही उच्चतर शिक्षण संस्थानकेँ अनुरूप होएत। सार्वजनिक आ निजी उच्चतर शिक्षण संस्थानक बीच अपेक्षारूपसँ कोनो तरहक भेद नहि कएल जाएत।

18.9. एहि तरहक परिवर्तनक लेल मौजूदा संरचना आ संस्थानक लेल ई आवश्यकता होएत जे ओ अपनाकेँ सुदृढ़ क' सकए आ तरह-तरह केर विकासक्रमिकतासँ गुजरि सकए। काजक पृथक्करणक अर्थ होएत जे एचइसीआई केर तहत प्रत्येक अंगक एकटा नव एकल भूमिका ल' सकैत अछि, जे नवका नियामक योजनामे प्रासंगिक, सार्थक आ महत्वपूर्ण होइ।

18.10. विनियमनक लेल सभ स्वतंत्र संरचना केर कार्यक्रम नियमन (एनएचईआरए) मान्यता (एनएसी) निधियन (एचईजीसी) आ अकादमिक मान्यता (जीईसी) एकटा वृहद आ स्वायत्त निकाय एचइसीआई सार्वजनिक प्रकटीकरण नीति पर आधारित होएत आ अपन कार्य दक्षता, आ पारदर्शिताकेँ सुनिश्चित करबाक लेल आ मानव अंतरफलक(इंटरफेस) कम करबाक लेल बेसी सँ बेसी प्रौद्योगिकीक इस्तेमाल करत। मूलभूत सिद्धान्त ई होएत जे प्रौद्योगिकीक उपयोगसँ पहिचान-मुक्त आ पारदर्शी नियामक हस्तक्षेप कएल जा सकए। कठोर डेगक संग कठोर अनुपालन उपायकेँ सुनिश्चित कएल जाएत, जाहिसँ संस्थानकेँ न्यूनतम मानदंड आ मानकक अनुरूप बनाओल जा सकए। एचइसीआई अपने एकर चारु अंगक बीच कोनो तरहक विवाद केर निपटारा करतैक। एचइसीआई एकटा स्वतंत्र निकाय होएत जाहिमे प्रासंगिक क्षेत्रमे काज क' रहल सत्यनिष्ठ, प्रतिबद्ध उच्चतर श्रेणीकेँ विशेषज्ञ होएत जिनका ल'ग सार्वजनिक सेवामे योगदान देबाक विशिष्ट अनुभव होएत। एचइसीआई केँ सेहो अपन एकटा छोट, स्वतंत्र निकाय होएत जाहिमे उच्चतर शिक्षामे प्रसिद्ध सामाजिक सरोकार बला विशेषज्ञ सम्मिलित होएत, जे एचइसीआई केँ सत्यनिष्ठा आ प्रभावी कार्यकुशलता केर संचालित करतथि आ एकर निगरानी करतथि। एचइसीआई केर भीतर कार्य निष्पादन हेतु उपयुक्त प्रक्रिया केर निर्माण सेहो कएल जाएत, जाहिमे अधिनिर्णय सेहो सम्मिलित अछि।

18.11. एहि विनियामक शासनसँ नव गुणवत्तापूर्ण उच्चतर शिक्षण संस्थानकेँ स्थापित करब सेहो बहुत आसान भ' जाएत, संगे ई सेहो सुनिश्चित करबाक होएत कि ई जनसेवाक भावसँ दीर्घावधि केर लेल वित्तीय सहायताक संग स्थापित कएल गेल अछि। केंद्र आ राज्य सरकार द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन करबाक लेल उच्चतर शिक्षण संस्थानकेँ अपन संस्थान सभकेँ विस्तार करबाक लेल मदति भेटत, आ एहिसँ पैघ संख्यामे छात्र आ संकायक संगे-संग विषय आ कार्यक्रमकेँ विस्तार भ' सकए। उच्चतर शिक्षण संस्थान सभक गुणवत्तापूर्ण एवं उच्चतर-शिक्षा धरि पहुँचकेँ विस्तार करबाक उद्देश्यसँ हुनका लेल सार्वजनिक परोपकारी साझेदारी मॉडल सेहो शुरू कएल जा सकैत अछि।

शिक्षाक व्यवसायीकरणकेँ रोकब

18.12. नियंत्रण एवं संतुलनसँ युक्त विविध तंत्र, उच्चतर शिक्षा केर व्यवसायीकरण केँ रोकि पाओत। ई नियामक अभिकरणक प्रमुख प्राथमिकता होएत। सभ शिक्षण संस्थान 'लाभक लेल नहि' संस्था पर लागू लेखापरीक्षा आ प्रकटीकरण केर मानक व्यवस्थाक पालन करत। जँ कोनो अधिशेष होइत त' ओकरा शिक्षा क्षेत्रमे पुनर्निवेश कएल जाएत। ई सभ वित्तीय मामिला केर पारदर्शी सार्वजनिक प्रकटीकरण होएत, जाहिमे आम जनताक लेल शिकायत-निवारण तंत्रक सहायता लेल जाएत। एनएसी द्वारा विकसित प्रत्यायन प्रणाली, एहि प्रणाली पर एकटा पूरक जांच प्रदान करैत अछि, आ एनएचएएआरसी एकरा अपन नियामक उद्देश्यकेँ प्रमुख आयामक रूपमे देखत।

18.13. सार्वजनिक आ निजी सभ उच्चतर शिक्षण संस्थानकेँ एहि नियामक व्यवस्थामे बराबर मानल जाएत। नियामक व्यवस्था शिक्षामे निजी परोपकारी प्रयासकेँ प्रोत्साहित करत। सभ विधायी अधिनियम सभकेँ लेल सामान्य राष्ट्रीय दिशानिर्देश होएत जेकरासँ निजी उच्चतर शिक्षण संस्थान केर स्थापना कएल जाएत। ई सामान्य

न्यूनतम दिशानिर्देश एहिठाम सभ अधिनियम केर निजी उच्चतर शिक्षण संस्थानक स्थापित करबा मे समर्थ बनाओत आ एहि प्रकार निजी आ सार्वजनिक उच्चतर शिक्षण संस्थानक लेल सामान्य मानककेँ नियत करत। एहि प्रकार निजी आ सार्वजनिक उच्चतर शिक्षण संस्थानक लेल सामान्य मानककेँ नियत करत। एहि सामान्य दिशानिर्देशमे सुशासन, वित्तीय स्थिरता आ सुरक्षा, शैक्षिक परिणाम आ प्रकटीकरणक पारदर्शिता सम्मिलित होएत।

18.14. परोपकार आ जनहितैषी इच्छा राखए बला निजी उच्चतर शिक्षण संस्थानकेँ शुल्क निर्धारणकेँ प्रगतिशील शासन माध्यमसँ प्रोत्साहित कएल जाएत। विभिन्न प्रकारक संस्थानक लेल, ओकर प्रत्येक आधार पर, शुल्ककेँ एकटा उच्चतर सीमा केर तय करबाक लेल एकटा पारदर्शी तंत्र विकसित कएल जाएत जाहिसँ निजी संस्थान पर प्रतिकूल प्रभाव नहि पडए। यद्यपि तय नियम आ वृहद् नियामक व्यवस्थाकेँ आलोकमे अधिकाधिक छात्रकेँ फ्रीशिप आ छात्रवृत्ति प्रदान करबाक लेल निजी उच्चतर शिक्षा संस्थान केर प्रोत्साहित कएल जाएत। निजी उच्चतर शिक्षण संस्थान द्वारा निर्धारित सभ शुल्क या व्यय पारदर्शी रूपसँ आ पूर्ण रूपसँ कहल जाएत, आ कोनो छात्रकेँ नामांकनक दौरान एहि शुल्क/व्यय मे कोनो मनमानी वृद्धि नहि होएत। शुल्क निर्धारणक ई व्यवस्था उच्चतर शिक्षा संस्थान केर अपन सामाजिक जिम्मेदारीकेँ निर्वहनक संग किछु हद धरि निवेशक भरपाई सुनिश्चित करब होएत।

19. उच्चतर शिक्षा संस्थानक लेल प्रभावी प्रशासन आ नेतृत्व

19.1. ई प्रभावी प्रशासन आ नेतृत्वे अछि जे उच्चतर शिक्षा संस्थानकेँ उत्कृष्टता आ नवाचारक संस्कृतिकेँ निर्माणमे सक्षम बनबैत अछि। भारत सहित दुनिया भरिमे सभ विश्वस्तरीय संस्थानक सामान्य विशेषता वास्तवमे मजगूत स्वशासन आ संस्थागत नेतृत्व केर उत्कृष्ट योग्यता आधारित नियुक्ति रहल अछि।

19.2. ग्रेडेड प्रत्यायन आ ग्रेडेड स्वायत्ताक एकटा उपयुक्त प्रणालीक माध्यमसँ, 15 वर्षमे एकटा चरणबद्ध तरीकासँ, भारतक उच्चतर शिक्षण संस्थानक उद्देश्य नवप्रवर्तन आ उत्कृष्टता केर अनुशीलन करए बला संस्कृति स्वशासी संस्थान बनबाक होएत। उच्चतम गुणवत्ताक नेतृत्व सुनिश्चित करब आ उत्कृष्टताक संस्थागत संस्कृतिकेँ प्रोत्साहन देबाक लेल सभ उच्चतर शिक्षण संस्थानमे उपाय कएल जाएत। एहि तरहक पहल केर लेल तैयार संस्थाकेँ उपयुक्त ग्रेडेड प्रत्यायन प्राप्त भेला पर योग्य, सक्षम आ समर्पित व्यक्ति जिनकामे सिद्ध क्षमता आ प्रतिबद्धता केर एकटा मजगूत भावना होएत, केँ समूहसँ भेंट क' कए बोर्ड ऑफ़ गवर्नर्स (बीओजी) स्थापित कएल जाएत। कोनो संस्थाक बीओजी केर कोनो बाहरी हस्तक्षेपसँ मुक्त संस्थाक संचालित करब, संस्था केर प्रमुख सहित सभ नियुक्ति करब आ शासनक सम्बन्धमे सभ निर्णय लेबाक अधिकार होएत। एहन व्यापक विधान होएत जे पहिलका आन विधानक कोनो उल्लंघनकारी प्रावधान केँ बदलि देत जाहिमे बीओजी केर गठन, नियुक्ति, कामकाज केर नियम आ विनियम आ बीओजी केर भूमिका आ जिम्मेदारी सम्मिलित अछि। बोर्ड केर नव सदस्यक पहिचान बोर्ड द्वारा नियुक्त विशेषज्ञ समिति द्वारा कएल जाएत; आ नव सदस्यक चयन केवल बीओजी केर द्वारा कएल जाएत। सदस्यक चयन करैत काल न्यायसमताक सेहो ध्यान मे राखल जाएत। ई परिकल्पना कएल गेल अछि जे एहि प्रक्रियाक अवधिमे सभ उच्चतर शिक्षण संस्थान केँ प्रोत्साहन, समर्थन आ सुझाओ देल जाएत आ एकर उद्देश्य वर्ष 2035 धरि स्वायत्त बनबाक तथा एहन सशक्त बीओजी केर गठन करब होएत।

19.3. बीओजी सभ संगत रिकॉर्डक पारदर्शी स्व-प्रकटनक माध्यमसँ हितधारकक लेल जिम्मेदार आ जवाबदेह होएत। एहि राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा नियामक परिषद् (एनएचईआरसी) केर माध्यमसँ एचइसीआई द्वारा अनिवार्य सभ नियामक दिशानिर्देश केँ पूरा करबाक लेल जिम्मेदार होएत।

19.4. संस्थानमे सभ नेतृत्वपद आ संस्थान प्रमुखक लेल उच्चतर शैक्षणिक योग्यता बला व्यक्ति चुनल जाएत जे जटिल परिस्थिति मे प्रबंधन करबाक संग प्रशासनिक आ नेतृत्व क्षमताक प्रदर्शन केने होइथ। कोनो उच्चतर शिक्षण संस्थानक प्रमुखमे संवैधानिक मूल्य आ संस्थानक समग्र दृष्टिक संगे- संग एकटा मजगूत सामाजिक प्रतिबद्धता, सामूहिक कार्यमे विश्वास, विविधता, आ विभिन्न लोकक संग काज करबाक क्षमता, एकटा सकारात्मक दृष्टिकोण

हेबाक चाही। बीओजी द्वारा गठित एकटा कुशल विशेषज्ञ समिति (ईईसी) के नेतृत्वमे एकटा कठोर, निष्पक्ष, योग्यता-आधारित आ क्षमता-आधारित प्रक्रियाक माध्यमसँ बीओजी द्वारा चयन कएल जाएत। एकटा उपयुक्त सांस्कृतिक विकासकेँ सुनिश्चित करबाक लेल कार्यकालकेँ स्थिरता महत्वपूर्ण अछि, संगे-संग नेतृत्वक उत्तराधिकारीकेँ योजना बनाओल जाएत जाहिसँ ई सुनिश्चित कएल जा सकए कि कोनो संस्थाक प्रक्रियाकेँ परिभाषित करए बला नीक आचरण नेतृत्वमे बदलावक कारणेँ समाप्त नहि होइ; नेतृत्वमे परिवर्तन पर्याप्त अतिव्याप्तिक संग कएल जाएत, आ सुचारु बदलाव सुनिश्चित करबाक लेल पद रिक्त नहि रहत। उत्कृष्ट नेतृत्वकर्ताक पहिचान कएल जाएत आ हुनका जल्दी तैयार कएल जाएत, जे नेतृत्वक भूमिकामे एकरा सीढ़ी-दर सीढ़ी आगू बढ़ि सकताह।

19.5. चरणबद्ध तरीकासँ पर्याप्त धन, वैधानिक सशक्तिकरण आ स्वायत्तता प्रदान करबाक संग, सभ उच्चतर शिक्षण संस्थान, संस्थागत उत्कृष्टता, अपन स्थानीय समुदायक संग जुड़ाव आ वित्तीय ईमानदारी आ जवाबदेही केर उच्चतम मानकक प्रति प्रतिबद्धता प्रदर्शित करत। प्रत्येक संस्थान एकटा कार्यनीतिक संस्थागत विकास योजना बनाओत जेकर आधार पर संस्थान अपन आरंभ सभकेँ विकसित करत, अपन प्रगतिक आकलन करत आ ओहिमे निर्धारित लक्ष्य धरि पहुँचत, जे आगू केर सार्वजनिक निधि सभक लेल आधार बनि सकैत अछि। आईडीपी, बोर्डक सदस्य, संस्थागत नेतृत्व, संकाय, छात्र आ कर्मचारीकेँ संयुक्त भागीदारीक संग तैयार कएल जाएत।

भाग III. अन्य मुख्य विचारणीय मुद्दा

20. व्यावसायिक शिक्षा

20.1. पेशेवर सभकेँ तैयार करए बला शिक्षाक लेल ई अनिवार्य अछि जे ओकर पाठ्यक्रममे नैतिकता आ सार्वजनिक उद्देश्य केर महत्वक समावेश होइ, आ एकर संगे-संग ओहि विषय-विशेषक शिक्षा आ व्यावहारिक अभ्यास शिक्षा केर सेहो सम्मिलित कएल जाए। अन्य समस्त उच्चतर शिक्षा सँ जुड़ल विषयकेँ जेना एकर केंद्रमे सेहो तार्किक आ बहु-विषयक सोच, विमर्श, चर्चा, अनुसन्धान, आ नवाचारकेँ सम्मिलित कएल जेबाक चाही। एहि उद्देश्य केँ प्राप्त करबाक लेल ई आवश्यक अछि कि व्यावसायिक विकाससँ जुड़ल शिक्षा बांकी विषयसँ कटल या अलग-थलग नहि होइ।

20.2. एहि प्रकारेँ व्यावसायिक विकासक शिक्षा समग्र उच्चतर शिक्षा प्रणालीक एकटा अभिन्न अंग बनि जाएत। असगर काज करए बला कृषि विश्वविद्यालय, विधि विश्वविद्यालय, स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय, तकनीकी विश्वविद्यालय आ अन्य-विषयक असगर काज करए बला विश्वविद्यालयक उद्देश्य अपना आप केँ एकटा बहु-विषयक संस्थानक रूपमे विकसित करब हेबाक चाही जे कि एकटा समग्र आ बहु-विषयक शिक्षा उपलब्ध कराबए। व्यावसायिक या सामान्य शिक्षा प्रदान करए बला सभ संस्थान वर्ष 2030 धरि समेकित रूपसँ दुनू प्रकारक शिक्षा प्रदान करए बला संस्थान-समूह बनएबाक लक्ष्यक संग काज करत।

20.3. कृषि शिक्षा आ एकर संबद्ध विषयकेँ पुनर्जीवित कएल जाएत। ओना त' देशकेँ विश्वविद्यालयमे कृषि विश्वविद्यालयक प्रतिशत 9 % अछि मुदा कृषि आ संबद्ध विज्ञान विषयमे नामांकन उच्चतर शिक्षाकेँ कुल नामांकन केर 1 % सँ कम अछि। कुशल स्नातक आ तकनीशियन, नवीन अनुसंधान आ तकनीक तथा कार्य प्रक्रियासँ जुड़ल बाजार-आधारित विस्तारक माध्यमसँ कृषि उत्पादकता बढ़एबाक लेल ई आवश्यक अछि जे कृषि आ संबद्ध विषयक क्षमता आ गुणवत्ता दुनूकेँ उत्कृष्ट कएल जाए। सामान्य शिक्षा केर संग जुड़ैत कार्यक्रमक माध्यमसँ कृषि आ पशुचिकित्सा विज्ञानसँ जुड़ल पेशेवर सभक तैयारीमे तेजीसँ वृद्धि कएल जाएत। कृषि शिक्षाक प्रक्रिया केर एहन व्यावसायिक व्यक्ति सभक विकासक लेल परिवर्तित कएल जाएत जे स्थानीय ज्ञान, पारम्परिक ज्ञान, आ उभरैत तकनीककेँ बुझि सकए आ ओकर उपयोग क' सकए, आ एकर संगे-संग महत्वपूर्ण मुद्दा जेना कि भूमिका कम होइत उत्पादन शक्ति, जलवायु परिवर्तन, हमर सभक बढ़ैत आबादीक लेल पर्याप्त भोजनक आवश्यकता, आदि कए लेल

जागरूक होइ। ई आवश्यक अछि जे कृषि शिक्षा प्रदान करए बला संस्थानसँ स्थानीय समुदाय सीधा-सीधा लाभान्वित हो, एकर एकटा तरीका ई भ' सकैत अछि जे कृषि प्रौद्योगिकी पार्कक स्थापना करब जाहि सँ प्रौद्योगिकीय ऊष्मायन आ एकर प्रसार आ टिकाऊ तरीकाकेँ प्रोत्साहन भेटि सकए।

20.4. विधिक शिक्षाकेँ वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनएबाक लेल आवश्यकता अछि, संगे एहि क्षेत्रसँ संबंधित बेहतरिन प्रक्रिया, कार्यप्रणाली आ नव तकनीककेँ अपनाओल जाएत जेकरा सँ सभक लेल एकटा सही समय पर न्यायकेँ सुनिश्चित कएल जा सकए। संगे एकरा आर्थिक आ राजनीतिक न्याय केर संवैधानिक मुल्यसँ संवर्धित एवं ओकर सभक अलोकमे बनाओल जेबाक चाही आ लोकतंत्र, कानून केर शासन आ मानवाधिकारक माध्यमसँ राष्ट्रीय पुनर्निर्माणक दिशामे निर्देशित कएल जेबाक चाही। ई साक्ष्य-आधारित तरीकासँ, विधिक विचार प्रक्रिया केँ इतिहास, न्यायक सिद्धान्त, न्यायशास्त्रक अभ्यास आ अन्य संबंधित विषय केर उचित आ पर्याप्त प्रतिनिधित्व होइ। विधि केर शिक्षणक प्रस्तुति करए बला राज्य संस्थानक भविष्यक वकील आ न्यायधीशक लेल द्विभाषी शिक्षा केर प्रस्तुति पर विचार करबाक चाही जाहिमे एकटा भाषा अंग्रेजी आ दोसर ओहि राज्य के भाषा होइ जाहिमे ई विधिक शिक्षा संस्थान स्थित अछि।

20.5. स्वास्थ्य शिक्षाकेँ पुनर्कल्पित कएल जेबाक आवश्यकता अछि जाहिसँ शैक्षिक कार्यक्रमक अवधि, संरचना आ डिजाइन, स्नातक सभक द्वारा निभाओल जाए बला भूमिकाक अनुरूप भ' सकए। प्राथमिक देखरेख आ माध्यमिक अस्पतालमे कम करबाक लेल मुख्य रूपसँ नीक तरहसँ परिभाषित मापदंड पर छात्रकेँ नियमित अंतराल पर मूल्यांकन कएल जाएत। ई देखैत जे हमर सभक लोक स्वास्थ्य सेवामे बहुलतावादी विकल्पकेँ प्रयोग करैत अछि, हमर सभक स्वस्थ शिक्षा प्रणालीकेँ एकीकृत हेबाक चाही- जेकर अर्थ ई अछि कि एलोपैथिक चिकित्सा शिक्षाक सभ छात्रकेँ आयुर्वेद, योग आ प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध आ होमियोपैथी (आयुष) केर मूलभूत बोध हेबाक चाही, आ एहन अन्य सभ प्रकारकेँ चिकित्सासँ संबंधित विद्यार्थीक विषयमे सेहो लागू होएत। सभ प्रकारक स्वास्थ्य सेवा शिक्षामे निवारक स्वस्थ सेवा (प्रिवेंटिव हेल्थकेयर) आ सामुदायिक चिकित्सा (कम्युनिटी मेडिसिन) पर बेसी जोर देल जाएत।

20.6. तकनीकी शिक्षामे डिग्री आ डिप्लोमा कार्यक्रम सम्मिलित अछि। उदाहरणक लेल इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी, प्रबंधन, वास्तुकला, नगर योजना, फार्मसी, होटल प्रबंधन, आ कैटरिंग आदि जे भारतकेँ समग्र विकासक लेल महत्वपूर्ण अछि। एहि क्षेत्रमे ने केवल पूर्ण रूपसँ योग्य व्यक्ति सभक माँग जारी रहत, अपितु एहि क्षेत्रमे नवाचार अनुसन्धान सुनिश्चित करबाक लेल संबंधित उद्योग आ उच्चतर शिक्षा संस्थानक बीच घनिष्ठ सहयोगकेँ सेहो बेसी आवश्यकता रहत। एकर अतिरिक्त, समस्त मानवीय उद्यम आ प्रयास पर प्रौद्योगिकीक प्रभावसँ तकनीकी शिक्षा आ अन्य विषयक बीच अंतर समाप्त हेबाक सम्भावना बढ़ल जा रहल अछि। एहि प्रकार, तकनीकी शिक्षा सेहो बहु-विषयक शिक्षण संस्थान आ कार्यक्रमक भीतर प्रस्तुत कएल जाएत आ अन्य विषयक संग गहीर रूपसँ जुडबाक अवसर पर नवीकृत ध्यान केंद्रित करता भारतक स्वास्थ्य, पर्यावरण, आ दीर्घकालीन स्वस्थ जीवनमे एकर महत्वपूर्ण अनुप्रयोगक संग, जे युवाक लेल रोजगार संवर्धन हेतु अवर-स्नातक शिक्षा कार्यक्रमक हिस्सा बनाओल जाएत, अत्याधुनिक महत्वपूर्ण क्षेत्र जेना कि जीनोमिक अध्ययन, जैव अध्ययन, जैव प्रौद्योगिकी, नैनो प्रौद्योगिकी, तंत्रिका विज्ञान (न्यूरोसाइंस), केर संगे-संग तेजीसँ प्रमुखता ल' रहल कृत्रिम-बुद्धिमत्ता (आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस), 3डी मशीनिंग, पैघ डाटा विश्लेषण, आ यन्त्र अधिगम (मशीन लर्निंग) क्षेत्रमे पेशेवर युवाकेँ तैयार करब मे सेहो अग्रणी भूमिका निभेबाक चाही।

21. प्रौढ शिक्षा आ जीवनपर्यन्त सीखब

21.1. बुनियादी साक्षरता प्राप्त करब, शिक्षा प्राप्त करब आ जीवकोपार्जनक अवसर प्रत्येक नागरिकक मौलिक अधिकार अछि। साक्षरता आ बुनियादी शिक्षा कोनो व्यक्तिक वैयक्तिक, नागरिक, आर्थिक आ जीवनपर्यन्त शिक्षण अवसरकेँ एकटा नव दुनियाकेँ खोलि दैत अछि जे व्यक्तिक निजी आ नोकरहारा, दुनू स्तर पर आगू बढ़बा मे मदति करैत अछि। समाज आ देशक स्तर पर साक्षरता आ बुनियादी शिक्षा एकटा एहन शक्तिक रूपमे काज करैत अछि

जे विकास हेतु कएल जा रहल अन्य सभ प्रयासक सफलताक कतेको गुना बढ़ा दैत अछि। वैश्विक स्तर पर विभिन्न देशक आंकड़ा ई देखबैत अछि कि कोनो देशक साक्षरता दर आ ओकर प्रति व्यक्ति जीडीपीमे उच्चतर सह-संबंध होइत अछि।

21.2. संगे-संग, एकटा समुदाय केर गैर-साक्षर हेबाक कारण असंख्य नोकसान अछि, जाहिमे मूलभूत वित्तीय लेनदेन नहि क' सकब, प्रभारित मूल्य पर कीनल गेल समानक तुलना करब, नौकरी, ऋण, सेवा, आदिक लेल आवेदन करबाक लेल आवेदन भरब; समाचार मीडियामे सार्वजनिक परिपत्र आ लेखकें बुझब; व्यापारके सम्प्रेषित आ संचालित करबाक लेल पारम्परिक आ इलेक्ट्रॉनिक मेल केर उपयोग करब; अपन जीवन आ पेशा केर बेहतर बनएबाक लेल इंटरनेट आ अन्य प्रद्योगिकी केर उपयोग करब; दवाई, सड़क आदि पर दिशा आ सुरक्षा निर्देशकें बुझब; बच्चाकें ओकर शिक्षामे मदति करब; भारतक नागरिक रूपमे केकरो मूल अधिकार आ जिम्मेदारिक संबंधमे ज्ञान होएब; साहित्यिक काजक सराहना करबाक लेल; आ साक्षरताक आवश्यकतासँ जुड़ल माध्यम या उच्चतर उत्पादकता बला क्षेत्रमे रोजगार प्राप्त करबा मे असमर्थता सम्मिलित अछि। ई सूचीबद्ध क्षमता ओहि परिणामक सांकेतिक सूची अछि जेकरा प्रौढ शिक्षाक लेल नवाचारी उपायक रूपमे अपना क' प्राप्त कएल जा सकैत अछि।

21.3. भारत एवं विश्वभरिमे भेल व्यापक शोध अध्ययन आ विश्लेषण स्पष्ट रूपमे देखबैत अछि कि राजनीतिक इच्छाशक्ति, संगठनात्मक संरचना, उचित योजना, पर्याप्त वित्तीय सहायता आ स्वैच्छिक कार्यकर्ता केर उच्चतर गुणवत्तापूर्ण क्षमता संवर्धनक संगे-संग स्वयंसेवा आ सामुदायिक भागीदारी आ एकजुट होएब, प्रौढ साक्षरता कार्यकर्ता केर सफलताक प्रमुख कारक अछि। स्वैच्छिक कार्यकर्ता सभक पर आधारित साक्षरता कार्यक्रमक परिणामस्वरूप नहि केवल समुदायक वयस्कजनक साक्षरतामे वृद्धि होइत अछि अपितु एहिसँ समुदायमे सभ बच्चाक शिक्षा हेतु मांग सेहो बढ़ैत अछि, संगे सकारात्मक सामाजिक बदलाव आ न्याय केर लेल समुदाय केर भागीदारीमे सेहो बढ़ोतरी होइत अछि। वर्ष 1988 मे जखन राष्ट्रीय साक्षरता मिशनक शुरुआत कएल गेल त' ई मुख्यतः लोकक स्वैच्छिक भागीदारी आ सहयोग पर आधारित रहए, जेकर कारणे देश 1991-2011 के दशककें दौरान महिला सभक बीच साक्षरता सहित सम्पूर्ण साक्षरतामे उल्लेखनीय वृद्धि भेल आ तत्कालीन सामाजिक मुद्दा पर चर्चा आ विचार विमर्श सेहो शुरू भेल।

21.4. प्रौढ शिक्षाक लेल सुदृढ़ एवं नवाचारी सरकारी पहलकदमी, खास क' कए समुदाय केर भागीदारीकें सुगम बनायब तथा प्रौद्योगिकी केर सुचारु आ लाभकारी एकीकरणकें शीघ्रतिशीघ्र लागू कएल जाएत जाहि सँ 100 % साक्षरताकें सभसँ महत्वपूर्ण उद्देश्यकें प्राप्ति जल्दिए भ' सकए।

21.5. सभसँ पहिने एनसीईआरटी केर एकटा नव आ सु-समर्थित घटक संगठन द्वारा एकटा उत्कृष्ट प्रौढ शिक्षण पाठ्यचर्या प्रारूप विकसित कएल जाएत जे प्रौढ शिक्षाक लेल समर्पित होइ जाहि सँ साक्षरता, संख्यात्मकता बुनियादी शिक्षण, व्यावसायिक कौशल आदिक लेल उत्कृष्ट पाठ्यचर्या बनएबाक लेल एनसीईआरटी केर मौजदा विशेषज्ञताक प्रति अनुरूप विकसित आ ओहिसँ सामंजस्य राखैत प्रौढ शिक्षाकें पाठ्यचर्या प्रारूप तैयार होइत। एहि पाठ्यचर्यात्मक प्रारूपमे कम-सँ-कम निम्न पांच प्रकारक कार्यक्रम सम्मिलित होएत, जाहिमे सँ प्रत्येकक परिणाम स्पष्ट रूप सँ परिभाषित कएल जाएत (क) बुनियादी साक्षरता आ संख्या-ज्ञान (ख) महत्वपूर्ण जीवन कौशल (जेना वित्तीय साक्षरता, डिजिटल साक्षरता, व्यावसायिक कौशल, स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता, शिशु पालन एवं शिक्षा आ परिवार कल्याण), (ग) व्यावसायिक कौशल विकास (स्थानीय रोजगार प्राप्तिमे दृष्टिमे राखिकए) (घ) बुनियादी शिक्षा (प्रारंभिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तरक समकक्ष) एवं (ङ) सतत शिक्षा (जेना कला, विज्ञान, तकनीकी, संस्कृति, खेल, मनोरंजन आदि कए आलावा स्थानीय शिक्षार्थीक रुचि वा लाभक दृष्टिसँ अन्य विषय, उदाहरणक लेल महत्वपूर्ण जीवन कौशल पर बेसी उन्नत सामग्री, प्रौढ शिक्षा कोर्स)। एहन करैत ई ध्यान राखल जाएत जे कतेको मामिलामे बच्चाक संग इस्तेमाल कएल जाए बला तरीका आ सामग्रीक जगह पर वयस्कक लेल भिन्न प्रकारक शिक्षण-अधिगम पद्धति आ सामग्रीक आवश्यकता अछि।

21.6. दोसर, उपयुक्त बुनियादी ढाँचा सुनिश्चित कएल जाएत जाहिसँ सभ इच्छुक प्रौढ सभकेँ प्रौढ शिक्षा आ आजीवन सीखब प्राप्त भ' सकए। एहि दिशामे एकटा महत्वपूर्ण आरंभ विद्यालयक समयक बाद आ सप्ताहांत पर विद्यालय/विद्यालय परिसरक उपयोग, प्रौढ शिक्षा पाठ्यक्रमक लेल सार्वजनिक पुस्तकालय स्थान, जतए धरि संभव हो आईसीटीसँ सुसज्जित होएत आ अन्य सामुदायिक भागीदारी आ संवर्धन गतिविधिक लेल कएल जेबाक होएत। विद्यालय शिक्षा, उच्चतर शिक्षा, प्रौढ शिक्षा आ व्यवसायिक शिक्षाक लेल आन सामुदायिक आ स्वयंसेवी गतिविधिक लेल अवसरचनाक साझाकरण, भौतिक आ मानव दुनू संसाधनक कुशल उपयोग केर सुनिश्चित करबाक संगे- संग एहि चारि प्रकारक शिक्षा आ ओकर बीच तालमेल बनएबाक लेल महत्वपूर्ण होएत। एहि कारणसँ, उच्चतर शिक्षण संस्थान, व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र आदि अन्य सार्वजनिक संस्थानक भीतर प्रौढ शिक्षा केंद्रकेँ सेहो सम्मिलित कएल जा सकैत अछि।

21.7. तेसर, प्रौढ शिक्षा पाठ्यक्रम प्रारूपमे वर्णित सभ पाँच प्रकारक प्रौढ शिक्षाक लेल परिपक्व शिक्षार्थीकेँ पाठ्यक्रमक रूपरेखा प्रदान करबाक लेल प्रशिक्षक/शिक्षक केर आवश्यकता होएत। एहि प्रशिक्षक सभकेँ प्रौढ शिक्षा केंद्रमे शिक्षण गतिविधिक व्यवस्थित आ नेतृत्व करबाक संगे- संग स्वयंसेवक प्रशिक्षकक संग समन्वय करबाक लेल राष्ट्रीय, राज्य, आ जिला- स्तरीय संसाधन सहायता संस्थान द्वारा प्रशिक्षित कएल जाएत। समुदायसँ योग्य सदस्य सभ, उच्चतर शिक्षा संस्थान सभक समुदायसँ जुड़बाक मिशनक अंतर्गत उच्चतर शिक्षा संस्थान सभसँ सेहो प्रोत्साहित कएल जाएत जे ओ लघु अवधिक प्रशिक्षण कोर्स करबाक लेल आ स्वैच्छिक कार्यकर्ताक रूपमे की त' व्यापक स्तर पर प्रौढ साक्षरता प्रशिक्षकक रूपमे या निजी शिक्षकक रूपमे काज करथि, आ राष्ट्रक लेल कएल गेल एहि महत्वपूर्ण सेवाक लेल हुनका सम्मानित सेहो कएल जाएत। राज्य, साक्षरता आ प्रौढ शिक्षाक दिशामे प्रयास केर प्रोत्साहित करबाक लेल गैर-सरकारी संगठन आ अन्य सामुदायिक संगठनक संग सेहो काज करत।

21.8. चारिम, समुदायक सदस्य प्रौढ शिक्षा कार्यक्रममे भाग लिअए, ई सुनिश्चित करबाक लेल सभ प्रयास कएल जाएत। जे सामाजिक कार्यकर्ता समुदायमे जा कए गैर-नामांकित एवं विद्यालय छोड़ि दइ बला छात्रकेँ पता लगबैत अछि आ हुनक सहभागिता केर सुनिश्चित करैत अछि, हुनकासँ सेहो एहिठाम अभिभावक, किशोर आ अन्य इच्छुक लोकक आंकड़ा एकत्रित करबाक अनुरोध कएल जाएत जे प्रौढ शिक्षाक अवसर (शिक्षार्थी वा प्रशिक्षक/ट्यूटरक रूपमे) मे रुचि राखैत होइ। एकर उपरांत सामाजिक परमार्शदाता/कार्यकर्ता एहन लोकक सूचना स्थानीय प्रौढ शिक्षा केंद्रकेँ देत एवं हुनका एहिसँ जोड़त। विज्ञापन आ घोषणा आ गैर-सरकारी संगठन आ अन्य स्थानीय संगठनक गतिविधि एवं विभिन्न पहलकदमी केर माध्यमसँ सेहो प्रौढ शिक्षाक अवसरकेँ व्यापक प्रचार कएल जाएत।

21.9. पाँचम, समुदाय एवं शिक्षण संस्थानमे पढ़बाक आदति विकसित करबाक लेल पुस्तक धरि पहुँच आ उपलब्धता उत्कृष्ट करब आवश्यक अछि। ई नीति अनुशंसा करैत अछि जे सभ समुदाय एवं शिक्षण संस्थान- विद्यालय, महविद्यालय आ विश्वविद्यालय पुस्तकालय केर मजगूत आ आधुनिक कएल जाएत जाहि सँ एहन पुस्तकक समुचित आपूर्ति सुनिश्चित होए जे कि सभ शिक्षार्थी- जाहिमे निशक्तजन एवं विशेष आवश्यकता बला शिक्षार्थी सेहो सम्मिलित अछि, कए आवश्यकता आ रुचिक होइ। केंद्र एवं राज्य सरकार ई सुनिश्चित करत जे पूरा देशमे सभकेँ- जाहिमे सामाजिक आर्थिक रूपसँ वंचित लोकक संगे-संग ग्रामीण आ दूरदराजक क्षेत्रमे छल बला सेहो सम्मिलित अछि, पुस्तक धरि पहुँच हो आ पुस्तकक मूल्य सभक खरीद सकबाक सामर्थ्यक अंदर होइ । सार्वजनिक एवं निजी दुनू प्रकारक एजेसी/संस्थान पुस्तकक गुणवत्ता एवं आकर्षण बेसी नीक बनएबाक रणनीति पर काज करत। पुस्तककेँ ऑनलाइन उपलब्धता बेसी नीक आ डिजिटल पुस्तकालय केर बेसी व्यापक बनएबाक लेल डेग उठाओल जाएत। समुदाय एवं शिक्षण संस्थानमे जीवंत पुस्तकालय केँ बनायब एवं ओकर सफल संचालन सुनिश्चित करबाक लेल, यथोचित संख्यामे पुस्तकालय कर्मिक उपलब्धता होइ एवं हुनक व्यावसायिक विकासक लेल उचित व्यवसाय मार्ग बनएबाक लेल आ कैरियर प्रबंधन निर्मित करबाक आवश्यकता अछि। अन्य प्रयासमे सम्मिलित होएत-विद्यालयक पुस्तकालयकेँ समृद्ध करब, वंचित क्षेत्रमे ग्रामीण पुस्तकालय एवं पठन कक्षा केर स्थापना करब, भारतीय भाषामे पठन सामग्री उपलब्ध कराएब, बाल पुस्तकालय एवं चल-पुस्तकालय खोलब,

पूरा भारत मे आ विषय पर सामाजिक पुस्तक क्लब केर स्थापना ओ शिक्षण संस्थान आ पुस्तकालयमे आपसी सहयोग बढ़ायब।

21.10. अंततः उपरोक्त सभ पक्ष सभकेँ मजगूत करबाक लेल प्रौद्योगिकीक लाभ उठाओल जाएत। सरकारी आ परोपकारी प्रयास सभक संगे-संग क्राउडसोर्सिंग आ प्रतिभागिताक माध्यमसँ प्रौढ शिक्षाक लेल गुणवत्तापूर्ण प्रौद्योगिकी आधारित विकल्प, जेना ऐप, ऑनलाइन कोर्स/मॉड्यूल उपग्रह -आधारित टीवी चैनल, ऑनलाइन पोथी, आईसीटीसँ सुसज्जित पुस्तकालय आ प्रौढ शिक्षा केंद्र आदि विकसित कएल जाएत। कतेको मामिलामे गुणवत्तापूर्ण प्रौढ शिक्षाक संचालन ऑनलाइन वा मिश्रित मोडमे कएल जा सकैत अछि।

22. भारतीय भाषा, कला, आ संस्कृतिक संवर्धन

22.1. भारत संस्कृतिक समृद्ध भंडार अछि- जे हज़ारो वर्षमे विकसित भेल अछि आ एहि ठामक कला, साहित्य, कृति, प्रथा, परंपरा आ भाषायी अभिव्यक्ति, कलाकृति, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहरक स्थल इत्यादिमे परिलक्षित होइत देखाइत अछि। भारतमे भ्रमण, भारतीय अतिथि सत्कारक अनुभव लेब, भारतकेँ सुन्दर हस्तशिल्प एवं हाथसँ बनल कपडाकेँ कीनब, भारतक प्राचीन साहित्यकेँ पढब, योग एवं ध्यान केर अभ्यास करब, भारतीय दर्शनशास्त्रसँ प्रेरित होएब, भारतक अनुपम पाबनि-तिहारमे भाग लेब, भारतक वैविध्यपूर्ण संगीत एवं कला के प्रशंसा करब आ भारतीय फिल्म देखब आदि एहिठाम किछु चीज अछि जेकर माध्यमसँ दुनिया भरि के करोड़ो लोक प्रतिदिन एहि सांस्कृतिक विरासतमे सम्मिलित होइत अछि, एकर आनंद उठबैत अछि आ लाभ प्राप्त करैत अछि। इएह सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक संपदा अछि जे भारतक पर्यटन नाराक अनुसार भारत केर वास्तवमे "अतुल्य भारत" बनबैत अछि। भारत केर एहि सांस्कृतिक संपदाक संरक्षण, संवर्धन एवं प्रसार, देशक उच्चतर प्राथमिकता हेबाक चाही किएक त' ई देशक पहिचानक संगे-संग एकर अर्थव्यवस्थाक लेल सेहो बहुत महत्वपूर्ण अछि।

22.2. भारतक कला आ संस्कृतिक संवर्धन ने केवल राष्ट्र अपितु व्यक्ति लेल सेहो महत्वपूर्ण अछि। बच्चामे अपन पहिचान आ अपनत्वक भाव आ अन्य संस्कृति आ पहिचानक सराहना केर भाव उत्पन्न करबाक लेल सांस्कृतिक जागरूकता आ अभिव्यक्ति सन प्रमुख क्षमताक बच्चामे विकसित करब आवश्यक अछि। बच्चामे अपन सांस्कृतिक इतिहास, कला, भाषा एवं परंपराक भावना आ ज्ञान केर विकास द्वारा एकटा सकारात्मक सांस्कृतिक पहिचान आ आत्मसम्मान बच्चा सभमे निर्मित कएल जा सकैत अछि। अतः व्यक्तिगत एवं सामाजिक कल्याणक लेल सांस्कृतिक जागरूकता आ अभिव्यक्तिक योगदान महत्वपूर्ण अछि।

22.3. संस्कृतिक प्रसार करबाक सभसँ प्रमुख माध्यम कला अछि। कला-सांस्कृतिक पहिचान, जागरूकताकेँ समृद्ध करबाक लेल आ समुदाय केर उन्नति करबाक अतिरिक्त व्यक्तिमे संज्ञानात्मक आ सृजनात्मक क्षमताकेँ बढ़ाबाक लेल आ व्यक्तिगत प्रसन्नताके बढ़ेबाक लेल चिन्हल जाएत अछि, व्यक्तिगत प्रसन्नता/कल्याण, संज्ञानात्मक विकास आ सांस्कृतिक पहिचान ओ महत्वपूर्ण कारण अछि जेकरा लेल सभ प्रकारक भारतीय कला, प्रारंभिक बाल्यावस्था देखरेख आ शिक्षा सँ शुरू करैत शिक्षाक सभ स्तर पर छात्रकेँ प्रदान कएल जेबाक चाही।

22.4. भाषा, निःसंदेह, कला एवं संस्कृतिसँ अटूट रूपसँ जुडल अछि। विभिन्न भाषा, दुनियाकेँ भिन्न तरीकासँ देखैत अछि आ एहि लेल, मूल रूपसँ कोनो भाषाकेँ बाजए बला व्यक्ति अपन अनुभवकेँ कोना बुझैत अछि ओकरा कोन प्रकारेँ ग्रहण करैत अछि ई ओहि भाषा केर संरचना सँ तय होइत अछि। विशेष रूपसँ कोनो संस्कृतिक लोकक दोसर संग गप करब जेना परिवारक सदस्य, प्राधिकार प्राप्त व्यक्ति, समकक्ष, अपिरिचित आदि भाषासँ प्रभावित होइत अछि आ वार्ता तौर-तरिककेँ सेहो प्रभावित करैत अछि। अभिव्यक्ति, अनुभवक ज्ञान आ एके टा भाषाक व्यक्तिगत गपसपमे अपनत्व, ई संस्कृति केर प्रतिबिम्ब आ दस्तावेज अछि। अतः संस्कृति हमर सभक भाषामे समाहित अछि। साहित्य, नाटक, संगीत, फिल्म आदिकेँ रूपमे कलाक पूर्ण रूपसँ प्रशंसा करब बिना भाषाक संभव

नहि अछि। संस्कृतिक संरक्षण, संवर्धन आ प्रसारक लेल, हमरा सभकेँ ओहि संस्कृतिक भाषाक संरक्षण आ संवर्धन करबाक होएत।

22.5. दुर्भाग्य सँ, भारतीय भाषाक समुचित ध्यान आ देखरेख नहि भेट सकल अछि जेकरा कारणेँ देश विगत 50 वर्षमे 220 भाषा लुप्त क' देलक अछि। यूनेस्को 197 भारतीय भाषाकेँ 'लुप्तप्राय' घोषित केने अछि। विभिन्न भाषा विलुप्त हेबाक कगार पर अछि विशेषतः ओ भाषा जेकर लिपि नहि छैक। जखन कोनो समुदाय वा जनजाति केर ओहि भाषाक बाजए बला वरिष्ठ सदस्यक मृत्यु होइत छैक त' प्रायः ओ भाषा सेहो ओकरा संगे समाप्त भ' जाएत अछि आ प्रायः एहि समृद्ध भाषा/संस्कृति केर अभिव्यक्ति सभकेँ संरक्षित या ओकर अभिलेख करबाक लेल कोनो ठोस कार्रवाई या उपाय नहि कएल जाइत अछि।

22.6. एकर अतिरिक्त, ओ भारतीय भाषा सेहो, जे आधिकारिक रूपसँ लुप्तप्रायक सूची मे नहि अछि- जेना आठम अनुसूची केर 22 टा भाषा, ओहो कतेको प्रकारक दिक्कतक सामना क' रहल छैक। भारतीय भाषाक शिक्षण आ सीखबाक लेल विद्यालय आ उच्चतर शिक्षा केर प्रत्येक स्तरक संग एकीकृत करबाक आवश्यकता अछि। भाषा प्रासंगिक आ जीवंत बनल रहए एहि लेल ई भाषा सभमे उच्चतर गुणवत्तापूर्ण अधिगम आ छपाई सामग्री केर सतत प्रवाह बनल रहबाक चाही- जेना पाठ्य पुस्तक, अभ्यास पुस्तक, वीडियो, नाटक, कविता, उपन्यास, पत्रिका आदि सम्मिलित अछि। भाषाक शब्दकोष आ शब्द भंडार केर आधिकारिक रूपसँ लगातार अद्यतन होइत रहबाक चाही आ ओकर व्यापक प्रसार सेहो करबाक चाही जाहिसँ समसामयिक मुद्दा आ अवधारणा पर एहि भाषामे चर्चा कएल जा सकए। विश्वभरिक देश द्वारा- अंग्रेजी, फ्रेंच, हिब्रू, कोरियाई, जापानी, आदि भाषा मे एहि प्रकारक अधिगम सामग्री, छपाई सामग्री बनायब आ विश्वक अन्य भाषाक महत्वपूर्ण सामग्रीक अनुवाद कएल जाएत अछि आ शब्दभंडार केर लगातार अद्यतन कएल जाएत अछि। मुदा, अपन भाषाकेँ जीवंत आ प्रासंगिक बनाओल राखब मे मदति केर लेल एहन अधिगम सामग्री, छपाई सामग्री आ शब्दकोष बनएबाक मामिलामे भारतक गति बहुत मंद रहल अछि।

22.7. एकर अतिरिक्त, कतेको उपाय कएलाक बादो देशमे भाषा सीखबए बला कुशल शिक्षकक अत्यधिक कमी रहल अछि। भाषा शिक्षणमे सुधार कएल जेबाक चाही जाहि सँ ओ बेसी अनुभव-आधारित बनए आ ओहि भाषामे गपसप आ अन्तः क्रिया करबाक क्षमता पर केंद्रित होइ ने कि केवल भाषाक साहित्य, शब्दभंडार आ व्याकरण पर। भाषाकेँ बेसी व्यापक रूपमे गपसप आ शिक्षण-अधिगमक लेल प्रयोगमे आनबाक चाही।

22.8. विद्यालयी बच्चामे भाषा, कला, आ संस्कृतिकेँ प्रोत्साहन देबाक लेल, कतेको प्रयास केर चर्चा अध्याय 4 मे कएल गेल अछि जाहिमे -सभ विद्यालयी स्तर पर संगीत, कला आ हस्तकौशल पर बल देब; बहुभाषिकता केर प्रोत्साहन करबाक लेल त्रिभाषा-सूत्रक शीघ्र क्रियान्वन, संगे-संग जखन संभव हो मातृभाषा/स्थानीय भाषामे शिक्षण आ बेसी अनुभव- आधारित भाषा शिक्षण; उत्कृष्ट स्थानीय कलाकार, लेखक, हस्तकलाकार, आ अन्य विशेषज्ञ केर स्थानीय विशेषज्ञताकेँ विभिन्न विषयमे विशिष्ट प्रशिक्षकक रूपमे विद्यालयसँ जोडब; पाठ्यचर्या, मानविकी, विज्ञान, कला, हस्तकला, आ खेलमे पारम्परिक भारतीय ज्ञानक समावेशन करब; जखन एहन करब प्रासंगिक होइ, पाठ्यचर्यामे बेसी लोच, विशेष कए माध्यमिक विद्यालयमे आ उच्चतर शिक्षामे, जाहिसँ विद्यार्थी एकटा आदर्श संतुलन कायम राखैत अपना लेल कोर्सक चुनाव क' सकए जेकरासँ ओ स्वयं केर सृजनात्मक, कलात्मक, सांस्कृतिक आ अकादमिक आयामक विकास क' सकए आदि सम्मिलित अछि।

22.9. उच्चतर शिक्षा आ ओहिसँ आगू केर शिक्षाक संग डेग-सँ-डेग मिलाबैत बादमे उल्लिखित प्रमुख प्रयासकेँ संभव बनएबाक लेल आगू सेहो बहुत रास डेग सभ उठाओल जाएत। पहिल, ऊपर उल्लिखित सभ कोर्स केँ विकसित करब आ ओकर शिक्षण, शिक्षक आ संकाय केर उत्कृष्ट समूहक विकास करबाक होएत। भारतीय भाषा, तुलनात्मक साहित्य, सृजनात्मक लेखन, कला, संगीत, दर्शनशास्त्र आदिक सशक्त विभाग आ कार्यक्रमकेँ देश भरिमे शुरू कएल जाएत आ ओकरा विकसित कएल जाएत आ एहि सभ विषयमे डिग्री सभ विकसित कएल जाएत जाहिमे 4-वर्षीय दोहरा डिग्री सहो सम्मिलित अछि। ई विभाग आ कार्यक्रम, विशेष रूपसँ उच्चतर योग्यताक भाषा शिक्षकक

एकटा पैघ कैडर केँ विकसित करएमे मदति करत, संगे- संग कला, संगीत, दर्शनशास्त्र आ लेखनक शिक्षक केँ सेहो तैयार करत जिनक देश भरिमे एहि नीतिकेँ क्रियान्वित करबाक लेल तुरंत आवश्यकता होएत। एनआरएफ एहि क्षेत्रमे गुणवत्तापूर्ण अनुसन्धानक लेल वित्त मुहैया कराओत। स्थानीय संगीत, कला, भाषा आ हस्त-शिल्प केँ प्रोत्साहित करबाक लेल आ ई सुनिश्चित करबाक लेल जे छात्र जतए अध्ययन क' रहल होइ आ ओहि ठामक संस्कृति आ स्थानीय ज्ञान केँ बुझि सकए, उत्कृष्ट स्थानीय कलाकार आ हस्त-शिल्पमे कुशल व्यक्तिकेँ अतिथि शिक्षकक रूपमे नियुक्ति कएल जाएत। प्रत्येक उच्चतर शिक्षण संस्थान, प्रत्येक विद्यालय आ विद्यालय परिसर ई प्रयास करत जे कलाकार ओहि ठाम निवास करए जाहिसँ छात्र कला, सृजनात्मकता आ क्षेत्र/देश केर समृद्धिकेँ बेसी नीक रूपसँ बुझि सकए।

22.10. बेसी उच्चतर शिक्षण संस्थान आ उच्चतर शिक्षाकेँ आ बेसी कार्यक्रममे मातृभाषा/स्थानीय भाषाकेँ शिक्षाक माध्यमक रूपमे उपयोग कएल जाएत आ/वा कार्यक्रम केँ द्विभाषी रूपमे चलाओल जाएत जाहि सँ पहुँच आ सकल नामांकन अनुपात, दुनूमे बढ़ोतरी भ' सकए आ एकरा संगे सभ भारतीय भाषा केर मजबूती, उपयोग, आ जीवन्तताकेँ प्रोत्साहन भेटि सकए। भारतीय भाषाकेँ शिक्षाक माध्यमक रूपमे प्रयोग करब आ/वा कार्यक्रम केर द्विभाषी रूपमे चलेबाक लेल निजी प्रशिक्षण संस्थान केर सेहो प्रोत्साहित कएल जाएत आ प्रोत्साहन देल जाएत। चारि वर्षीय दोहरा डिग्री कार्यक्रम केँ दू- भाषामे चलएबासँ सेहो मदति भेटत; जेना कि देश भरिक विद्यालयमे विज्ञानकेँ दू भाषामे पढाबए बला विज्ञान आ गणित शिक्षकक कैडरक प्रशिक्षणमे।

22.11. उच्चतर शिक्षा व्यवस्था अनुवाद आ विवेचना, कला आ संग्रहालय प्रशासन, पुरातत्व, कलाकृति संरक्षण, ग्राफिक डिजाइन आ वेब डिजाइन केर उच्चतर गुणवत्तापूर्ण कार्यक्रम आ डिग्रीक सृजन सेहो कएल जाएत। अपन कला आ संस्कृतिकेँ संरक्षित करब आ प्रोत्साहन देबाक लेल विभिन्न भारतीय भाषामे उच्चतर गुणवत्ता बला सामग्री विकसित करब, कलाकृतिक संरक्षण करब, संग्रहालय आ धरोहर या पर्यटन स्थल केर चलेबाक लेल उच्चतर योग्यता प्राप्त व्यक्तिक विकास करब जाहिसँ पर्यटन उद्योगकेँ सेहो बहुत मजबूती भेटि सकए।

22.12. ई नीति एहि गपकेँ मानैत अछि जे शिक्षार्थीकेँ भारतक समृद्ध विविधताक प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त हेबाक चाही। एकर अर्थ छात्र सभ द्वारा देशक विभिन्न हिस्सामे भ्रमण सन सरल गतिविधि केर सम्मिलित करबाक होएत जाहिसँ ने केवल पर्यटन केँ बढ़ावा भेटत, अपितु भारतक विभिन्न क्षेत्रक विविधता, संस्कृति, परंपरा आ ज्ञानक बोध आ सराहना होएत। 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' केर तहत एहि दिशामे देशक 100 पर्यटन स्थलक पहिचान कएल जाएत, जतए शिक्षण संस्थान छात्रकेँ एहि क्षेत्रक बारेमे ज्ञानवर्धन करबाक लेल स्थल आ ओकर इतिहास, वैज्ञानिक योगदान, परंपरा, देशज साहित्य आ ज्ञान आदि केर अध्ययन करबाक लेल पठाओत।

22.13. उच्चतर शिक्षामे कला, भाषा आ मानविकी केर क्षेत्रमे एहन कार्यक्रम बनएबासँ रोजगारक एहन गुणवत्तापूर्वक अवसर होएत जे एहि योग्यताक प्रभावकारी उपयोग क' सकत। एखनहुँ हजारक संख्यामे अकादमिक, संग्रहालय, कला वीथिका आ धरोहर स्थल अछि जेकरा सुचारु रूपसँ संचालित करबाक लेल योग्य व्यक्तिक आवश्यकता अछि। जहिना योग्य व्यक्ति सभसँ रिक्त पदकेँ भरल जाएत, आ बेसी कलाकृतिकेँ जुटाओल जाएत आ संरक्षित कएल जाएत, एकर अतिरिक्त संग्रहालय (जाहिमे आभाषी (वर्चुअल) संग्रहालय/ई संग्रहालय सहित वीथिका आ धरोहर स्थल हमर सभक विरासत आ भारतक पर्यटन उद्योगकेँ संरक्षित राखि सकत।

22.14. भारत शीघ्रहि अनुवाद आ विवेचनासँ सम्बंधित अपन प्रयासक विस्तार करत, जाहिसँ सर्वसाधारण केर विभिन्न भारतीय आ विदेशी भाषामे उच्चतर गुणवत्ता बला शिक्षण सामग्री आ अन्य महत्वपूर्ण लिखित आ मौखिक सामग्री उपलब्ध भ' सकए। एकरा लेल एकटा *इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रांसलेशन एंड इंटरप्रेटेशन (आईआईटीआई)* केर स्थापना कएल जाएत। एहि प्रकारक संस्थान देशक लेल महत्वपूर्ण सेवा प्रदान करबाक संगे बहुत रास बहु-भाषा आ विषय विशेषज्ञ आ अनुवाद आ व्याख्या विशेषज्ञ केर नियुक्ति करत जाहिसँ सभ भाषाकेँ प्रसारित आ प्रचारित करबा मे मदति भेटए। आईआईटीआई केर अपन अनुवाद आ व्याख्या करबाक प्रयास सभकेँ सुचारु रूपसँ चलएबाक लेल प्रौद्योगिकी केर व्यापक उपयोग करत। आईआईटीआई समयक संग स्वाभाविक रूपसँ उन्नति करत

आ जेना जेना अर्हता प्राप्त उम्मीदवार केर माँग बढत, संस्थानकेँ उच्चतर शिक्षण संस्थान सहित, देश भरिक विभिन्न स्थानमे खोलल जा सकत जाहिसँ अन्य अनुसन्धान विभागक संगे सहभागिता सुगम भ' सकए।

22.15. संस्कृत भाषाक वृहद् आ महत्वपूर्ण योगदान आ विभिन्न विधा आ विषयकेँ साहित्य, सांस्कृतिक महत्त्व, वैज्ञानिक प्रकृतिक चलते संस्कृतकेँ केवल संस्कृत पाठशाला आ विश्वविद्यालय धरि सीमित नहि राखैत एकरा मुख्य धारामे आनल जाएत- विद्यालय सभमे त्रि-भाषा सूत्रक तहत एकटा विकल्पक रूपमे, संगे- संग उच्चतर शिक्षामे सेहो। एकरा पृथक रूपसँ नहि पढाओल जाएत अपितु रुचिपूर्ण आ नवाचारी तरीकासँ आ अन्य समकालीन आ प्रासंगिक विषय जेना गणित, खगोलशास्त्र, दर्शनशास्त्र, नाटक विद्या, योग आदि सँ जोडल जाएत। अतः एहि नीति केर बाकी हिस्सासँ संगतता राखैत, संस्कृत विभाग जे संस्कृत आ संस्कृत ज्ञान-व्यवस्था केर शिक्षण आ उत्कृष्ट अंतर्विषयी अनुसन्धानक संचालन करैत अछि, ओकरा सम्पूर्ण नवीन बहु-विषय उच्चतर शिक्षा व्यवस्थाकेँ भीतर स्थापित/मजगूत कएल जाएत। जँ छात्र चाहए त' संस्कृत उच्चतर शिक्षाक स्वाभाविक हिस्सा बनि जाएत। शिक्षा आ संस्कृत विषयमे चारि वर्षीय बहु-विषयक बी.एड. डिग्री केर द्वारा मिशन मोडमे पूरा देशक संस्कृत शिक्षककेँ पैघ संख्यामे व्यावसायिक शिक्षा प्रदान कएल जाएत।

22.16. भारत एहि तरहँ सभ शास्त्रीय भाषा आ साहित्यक अध्ययन करए बला अपन संस्थान आ विश्वविद्यालय केर विस्तार करत, आ ओहि हजारक हजार पाण्डुलिपिकेँ एकत्रित करब, संरक्षित करब, अनुवाद करब आ ओकर अध्ययन करबाक ठोस प्रयास करत, जेकरा पर एखन धरि ध्यान नहि गेल अछि। एहि प्रकारसँ सभ संस्थान आ विश्वविद्यालय, जाहिमे शास्त्रीय भाषा आ साहित्य पढाओल जा रहल अछि, ओकर विस्तार कएल जाएत। एखन धरि उपेक्षित रहल लाखो अभिलेखक संग्रह, संरक्षण, अनुवाद आ अध्ययन केर दृढ प्रयास कएल जाएत। संस्कृत आ सभ भारतीय भाषाकेँ संस्थान आ विभाग केर उल्लेखनीय रूपसँ मजगूत कएल जाएत, छात्रक नव बैचके पैघ संख्यामे अभिलेख आ अन्य विषयक संगे ओकर अन्तर्सम्बन्धक अध्ययन केँ समुचित प्रशिक्षण देल जाएत। शास्त्रीय भाषा केर संस्थान अपन स्वायत्तताकेँ बनाओल राखबाक लेल विश्वविद्यालयक संगे सम्बद्ध होएब या ओकरा मे विलयक प्रयास करत जाहि सँ एकटा सुदृढ आ गहन बहुविषयी कार्यक्रमक हिस्साक तौर पर संकाय काज क' सकए आ छात्र प्रशिक्षण प्राप्त क' सकए। समान उद्देश्य प्राप्त करबाक लेल, भाषाकेँ समर्पित विश्वविद्यालय सेहो बहुभाषायी बनत; जतए प्रासंगिक होइत जे शिक्षा आ ओकर भाषा मे बी. एड. दोहरा डिग्री प्रदान करत जाहि सँ ओहि भाषाकेँ उत्कृष्ट भाषा शिक्षक तैयार भ' सकए। एकर अतिरिक्त, ई सेहो प्रस्तावित अछि कि भाषाक लेल एकटा नव संस्थान स्थापित कएल जाएत। विश्वविद्यालय परिसर मे एकटा पाली, फ़ारसी, आ प्राकृत भाषाकेँ राष्ट्रीय संस्थान स्थापित कएल जाएत। जाहि संस्थान आ विश्वविद्यालयमे भारतीय कला, कला इतिहास आ भारत विद्याकेँ अध्ययन कएल जा रहल अछि ओतए सेहो एहि प्रकारक डेग उठाओल जाएत। एहि सभ क्षेत्रमे उत्कृष्ट अनुसन्धानके एनआरएफ द्वारा सहयोग प्रदान कएल जाएत।

22.17. शास्त्रीय, आदिवासी, आ लुप्तप्राय भाषा सहित सभ भारतीय भाषाकेँ संरक्षित आ प्रोत्साहन देबाक प्रयास नव उत्साहक संग कएल जाएत। प्रौद्योगिकी आ जनता निधि, लोकक व्यापक भागीदारीक संग, एहि प्रयासमे महत्वपूर्ण भूमिका निभाओत।

22.18. भारतीय संविधानक आठम अनुसूचीमे उल्लिखित प्रत्येक भाषाक लेल अकादमी स्थापित कएल जाएत जाहिमे सभ भाषासँ श्रेष्ठ विद्वान एवं मूल रूपसँ ओ भाषा बाजए बला लोक सम्मिलित रहत जाहिसँ नवीन अवधारणाकेँ सरल मुद्रा सटीक शब्द भंडार तय कएल जा सकए, एवं नियमित रूपसँ नवीनतम शब्दकोष जारी कएल जा सकए। विश्वमे कतेको भाषा अन्य भाषाक सफल प्रयासक सदृश) एहि शब्दकोषक निर्माणक लेल ई अकादमी एक दोसरसँ परामर्श लेत, किछु मामिलामे आम जनताक सर्वश्रेष्ठ सुझावकेँ सेहो लेत, जखन संभव होए, साझा शब्दकेँ अंगीकृत करबाक प्रयास सेहो कएल जाएत। ई शब्दकोष व्यापक रूपसँ प्रसारित कएल जाएत जाहि सँ शिक्षा, पत्रकारिता, लेखन, भाषण आदिमे प्रयोग कएल जा सकए एवं पोथीक रूपमे आ ऑनलाइन उपलब्ध होएत। अनुसूची 8 केर भाषाक लेल एहि अकादमीकेँ केंद्र सरकार द्वारा राज्य सरकारक संग परामर्श क' कए

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

अथवा ओकरा संगे मिल कए स्थापित कएल जाएत। एहि प्रकारँ व्यापक पैमाना पर बाजल जाए बला अन्य भारतीय भाषाक अकादमी केंद्र वा/आ राज्य सरकार द्वारा स्थापित कएल जाएत।

22.19. सभ भारतीय भाषा आ ओकरासँ संबंधित समृद्ध स्थानीय कलाक लेल भाषा आ ओकर कला आ संस्कृतिक वेब प्लेटफॉर्म/पोर्टल/विकिपीडियाक माध्यमसँ दस्तावेजीकरण कएल जाएत। प्लेटफॉर्म मे शब्दकोष, रिकॉर्डिंग, आ अन्य सामग्री होएत जेना लोक द्वारा भाषा बाजब (विशेष कए बूढ़ लोक द्वारा) कथा सुनायब, कविता पाठ करब, नाटक खेलब, लोक गायन आ नृत्य करब आदि। देश भरिक लोकक एहि प्रयासमे योगदान देबाक लेल आमंत्रित कएल जाएत जाहिसँ ओ एहि प्लेटफॉर्म/पोर्टल/विकिपीडिया पर प्रासंगिक सामग्री जोड़ि सकथि। विश्वविद्यालय आ ओकर शोध टीम एक दोसराक संगे देश भरिक समुदायक संगे काज करत जाहि सँ एहि प्लेटफॉर्म केँ आर समृद्ध कएल जा सकए। संरक्षणक एहि प्रयास आ एहिसँ जुड़ल अनुसन्धान परियोजना, उदहारणक लेल इतिहास, पुरातत्व, भाषा विज्ञान आदिकेँ एनआरएफ द्वारा वित्तीय सहायता देल जाएत।

22.20. स्थानीय मास्टर्स आ/वा उच्चतर शिक्षा व्यवस्थाक अंतर्गत भारतीय भाषा, कला एवं संस्कृतिक अध्ययनक लेल सभ बएसक लोक कए लेल छात्रवृत्ति केर स्थापना कएल जाएत। भारतीय भाषा केर संवर्धन आ प्रसार तखन संभव अछि जखन ओकरा नियमित रूपसँ आ शिक्षण-अधिगम केर लेल प्रयोग कएल जाए। भारतीय भाषा सभमे, विभिन्न श्रेणीमे उत्कृष्ट कविता आ गद्य केर लेल पुरस्कारक स्थापना क' कए प्रोत्साहन केर डेग उठाओल जाएत जाहि सँ सभ भारतीय भाषामे जीवंत कविता, उपन्यास, पाठ्य पुस्तक, कथेतर साहित्यक निर्माण आ पत्रकारिता सन अन्य काज सुनिश्चित कएल जा सकए। भारतीय भाषामे प्रवीणता केर रोजगार अर्हताक मानदंडक एकटा हिस्साक रूपमे सम्मिलित कएल जाएत।

23. प्रौद्योगिकीक उपयोग आ एकीकरण

23.1. भारत, सूचना आ संचार प्रौद्योगिकी आ अंतरिक्ष सन अन्य अत्याधुनिक क्षेत्रमे वैश्विक स्तर पर नेतृत्व क' रहल अछि। डिजिटल इंडिया अभियान पूरा देशकेँ एकटा डिजिटल रूपसँ सशक्त समाज आ ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्थामे परिवर्तित करबामे मदति क' रहल अछि। एक दिस एहि रूपांतरमे महत्वपूर्ण शिक्षाक संग प्रौद्योगिकी सेहो शैक्षिक प्रक्रिया आ परिणामक सुधारमे महत्वपूर्ण भूमिका निभाओत। एहि प्रकारँ, सभ स्तर पर प्रौद्योगिकी आ शिक्षाक बीच द्विदिशात्मक संबंध अछि।

23.2. तकनीककेँ बुझए बाला आ प्रयोग करए बला शिक्षक आ उद्यमी, जाहिमे छात्र उद्यमी सेहो सम्मिलित अछि केर वास्तविक रचनात्मकताक संगे- संग प्रौद्योगिकी विकासकेँ तीव्र गति केँ देखैत ई निश्चित अछि की प्रौद्योगिकी, शिक्षाकेँ कतेको तरीकासँ प्रभावित करत; जाहिमे सँ वर्तमानमे केवल किछुएक संबंधमे अनुमान लगाओल जा सकैत अछि। नव प्रौद्योगिकीक क्षेत्र जेना की कृत्रिम बौद्धिकता (आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस), मशीन लर्निंग, ब्लॉक चैन, हस्त संचालित कंप्यूटर उपकरण, छात्रक विकासक लेल अडाप्टिव कंप्यूटर टेस्टिंग, आ अन्य प्रकारक सॉफ्टवेयर द्वारा ने केवल ई परिवर्तन होएत जे छात्र की सीखैत अछि अपितु ई सेहो परिवर्तन होइत जे ओ कोना सीखैत अछि। एहि प्रकार एहि क्षेत्रमे भविष्यमे सेहो प्रौद्योगिकी आ शैक्षिक दुनू दृष्टिसँ व्यापक शोधकेँ आवश्यकता होएत।

23.3. शिक्षाक विभिन्न आयामकेँ बेसी नीक बनएबाक लेल प्रौद्योगिकी केर सभ प्रकारक प्रयोग आ एकीकरणकेँ समर्थन देल जाएत आ अंगीकरण कएल जाएत, बशर्ते कि वृहद् स्तर पर लागू करबासँ पहिने ओकरा प्रासंगिक सन्दर्भमे ठोस आ पारदर्शी ढंगसँ आकलन कएल गेल होए। विद्यालयी आ उच्चतर शिक्षा दुनू क्षेत्रमे शिक्षण, मूल्यांकन, नियोजन, प्रशासन आदिमे सुधार हेतु। प्रौद्योगिकी केर उपयोग पर विचारकेँ मुक्त आदान- प्रदान केर एकटा मंच प्रदान करबाक लेल एकटा स्वायत्त निकायक रूपमे राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी मंच (एनईटीएफ) केर निर्माण कएल जाएत। एनईटीएफ केर उद्देश्य प्रौद्योगिकीकेँ अपनायब आ कोनो क्षेत्र विशेषमे ओकर उपयोग संबंधी निर्णय केर सुगम बनायब होएत। एनटीएफ ई काज शैक्षिक संस्थानक प्रमुख, केंद्रीय आ राज्य सरकार आ

अन्य हितधारककें, नवीनतम ज्ञान आ अनुसन्धानक संगे- संग सर्वोत्तम कार्यप्रणालीकें एक-दोसरसँ साझा करब आ परामर्शक अवसर प्रदान कए करत। एनईटीएफ केर निम्नलिखित काज होएत:

- क. प्रौद्योगिकी आधारित हस्तक्षेपमे केंद्र एवं राज्य सरकारक एजेंसीकें स्वतंत्र एवं प्रमाण आधारित परामर्श उपलब्ध करायब;
- ख. शैक्षिक प्रौद्योगिकीमे बौद्धिक एवं संस्थागत क्षमताक निर्माण;
- ग. एहि क्षेत्रमे रणनीतिक रूपसँ अत्यंत प्रभावी काजक परिकल्पना करब; आर
- घ. अनुसन्धान आ नवाचारक लेल नव दिशाकें स्पष्ट करब।

23.4. शैक्षिक प्रौद्योगिकीक तीव्रतासँ परिवर्तित हेबाक क्षेत्रमे प्रासंगिक बनल रहबाक लेल एनईटीएफ विविध स्रोतसँ, जाहिमे शैक्षिक प्रौद्योगिकी केर अविष्कारकें आ ओकर प्रौद्योगिकी केर प्रयोग करए बला लोक सम्मिलित अछि सँ प्राप्त प्रामाणिक डेटा केर नियमित प्रवाहकें बनाकए राखत आ शोधकर्ताक विविध वर्ग संगे मिलि कए एहि डेटा सभक विश्लेषण करत। ज्ञान आ ओकर प्रयोग तथा एहि दिशामे सतत नव सृजन केर प्रोत्साहन देबाक लेल, एनईटीएफ अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी शोधकर्ता, उद्यमी आ प्रौद्योगिकीक उपयोगमे आनि रहल व्यक्तिक विचारसँ लाभान्वित हेबाक लेल कतेको क्षेत्रीय आ राष्ट्रीय सम्मलेन, कार्यशाला आदि केर आयोजन करत।

23.5. प्रौद्योगिकी हस्तक्षेप सभक मुख्य उद्देश्य शिक्षण-अधिगम आ आकलन प्रक्रियाकें बेहतर बनायब, शिक्षक सभक तैयारी आ व्यावसायिक विकासमे सहयोग करब, शैक्षिक पहुँचकें बढ़ायब, शैक्षिक नियोजन, प्रबंधन आ प्रशासन केर सरल आ व्यवस्थित करब जाहिमे प्रवेश, उपस्थिति, मूल्यांकन सम्बन्धी प्रक्रिया आदि सम्मिलित अछि।

23.6. उपरोक्त सभ उद्देश्यक प्राप्ति हेतु सभ स्तर पर शिक्षक आ विद्यार्थीक लेल बहुत रास शैक्षिक सॉफ्टवेयर विकसित कएल जाएत आ ओकरा उपलब्ध कराओल जाएत। सभ एहि तरहक सॉफ्टवेयर सभ प्रमुख भारतीय भाषामे उपलब्ध होएत आ सुदूर क्षेत्रमे रहए बला छात्र, आ दिव्यांग विद्यार्थी समेत सभक उपयोगक लेल उपलब्ध होएत। सभ राज्य आ एनसीईआरटी, सीआईईटी, सीबीएसई, एनआईओएस आ अन्य निकाय/संस्थान द्वारा विभिन्न क्षेत्रीय भाषा सभमे विकसित शिक्षण आ अधिगम संबंधी ई-कंटेंट दीक्षा केर मंच पर देल जाएत। एहि मंच पर उपलब्ध ई-कंटेंटक उपयोग शिक्षकक व्यवसाय संबंधी विकासक लेल कएल जा सकैत अछि। दीक्षाक संगे-संग अन्य शैक्षिक प्रौद्योगिकी संबंधी उपायकें संवर्धन आ प्रसारक लेल सीआईईटी कें मजगूत बनाओल जाएत। विद्यालयमे शिक्षकक लेल उपयुक्त उपकरण उपलब्ध कराओल जाएत जाहि सँ शिक्षक अपन शिक्षण-अधिगम अभ्यासमे ई-सामग्री केर उपयुक्त रूपसँ सम्मिलित क' सकए। प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षा मंच, जेना दीक्षा/स्वयम, सम्पूर्ण विद्यालयी आ उच्चतर शिक्षामे समन्वित कएल जाएत आ एकरामे उपयोगकर्ता सभ द्वारा रेटिंग/समीक्षा सम्मिलित होएत। जाहिसँ सामग्रीक बनओनिहार प्रयोक्ता-अनुकूल आ गुणवत्तापूर्ण सामग्री बनाओल जा सकए।

23.7. सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्थाकें अनिवार्यतः रूपसँ रूपांतरित करबा मे तेजी सँ उभरैत परिवर्तनशील प्रौद्योगिकी पर सेहो विशेष ध्यान देबाक आवश्यकता अछि। जखन 1986/1992 मे राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनाओल गेल रहए, तखन इंटरनेटक वर्तमान क्रान्तिकारी प्रभावकें अनुमान लगायब कठिन रहए। हमर सभक वर्तमान शिक्षा प्रणाली केर एहि तीव्र आ युगांतकारी परिवर्तनकें सामना करबाक असमर्थता एहि तेजीसँ प्रतिस्पर्धी होइत दुनियामे हमसभ (व्यक्तिगत रूपसँ आ एकटा राष्ट्रक रूपमे) खतरनाक आ हानिकारक स्थिति केर दिस जा रहल अछि। उदाहरणक लेल, आई जखन कंप्यूटर तथ्यात्मक ज्ञानक मामिलामे मनुखकें बहुत पाछू छोड़ि देने अछि, तखनहुँ हमर सभक शिक्षा व्यवस्था, उच्चतर स्तरक दक्षता केर विकासक स्थान पर, अपन विद्यार्थी आ शिक्षक पर सभ स्तर पर एहन ज्ञानकें अत्यधिक बोझ दैत रहैत अछि।

23.8. एहि नीतिकेँ एहन समयमे तैयार कएल गेल अछि जखन कृत्रिम बुद्धिमता (आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस) 3डी/7डी वर्चुअल रियलिटी सन निश्चित परिवर्तनकारी प्रौद्योगिकी केर विकास भ' रहल अछि। जेना- जेना कृत्रिम बुद्धिमता-आधारित पूर्वानुमानक लागत कम होइत जाएत, कृत्रिम बुद्धिमता कुशल पेशेवरक बराबरी करए लागत आ ओकरा सँ आगू निकलि जाएत आ डॉक्टर सन आन पेशेवर सभक लेल, पूर्वानुमान लगेबाक काजमे मूल्यवान सहायक सिद्ध होएत। कृत्रिम बुद्धिमता केर परिवर्तन आनबाक क्षमता स्पष्ट अछि जाहि पर त्वरित प्रतिक्रियाक लेल शिक्षा व्यवस्थाकेँ तैयार राखए पड़तैक। एनईटीएफ केर स्थायी काजमे सँ एक, उभरैत प्रौद्योगिकी केर ओकर क्षमता आ परिवर्तन आनबाक अनुमानित समय सीमाक आधार पर वर्गीकृत करब आ समय समय पर ओकर विश्लेषण कए मानव संसाधन विकास मंत्रालयक समक्ष प्रस्तुत करबाक होएत। एहि सूचनाक आधार पर मानव संसाधन विकास मंत्रालय औपचारिक रूपसँ एहन प्रौद्योगिकीकेँ चिह्नित करत जेकरा उद्भवक लेल शिक्षा प्रणाली सँ प्रतिक्रिया आवश्यक होएत।

23.9. मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा नवीन परिवर्तनकारी प्रौद्योगिकीकेँ औपचारिक रूपसँ स्वीकार करबाक प्रतिक्रिया स्वरूप, राष्ट्रीय अनुसन्धान फाउंडेशन द्वारा प्रौद्योगिकीक क्षेत्रमे अनुसन्धानक प्रारम्भ या विस्तार कएल जाएत। कृत्रिम बुद्धिमता (एआई) केर संदर्भमे एनआरएफ त्रि-आयामी दृष्टिकोण अपना सकैत अछि : (क) कोर आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस अनुसन्धानकेँ आगू बढ़ायब (ख) उपयोग- आधारित अनुसन्धान केर विकास आ प्रयोग आ (ग) स्वास्थ्य, कृषि आ जलवायु संकट सन वैश्विक संकटक चुनौतीक सामना करबाक लेल कृत्रिम बुद्धिमताक उपयोग करैत अंतर्राष्ट्रीय अनुसन्धानक प्रयासकेँ प्रारम्भ करब।

23.10. उच्चतर शिक्षण संस्थान ने केवल परिवर्तनकारी प्रौद्योगिकी पर अनुसन्धानमे सक्रिय भूमिका निबाहत बल्कि अत्याधुनिक क्षेत्रमे आरम्भिक निर्देशात्मक सामग्री आ पाठ्यक्रम, ऑनलाइन पाठ्यक्रम सहित, सेहो तैयार करबाक संगे-संगे पेशेवर शिक्षा सन विशिष्ट क्षेत्रमे ओकर प्रभावक आकलन सेहो करत। जखन प्रौद्योगिकी एक स्तरक परिपक्वता प्राप्त क' लेत, हजारक हजार छात्रकेँ संगे उच्चतर शिक्षा संस्थान एहि प्रकारक शिक्षण आ कौशल निर्माणक काजकेँ बढ़ाएबाक लेल आदर्श स्थितिमे होएत, जाहिमे रोजगारपरक तैयारीक लेल लक्षित प्रशिक्षणक प्रयास सेहो सम्मिलित रहत। परिवर्तनकारी प्रौद्योगिकी किछु नौकरीकेँ निरर्थक बना देत, अतः रोजगार उत्पन्न करब आ बनाओल रखबाक लेल स्किलिंग आ डी-स्किलिंग केर प्रति प्रभावी आ गुणवत्तापूर्ण दृष्टिकोण महत्वपूर्ण होएत। संस्थान केर कौशल आ उच्चतर शिक्षाक संगे एकीकृत कएल जा सकए बला प्रशिक्षण देबाक लेल संस्थागत आ गैर- संस्थागत भगीदारीकेँ मंजूरी देबाक स्वायत्तता होएत, जेकरा कौशल आ उच्चतर शिक्षण संबंधी रूपरेखाक संगे एकीकृत कएल जाएत।

23.11. विश्वविद्यालयक उद्देश्य मशीन-लर्निंग सन मूल क्षेत्र, बहु-विषयक "AI+X" आ व्यावसायिक क्षेत्र (जेना स्वास्थ्य, कृषि, विधि) मे पीएच-डी आ स्नातकोत्तर कार्यक्रम प्रदान करब होएत। ई 'स्वयम' सन मंचक सहायतासँ एहि क्षेत्रमे आधिकारिक पाठ्यक्रमकेँ विकसित कए ओकर प्रसार क' सकैत अछि। जल्दीसँ ग्रहण करबाक लेल, एचईआई एहि ऑनलाइन पाठ्यक्रमकेँ स्नातक आ व्यावसायिक कार्यक्रममे पारंपरिक शिक्षणक संगे मिश्रित क' सकैत अछि। उच्चतर शिक्षा संस्थान कृत्रिम बुद्धिमता केर सहायता प्रदान करबाक लेल कम विशेषज्ञताक मांग बला क्षेत्र, जेना डेटा एनोटेशन, इमेज क्लासिफिकेशन आ स्पीच ट्रांस्क्रिप्शन, मे लक्षित प्रशिक्षण सेहो द' सकैत अछि। विद्यालयक विद्यार्थीकेँ भाषा सीखबाक प्रयासकेँ भारतक विविध भाषा सभक लेल स्वाभाविक भाषा प्रसंस्करण केर प्रोत्साहन देबाक प्रयासक संगे जोड़ल जाएत।

23.12. जेना-जेना परिवर्तनकारी प्रौद्योगिकी उभरि रहल अछि, विद्यालयी आ अग्रिम शिक्षा एकर अत्यंत शक्तिशाली प्रभावक बारेमे आम जनताकेँ जागरूकता बढ़ाबए मे सहायता करत आ एकर संगे एहिसँ संबंधित मुद्दा सभकेँ सेहो सोझराओत। एहि प्रौद्योगिकीसँ संबंधित मुद्दा पर एकटा सुविचारित सार्वजनिक सहमति बनएबाक लेल ई जागरूकता आवश्यक अछि। विद्यालय स्तर पर अध्ययन हेतु चर्चा नैतिक आ समसामयिक मुद्दामे

एनईटीएफ/एमएचआरडी द्वारा चिह्नित अत्यंत प्रभावशाली प्रौद्योगिकी पर चर्चा केर सेहो सम्मिलित कएल जाएत। सतत शिक्षा हेतु उचित निर्देशात्मक एवं विमर्शकर्ता सामग्री सेहो तैयार कएल जाएत।

23.13. कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित प्रौद्योगिकीक लेल डेटा एकटा महत्वपूर्ण इंधनक समान अछि, आ गोपनीयताक मुद्दा पर, डाटा-संधारण, डाटा-संरक्षण आदिसँ जुड़ल सुरक्षा, कानून आ मानककें प्रति जागरूकता बढ़ायब अति आवश्यक अछि। संगे कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित प्रौद्योगिकी केर विकास आ प्रयोगसँ जुड़ल नैतिक मुद्दाकें उठायब सेहो आवश्यक अछि। शिक्षा एहि मुद्दा पर जागरूकता उत्पन्न करबाक प्रयासमे महत्वपूर्ण भूमिका निभाओत। अन्य परिवर्तनकारी प्रौद्योगिकी सन स्वच्छ आ अक्षय ऊर्जा, जल संरक्षण संवहनीय खेती, पर्यावरण संरक्षण आ अन्य हरित उपाय आदि जे हमर सभक जीवन-यापन आ छात्र सभक शिक्षा प्रदान करबाक तरीका पर प्रभाव देबाक क्षमता राखैत अछि, एहि पर सेहो शिक्षण क्षेत्रमे प्राथमिक रूपसँ ध्यान देल जाएत।

24. ऑनलाइन आ डिजिटल शिक्षा-प्रौद्योगिकीक न्यायसम्मत उपयोग सुनिश्चित करब

24.1. नव परिस्थिति आ वास्तविकताक लेल नव प्रयास अपेक्षित अछि। संक्रामक रोग आ वैश्विक महामारीमे हालमे भेल वृद्धिकें देखैत ई आवश्यक भ' गेल अछि जे जखन आ जतए शिक्षाक पारंपरिक आ व्यक्ति-विशेष साधन संभव नहि होइ ओतए हमसभ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केर वैकल्पिक साधनक संगे तैयार होइ। एहि संबंधमे, नव शिक्षा नीति, 2020, प्रौद्योगिकी केर संभावित चुनौतीकें स्वीकार करैत ओकरासँ भेटए बला लाभक महत्व पर सेहो ध्यान केंद्रित करैत अछि। ई निर्धारित करबाक लेल जे ऑनलाइन/डिजिटल शिक्षणक हानिकें कम करैत हमसभ कोना ओहिसँ लाभ उठा सकैत छी, सावधानीपूर्वक आ उपयुक्त रूपसँ तैयार कएल गेल अध्ययन करब होएत। संगे-संगे सभकें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करबासँ संबंधित वर्तमान आ भावी चुनौती सभक सामना करबाक लेल मौजूदा डिजिटल मंच आ क्रियान्वित आईसीटी-आधारित प्रयासकें अनुकूल आ विस्तारित करए पड़त।

24.2. तथापि ऑनलाइन/डिजिटल शिक्षाक लाभ तखन धरि नहि उठाओल जा सकैत अछि जखन धरि डिजिटल इंडिया अभियान आ किफायती कंप्यूटिंग उपकरणकें उपलब्धता सन ठोस प्रयासक माध्यमसँ डिजिटल अंतर केर समाप्त नहि कएल जाएत। ई आवश्यक अछि जे ऑनलाइन आ डिजिटल शिक्षाक लेल प्रौद्योगिकी केर उपयोग समानताक सरोकारकें पर्याप्त रूपसँ संबोधित कएल जाए।

24.3. प्रभावशाली ऑनलाइन प्रशिक्षक बनएबाक लेल शिक्षकक उपयुक्त प्रशिक्षण आ विकास हेबाक चाही। पहिनेसँ ई मानल नहि जा सकैत अछि जे पारम्परिक कक्षामे एकटा नीक शिक्षक अछि से स्वचालित रूपसँ चलए बला एकटा ऑनलाइन कक्षा मे सेहो एकटा नीक शिक्षक सिद्ध होएत। अध्यापनमे आवश्यक परिवर्तनक अतिरिक्त, ऑनलाइन आकलनक लेल सेहो एकटा अलग दृष्टिकोणक आवश्यकता होइत अछि। पैघ स्तर पर ऑनलाइन परीक्षा आयोजित करबामे कतेको चुनौती अछि, जाहिमे ऑनलाइन परिवेशमे पूछल जाए बला प्रश्नक प्रकारसँ संबंधित सीमा, नेटवर्क आ बिजलीकें व्यवधानसँ जुझब आ अनैतिक प्रथाकें रोकब सम्मिलित अछि। किछु प्रकारक पाठ्यक्रम/विषय, जेना प्रदर्शन कला आ विज्ञान व्यावहारिक ऑनलाइन/डिजिटल शिक्षा क्षेत्रमे सीमा अछि; जेकरा नवीन उपायक संगे किछु सीमा धरि दूर कएल जा सकैत अछि। एकर आलावा, जखन धरि ऑनलाइन शिक्षाकें अनुभवात्मक आ गतिविधि-आधारित शिक्षक संगे मिश्रित नहि कएल जाएत, तखन धरि ई सीखबाक सामाजिक, भावात्मक आ साइकोमोटर आयाम पर सीमित दृष्टि बला एकटा स्क्रीन-आधारित शिक्षा मात्र टा बनि जाएत।

24.4. डिजिटल प्रौद्योगिकी केर उद्भव आ विद्यालयसँ ल' कए उच्चतर शिक्षा धरि सभ स्तर पर शिक्षण सीखबाक लेल प्रौद्योगिकी केर उभरैत महत्वकें देखैत- ई नीति निम्नलिखित प्रमुख पहल केर अनुशांसा करैत अछि:

- क. ऑनलाइन शिक्षाक लेल पायलट अध्ययन: ऑनलाइन शिक्षाक हानिकें कम करैत ओहि शिक्षाक संगे एकीकृत करबाक लाभ केर मूल्यांकन करबाक लेल आ छात्रकें उपकरणक आदति, ई-कंटेंट केर सभसँ पसंदीदा प्रारूप आदि जेना संबंधित विषयकें अध्ययन करबाक लेल सेहो एकर संगे-संगे प्रमुख आद्यायन

संचालित करबाक लेल एनईटीएफ, सीआईईटी, एनआईओएस, इगू, आईआईटी, एनआईटी आदि सन उपयुक्त एजेसी केर पहिचान कएल जाएत। एहि पायलट अध्ययनक परिणामकेँ सार्वजनिक रूपसँ सूचित कएल जाएत आ निरंतर सुधारक लेल एकर उपयोग कएल जाएत।

- ख. डिजिटल मूलभूत संरचना:** भारतक क्षेत्रफल, विविधता, जटिलता आ उपकरण प्रवेशक समाधान करबाक लेल शिक्षाक क्षेत्रमे खुजल, परस्पर, विकासशील, सार्वजनिक डिजिटल संरचनाक निर्माण करबाक आवश्यकता अछि, जेकर उपयोग कतेको मंच आ बिन्दु समाधान द्वारा कएल जा सकैत अछि। एहिसँ ई सुनिश्चित होएत कि प्रौद्योगिकी आधारित समाधान प्रौद्योगिकीमे तेजीसँ प्रगतिक संग पुरान नहि भ' जाए।
- ग. ऑनलाइन शिक्षण मंच आ उपकरण:** शिक्षार्थीक प्रगति केर निगरानीक लेल शिक्षककेँ सहायक उपकरणक एकटा संरचित, उपयोगकर्ता अनुकूल, विकसित संग्रह प्रदान करबाक लेल स्वयम, दीक्षा जेना उपयुक्त मौजूदा ई-लर्निंग प्लेटफॉर्मक विस्तार कएल जाएत। वर्तमान महामारी ई स्पष्ट क' देलक अछि जे ऑनलाइन कक्षाक आयोजनक लेल दू-तरफा वीडियो आ दू-तरफा-ऑडियो इंटरफ़ेस सन उपकरण एकटा वास्तविक आवश्यकता अछि।
- घ. सामग्री निर्माण, डिजिटल रिपॉजिटरी आ प्रसार:** शोधशास्त्र, सीखबा सँ संबंधित खेल, सतत अनुकरण, संवर्धित वास्तविकता आ आभासी वास्तविकता, के निर्माण सहित कंटेंट केर एकटा डिजिटल कोष विकसित कएल जाएत, जाहिमे प्रभावशीलता आ गुणवत्ताक लेल उपयोगकर्ता द्वारा मूल्यांकन करबाक लेल एकटा स्पष्ट सार्वजनिक प्रणाली होएत। छात्रक लेल मनोरंजन आधारित अधिगमक लेल उपयुक्त उपकरण जेना ऐप, स्पष्ट सञ्चालन निर्देशक संगे कतेको भाषा सभमे भारतीय कला आ सांस्कृतिक एकीकरण आदि सेहो बनाओल जाएत। छात्र केँ ई-सामग्रीक प्रसार करबाक लेल एकटा विश्वसनीय मदति कएनिहार तंत्र प्रदान कएल जाएत।
- ङ. डिजिटल अंतरकेँ कम करब :** एहि तथ्य केँ देखैत जे एखन सहो जनसंख्याक एकटा पैघ हिस्सा एहन अछि, जेकर डिजिटल पहुँच अत्यधिक सीमित अछि, मौजूदा जनसंचार माध्यम जेना टेलिविज़न, रेडियो, सामुदायिक रेडियो केर उपयोग टेलीकास्ट आ प्रसारणक लेल पैघ स्तर पर कएल जाएत। एहि तरहक शैक्षिक कार्यक्रमकेँ छात्र सभक बदलैत आवश्यकता के पूरा करबाक लेल विभिन्न भाषा 24/7 उपलब्ध कराओल जाएत। सभ भारतीय भाषामे सामग्री पर विशेष ध्यान देल जाएत आ एहि पर विशेष बल देल जाएत कि जतए धरि संभव होइ, शिक्षक आ छात्र धरि डिजिटल सामग्री ओकरा सीखबाक भाषामे पहुँच बना सकए।
- च. आभासी प्रयोगशाला:** आभासी प्रयोगशाला(वर्चुअल लैब) बनएबाक लेल, 'दीक्षा, स्वयम आ स्वयमप्रभा' सन मौजूदा ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म केर उपयोग कएल जाएत जाहिसँ सभ छात्रकेँ गुणवत्तापूर्ण व्यावहारिक आ प्रयोग-आधारित अनुभवक समान अवसर प्राप्त होइ। एसईडीजी छात्र आ शिक्षक केर पहिनेसँ देल गेल सामग्री बला टेबलेट सन उपयुक्त डिजिटल उपकरण पर्याप्त रूपसँ देबाक संभावना पर विचार कएल जाएत आ ओकरा विकसित कएल जाएत।
- छ. शिक्षक सभक लेल प्रशिक्षण आ प्रोत्साहन:** शिक्षककेँ शिक्षार्थी-केंद्रित अध्यापनमे गहन प्रशिक्षण देल जाएत आ ई सेहो कहल जाएत जे ओ ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्म आ उपकरणक उपयोग कए उच्चतर गुणवत्ता बला ऑनलाइन सामग्रीक स्वयं सृजन करय। छात्र सभमे एक दोसरासँ आ सामग्रीके संगे सहयोग स्थापित करबाक लेल शिक्षकक भूमिका पर जोर देल जाएत।
- ज. ऑनलाइन मूल्यांकन आ परीक्षा:** उपयुक्त निकाय, जेना कि प्रस्तावित राष्ट्रीय मूल्यांकन केंद्र वा 'परख', विद्यालय बोर्ड, एनटीए आ अन्य चिह्नित निकाय मूल्यांकन रूपरेखाकेँ निर्धारित करत आ कार्यान्वित करत जाहिमे दक्षता, पोर्टफोलियो, रूब्रिक्स, मानकीकृत मूल्यांकन आ मूल्यांकन विश्लेषण केर संरचना

सम्मिलित होएत। एकैसम सदीक कौशल पर ध्यान केंद्रित करैत शिक्षा प्रौद्योगिकीक उपयोग क' कए मूल्यांकनक नव तरीकाक अध्ययन कएल जाएत।

- झ. **सीखबाक मिश्रित मॉडल:** डिजिटल शिक्षा आ शिक्षणकें प्रोत्साहन देबाक संगे संग, परंपरागत व्यक्तिगत रूपसँ सोझा-सोझी सीखबाक महत्वकें सेहो पूर्ण रूपसँ स्वीकार कएल जाएत अछि। तदनुसार, विभिन्न विषयक लेल सीखबाक विभिन्न मिश्रित प्रभावी मॉडल, उपयुक्त प्रतिकृतिक लेल चिन्हित कएल जाएत।
- ञ. **मानककें पूरा करब:** जेना-जेना ऑनलाइन/डिजिटल शिक्षा पर शोध सोझा आवि रहल अछि, एनईटीएफ आ शिक्षाशास्त्रक मानक स्थापित करत। ई मानक राज्य, बोर्ड, विद्यालय, आ विद्यालय परिसर, उच्चतर शिक्षण संस्थान, आदि द्वारा ई- लर्निंग केर लेल दिशानिर्देश तैयार करए मे मदति करत।

24.5. विश्व स्तरीय डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर, शैक्षिक डिजिटल कंटेंट सामग्री आ क्षमताक निर्माण करबाक लेल एकटा समर्पित इकाई केर सृजन

शिक्षामे प्रौद्योगिकी कोनो गंतव्य नहि भ' कए एकटा यात्राक समान अछि आ नीतिगत उद्देश्यकें लागू करबाक लेल विभिन्न पारिस्थितिक तंत्रक खेलाडी सभकें तैयार करबाक हेतु क्षमताकें आवश्यकता होएत। विद्यालय आ उच्चतर शिक्षा दुनूकें ई- शिक्षा आवश्यकता पर ध्यान देबाक लेल मंत्रालयमे डिजिटल मुलभूत ढाँचा, डिजिटल सामग्री आ क्षमता निर्माणक व्यवस्था करबाक उद्देश्यक लेल एकटा समर्पित इकाई केर स्थापना कएल जाएत। चूँकि प्रौद्योगिकी तेजीसँ विकसित भ' रहल अछि, आ उच्चतर गुणवत्ता बला ई- लर्निंग कें वितरित करबाक लेल विशेषज्ञ सभक आवश्यकता अछि, एहि लेल जीवंत पारिस्थितिकी तंत्रकें एहन समाधानक लेल प्रोत्साहित कएल जेबाक अछि जे नहि केवल भारतक आकार, विविधता, न्यायसम्यता कें हल करए, अपितु तेजी सँ भ' रहल प्रौद्योगिकी बदलावकें ध्यानमे राखैत ओकरा विकसित कएल जाए, जेकर आधा-भाग प्रत्येक बीतए बला वर्षक संगे पुरान होइत जाइत अछि। अतः एहि केन्द्रमे प्रशासन, शिक्षा, शैक्षिक प्रौद्योगिकी, डिजिटल शिक्षाशास्त्र आ मूल्यांकन, ई-गवर्नेंस, आदि केर क्षेत्रसँ जुड़ल विशेषज्ञ सम्मिलित होएत।

भाग IV. क्रियान्वयन केर रणनीति

25. केंद्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्डक सशक्तिकरण

25.1. एहि नीतिक सफल क्रियान्वयनक लेल राष्ट्रीय, राज्य, संस्थागत, आ व्यक्तिगत स्तर पर एकटा दीर्घकालिक दृष्टि, विशेषज्ञताक निरंतर उपलब्धता आ संबंधित लोक द्वारा ठोस डेग उठाओल जएबाक आवश्यकता अछि। एहि सन्दर्भमे, ई नीति केंद्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड (केब) केर सशक्तिकरणक अनुशंसा करैत अछि जे कि ने केवल शैक्षिक आ सांस्कृतिक विकाससँ जुड़ल मुद्दा पर व्यापक परामर्श आ समीक्षाक लेल एकटा फोरम प्रदान करैत अछि अपितु ओकर कतेको बेसी वृहद् उद्देश्य अछि। एकरा पुनर्कल्पित आ पुनर्जीवित कए मानव संसाधन विकास मंत्रालय आ राज्य स्तर पर सदृश इकाई/निकाय केर संग मिलकें देशमे शिक्षाकें दृष्टि केर लगातार विकसित करब, सुस्पष्टता आनबाक लेल, ओकर आकलन करब आ ओकरा संशोधित करबाक लेल जिम्मेदार होएत। एकरा एहन संस्थागत रूपरेखाकें सेहो लगातार तैयार आ समीक्षा करैत रहबाक छैक जे एहि विजन केर प्राप्त करबा मे सहायक होएत।

25.2. अधिगम आ शिक्षा पर एक बेर पुनः ध्यान केंद्रित करबाक लेल ई वांछनीय होएत जे मानव संसाधन विकास मंत्रालयकें शिक्षा मंत्रालय (एमओई) रूपमे पुनःनामित कएल जाएत।

26. वित्त पोषण: सभक लेल सस्त आ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा

26.1. ई नीति शैक्षिक निवेशमे उल्लेखनीय वृद्धि लेल प्रतिबद्ध अछि कि एक त' समाजक भविष्य हेतु युवाक लेल उच्चतर गुणवत्तापूर्ण शिक्षासँ बेसी नीक कोनो निवेश नहि होइत अछि। दुर्भाग्य सँ भारतमे शिक्षा पर होइ बला

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

सार्वजनिक व्यय कखनहुँ सरकारी खर्च कुल सकल घरेलू उत्पादक 6% धरि नहि पहुँच सकलैक, जेहन कि 1968 केर शिक्षा नीतिमे अनुशंसा कएल गेल छल आ जेकरा 1986 केर शिक्षा नीति आ 1992मे नीति समीक्षामे दोहराओल गेल रहए। वर्तमानमे शिक्षा पर सार्वजनिक खर्च (केंद्र आ राज्य सरकार द्वारा) जीडीपी (बजटीय व्यय आवंटन 2017-18 केर विशलेषणक हिसाबसँ) केर करीब 4.43 % केर लगपास अछि आ सरकारी व्यय केर केवल 10% शिक्षा पर कएल जाएत अछि (इकनोमिक सर्वे 2017-18) ई आंकड़ा अधिकांश शिक्षित आ विकासशील देश सँ बहुत कम अछि।

26.2. भारतमे उत्कृष्टताक संग शिक्षाक लक्ष्यक प्राप्ति लेल आ देश आ अर्थव्यवस्थासँ जुड़ल लाभक बहुलताक कारण ई शिक्षा नीति, केंद्र आ सभ राज्य सरकार द्वारा, शिक्षामे निवेशकेँ पर्याप्त रूपसँ बढ़एबाक समर्थन करैत अछि। केंद्र आ राज्य शिक्षा क्षेत्रमे सार्वजनिक निवेशकेँ बढ़एबाक लेल जीडीपी केर 6 % धरि शीघ्रतिशीघ्र पहुंचेबाक लेल संग मिलि कए काज करत। भारतक भावी आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक आ तकनीकी उन्नतिक लेल शिक्षा पर एतेक निवेश करब बहुत महत्वपूर्ण अछि।

26.3. विशेष रूपसँ शिक्षासँ जुड़ल महत्वपूर्ण मदति आ संघटक लेल वित्तीय सहायता प्रदान कएल जाएत जेना- सभ धरि शिक्षाक पहुँच सुनिश्चित करब, सीखबाक संसाधन, पोषण सहायता, विद्यार्थीक सुरक्षा आ स्वास्थ्य, शिक्षक आ कर्मचारी केर पर्याप्त संख्या, शिक्षकक विकास आ पिछड़ल आ सामाजिक-आर्थिक रूपसँ पिछड़ल समूहक लेल समतापूर्ण उच्चतर गुणवत्ताक शिक्षा प्रदान करबाक लेल कएल जाए बला सभ प्रमुख प्रयास।

26.4. मुख्यतः बुनियादी सुविधा आ संसाधन सम्बन्धी एकमुश्त खर्चक अतिरिक्त ई नीति एकटा शिक्षा प्रणाली विकसित करबाक लेल वित्त पोषण हेतु निम्नलिखित महत्वपूर्ण दीर्घकालीन क्षेत्रक पहिचान करैत अछि, जकरा पर जोर देल जेबाक चाही: (क) गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्थाक देखरेख शिक्षाक सार्वभौमिक प्रावधान; (ख) पढब लिखब आ गणना करबाक बुनियादी क्षमता सुनिश्चित करब, ग) सभ विद्यालय परिसर/समूहक लेल पर्याप्त आ उपयुक्त संसाधन, (घ) भोजन आ पोषणक व्यवस्था करब (जलखै आ मध्यान भोजन) (ङ) शिक्षक शिक्षा आ शिक्षक केर सतत व्यावसायिक विकासमे निवेश (च) उत्कृष्टताकेँ पोषित करबाक लेल विश्वविद्यालय आ महाविद्यालयमे सुधार, (छ) शोधक विकास आ (ज) प्रौद्योगिकी आ ऑनलाइन शिक्षाक व्यापक उपयोग।

26.5. शिक्षाक क्षेत्रक लेल सीमित मात्रामे उपलब्ध वित्त सेहो अमूमन जिला/संस्थानक स्तर पर समय पर व्यय नहि कएल जाइत अछि, जाहिसँ ओकर राशि केर लक्षित उद्देश्यक प्राप्ति करबा मे कठिनाई होइत अछि। अतः आवश्यकता उपयुक्त नीतिगत परिवर्तन द्वारा उपलब्ध बजट केर उपयोगमे दक्षता बढ़एबाक अछि। वित्तीय प्रश्न आ प्रबंधन एहि गप पर ध्यान देत जे निधि सुलभतासँ, समय पर आ उचित मात्रामे उपलब्ध होएत आ ओकर व्यय ईमानदारीसँ कएल जाएत। प्रशासनिक प्रक्रियाकेँ संशोधित आ सुव्यवस्थित कएल जाएत जाहिसँ संवितरण तंत्रक कारण बेसी मात्रामे अव्ययित निधि शेष नहि रहि सकए। सरकारी संसाधन केर कुशल उपयोग आ धनक अनुपयोग सँ बचएबाक लेल जीएफआर, पीएफएमएस आ 'सही समय पर' आवंटन सँ संबंधित प्रावधान केर लागू करए बला कार्यान्वयन संस्थाक लेल जारी कएल जाएत। राज्य/उच्चतर शिक्षा संस्थानमे प्रदर्शन-आधारित वित्त पोषणक तंत्र तैयार कएल जा सकैत अछि। एहि प्रकार एसईडीजी केर लेल निर्धारित धनकेँ इष्टतम आवंटन आ उपयोगक लेल कुशल तंत्र सुनिश्चित कएल जाएत। प्रस्तावित नवीन नियामक व्यवस्था, जाहिमे भूमिका सभक विभाजन आ पारदर्शी स्व-प्रकटीकरण संस्थान सभक सशक्तिकरण आ स्वायत्तता, उत्कृष्ट आ योग्य विशेषज्ञक प्रमुख पद पर नियुक्ति आदि सम्मिलित अछि, सँ वित्त केर आसान, त्वरित आ पारदर्शी प्रवाह मे मदति भेटत।

26.6. ई नीति, शिक्षण क्षेत्रमे निजी परोपकारी गतिविधिकेँ पुनर्जीवित करब, सक्रिय रूपसँ प्रोत्साहित करब आ समर्थन करबाक अनुशंसा करैत अछि। विशेष रूपसँ बजटीय समर्थनक अतिरिक्त जे अन्यथा हुनका सभकेँ प्रदान कएल गेल होइत अछि। कोनो सार्वजनिक संस्थान शैक्षिक अनुभवकेँ बढ़एबाक लेल निजी परोपकारी धन जुटेबाक दिशामे प्रयास क' सकैत अछि।

26.7. एहि नीतिमे शिक्षाक व्यवसायीकरण केर मुद्दासँ कतेको मोर्चा पर निपटबाक प्रयास कएल गेल अछि, जाहिमे 'सरल किन्तु प्रभावशाली' नियमन दृष्टिकोण सेहो सम्मिलित अछि, जे वित्त, प्रक्रिया, कार्यपद्धति, उपलब्ध पाठ्यक्रम आ पाठ्यक्रममे पूरा पारदर्शिताक संग स्व-प्रकटीकरण; सार्वजनिक शिक्षामे पर्याप्त निवेश, सरकारी आ निजी सभ संस्थानमे नीक प्रशासन आ तंत्र पर जोर दैत अछि। एहि प्रकारँ, जरूरतमंद आ योग्य वर्गकेँ प्रभावित कएनए बिना उच्चतर लागतक वसूली केर अवसरक सेहो पता लगाओल जाएत।

27. कार्यान्वयन

27.1. कोनो नीति केर प्रभावशीलता ओकर कार्यान्वयन पर निर्भर करैत अछि। एहन कार्यान्वयन लेल कतेको निकाय द्वारा समन्वित आ व्यवस्थित तरीकासँ बहुत रास प्रयास करबाक होएत आ कतेको डेग उठएबाक आवश्यकता होएत। एहि लेल ई नीतिक क्रियान्वयनकेँ कतेको निकाय जाहिमे एमएचआरडी, केब, केंद्र आ राज्य सरकार, शिक्षा संबंधी मंत्रालय, राज्यक शिक्षा विभाग, बोर्ड सभ, एनटीए, विद्यालय आ उच्चतर शिक्षा केर नियामक निकाय, एनसीईआरटी, एससीईआरटी, विद्यालय आ उच्चतर शिक्षण स्थान सम्मिलित अछि, द्वारा शिक्षामे सम्मिलित सभ निकाय सभमे योजना के ल' कए आपसी समन्वयन आ तालमेलक माध्यमसँ एकर भाव आ प्रयोजन अनुसार सुनिश्चित करबाक लेल नेतृत्व प्रदान कएल जाएत।

27.2. क्रियान्वयन केर लेल निम्नलिखित मार्गदर्शी सिद्धान्त होएत : पहिल, नीति केर भावना आ प्रयोजन क्रियान्वयन हेतु सभसँ महत्वपूर्ण पहलू अछि। दोसर, नीतिगत प्रयासकेँ चरणबद्ध तरीकासँ क्रियान्वित करब महत्वपूर्ण अछि किएक त' नीति केर सभ बिंदुमे कतेको डेग अछि आ प्रत्येक चरण एहि दृष्टिसँ महत्वपूर्ण होइत अछि किएक त' ओ अगिला चरणक क्रियान्वयनक आधार बनैत अछि। तेसर, प्राथमिकीकरण द्वारा काज केर एकटा एहन क्रमबद्ध तरीकासँ कएल जाएब संभव होएत जाहिमे सभसँ महत्वपूर्ण आ अति-आवश्यक काज पहिने कएल जाए जाहि सँ एकटा मजगूत नेओँ तैयार भ' सकए। चारिम, क्रियान्वयनक व्यापकता महत्वपूर्ण होएत, ई नीति एकटा व्यापक दृष्टिकोण, समग्रता राखैत अछि जेकर अवयव एक दोसरसँ जुटल अछि, अतः टुकडीमे प्रयासकेँ बजाए समग्र दृष्टिकोण राखैत क्रियान्वयन करबा सँ बांछित उद्देश्य केर प्राप्ति सुनिश्चित होएत। पाँचम, किएक तँ शिक्षा समवर्ती सूची केर विषय अछि, अतः एकरामे केंद्र आ राज्यक बीच सावधानीपूर्वक योजना निर्माण, संयुक्त निगरानी आ समन्वयपूर्ण क्रियान्वयनक आवश्यकता होएत। छठम, संतोषजनक निष्पादनक लेल केंद्र आ राज्य स्तर पर मानव, संरचनागत आ वित्तीय संसाधनक समयसँ जुटायब अहम् बिंदु अछि। अंतमे, क्रियान्वयन हेतु कएल जाए बला विविध उपाय सभक बीच परस्पर जुडाव क' कए सावधानीपूर्वक योजना निर्माण, संयुक्त निगरानी, आ समन्वयपूर्ण विश्लेषण आ समीक्षा सभ प्रयास सभक एक-दोसरा सँ जुडाव केर सुनिश्चित करबाक दृष्टि सँ आवश्यक होएत। एकरामे किछु एहन काजमे पूर्व निवेश सम्मिलित अछि (उदाहरणक लेल प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा केर बुनियादी ढाँचा) जे नहि केवल एकटा मजगूत नेओँ बनएबाक दृष्टिसँ आवश्यक अछि अपितु भावी कार्यक्रम आ काज केर बाधारहित संचालनक लेल आवश्यक अछि।

27.3. सम्बद्ध मंत्रालय केर समन्वयसँ आ ओकरासँ परामर्श क' कए केंद्र आ राज्य दुनू स्तर पर विषयवार क्रियान्वयन विशेषज्ञ समिति केर गठन कएल जाएत जे एहि नीतिक उद्देश्यकेँ चरणबद्ध आ स्पष्ट रूपसँ प्राप्त करबाक लेल उपरोक्त सिद्धान्तक अनुसार एकटा विस्तृत क्रियान्वयन योजना तैयार करत। मानव संसाधन विकास मंत्रालय आ राज्य द्वारा निर्दिष्ट समूहक द्वारा प्रत्येक क्रियान्वयन बिन्दुक लेल राखल गेल लक्ष्यक अनुसार नीतिक प्रति वर्ष संयुक्त समीक्षा कएल जाएत आ केबक संग साझा कएल जाएत। 2030-40 केर दशक धरि सम्पूर्ण नीतिक क्रियान्वयन अवस्थामे आवि चुकल होएत आ तकर बाद एकटा आर व्यापक समीक्षा कएल जाएत।

प्रयुक्त संकेताक्षर सभक सूची

एबीसी	अकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट
एआई	आर्टिफिशियल इन्टेलिजेंस
एसी	ऑटोनोमस डिग्री ग्रांटिंग कॉलेज
एईसी	प्रौढ शिक्षा केन्द्र
एपीआई	एप्लीकेशन प्रोग्रामिंग इन्टरफेस
आयुष	आयुर्वेद, योग आ प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध आ होमियोपैथी
बीएड	बैचलर ऑफ एजुकेशन
बीईओ	प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी
बीआईटीई	ब्लॉक इंस्टिट्यूट ऑफ टीचर एजुकेशन
बीओए	बोर्ड ऑफ असेसमेंट
बीओजी	बोर्ड ऑफ गवर्नर्स
बीआरसी	ब्लॉक रिसोर्स सेंटर
बी.वोक.	बैचलर ऑफ वोकेशनल एजुकेशन
सीएबीई	सेंट्रल एडवाइजरी बोर्ड ऑफ एजुकेशन
सीबीसीएस	चाइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम
सीबीएसई	केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
सीआईईटी	सेंट्रल इंस्टिट्यूट ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी
सीएमपी	कॅरियर प्रबंधन आ प्रगति
सीओए	वास्तुकला परिषद्
सीपीडी	सतत व्यावसायिक विकास
सीआरसी	क्लस्टर संसाधन केंद्र
सीडब्लूएसएन	चिल्ड्रेन विद स्पेशल नीड्स
डीएई	परमाणु ऊर्जा विभाग
डीबीटी	जैव प्रौद्योगिकी विभाग
डीईओ	जिला शिक्षा पदाधिकारी
डीआईईटी	जिला शिक्षा आ प्रशिक्षण संस्थान
दीक्षा	डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर नॉलेज शेयरिंग
डीएसई	विद्यालय शिक्षा निदेशालय
डीएसटी	विज्ञान आ प्रौद्योगिकी विभाग

ईसीसीए	अर्ली चाइल्डहुड केयर एण्ड एजुकेशन
ईईसी	प्रख्यात विशेषज्ञ समित
जीसीईडी	ग्लोबल सिटिजनशिप एजुकेशन
जीडीपी	सकल घरेलू उत्पाद
जीईसी	सामान्य शिक्षा परिषद्
जीईआ	सकल नामांकन अनुपात
जीएफआ	सामान्य वित्तीय नियम
एचईसीआई	भारतक उच्च शिक्षा आयोग
एचईजीसी	उच्चतर शिक्षा अनुदान परिषद्
एचईआई	उच्चतर शिक्षा संस्थान
आईसीएआर	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्
आईसीएचआर	भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद्
आईसीएमआर	भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद्
आईसीटी	सूचना आ संचार प्रौद्योगिकी
आईडीपी	संस्थागत विकास योजना
इयू इंदिरा	गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
आईआईएम	भारतीय प्रबंधन संस्थान
आईआईटी	भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान
आईआईटीआई	इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ ट्रांसलेशन एण्ड इन्टरप्रिटेशन
आईएसएल	भारतीय सांकेतिक भाषा
आइटीआई	औद्योगिक प्रशिक्षण संस्तान
एमएड	मास्टर ऑफ एजुकेशन
एमबीबीएस	बैचलर ऑफ मेडिसिन एण्ड बैचलर ऑफ सर्जरी
एमईआरयू	बहु-विषयक शिक्षा आ अनुसंधान विश्वविद्यालय
एमएचएफडब्लू	स्वास्थ्य आ परिवार कल्याण मंत्रालय
एमएचआरडी	मानव संसाधन विकास मंत्रालय
एमओई	शिक्षा मंत्रालय
एमओओसी	मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स
एमओयू	समझौता ज्ञापन
एम फिल	मास्टर ऑफ फिलोसोफी
एमडब्ल्यूसीडी	महिला आ बाल विकास मंत्रालय

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

एनएसी	राष्ट्रीय प्रत्यायन परिषद्
एनएएस	नैशनल अचिवमेंट सर्वे
एनसीसी	नैशनल कैडेट कोर
एनसीईआरटी	राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान आ प्रशिक्षण परिषद्
एनसीएफ	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा
एनसीएफएसई	विद्यालयी शिक्षाक लेल राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा
एनसीआईवीई	व्यावसायिक शिक्षाक एकीकरणक लेल राष्ट्रीय समिति
एनसीपीएफईसीसीई	प्रारंभिक बाल्यावस्थाक देखभाल आ शिक्षाक लेल राष्ट्रीय पाठ्यचर्या आ शिक्षण शास्त्र
एनसीटीई	नैशनल काउंसिल फॉर टीचर एजुकेशन
एनसीवीईटी	नैशनल काउंसिल फॉर वोकेशनल एजुकेशन एण्ड ट्रेनिंग
एनईटीएफ	राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी फोरम
एनजीओ	गैर सरकारी संगठन
एनएचईक्यूएफ	राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा योग्यता फ्रेमवर्क
एनएचईआरसी	राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा नियामक परिषद्
एनआईओएस	राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
एनआईटी	राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान
एनआईटीआई	नेशनल इंस्टीट्यूशन फॉर ट्रांसफॉर्मिंग इंडिया
एनईपी	राष्ट्रीय शिक्षा नीति
एनपीएसटी	शिक्षकक लेल राष्ट्रीय व्यावसायिक मानक
एनआरएफ	नैशनल रिसर्च फाउंडेशन
एनएसक्यूएफ	राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क
एनएसएसओ	राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय
एनटीए	नैशनल टेस्टिंग एजेंसी
ओबीसी	अन्य पिछड़ल वर्ग
ओडीएफ	ओपन आ डिस्टेन्स लर्निंग
परख	समग्र विकासक लेल प्रदर्शन आकलन, समीक्षा आ ज्ञानक विश्लेषण
पीसीआई	फार्मसी काउंसिल ऑफ इंडिया
पीएफएमएस	सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली
पीएच-डी	डॉक्टर ऑफ फिलोसोफी
पीएसएसबी	प्रोफेशनल स्टैन्डर्ड सेटिंग बोर्ड
पीटीआर	छात्र शिक्षक अनुपात

आ एण्ड डी	रिसर्च एंड इनोवेशन
आरसीआई	भारतीय पुनर्वास परिषद्
आरपीडब्लूडी	दिव्यांग लोकक अधिकार
एसएसएस	स्टेट अचिवमेंट सर्वे
एससी	अनुसूचित जाति
एससीडीपी	विद्यालय परिसर/क्लस्टर विकास योजना
एससीईआरटी	राज्य शैक्षिक अनुसंधान आ प्रशिक्षण परिषद्
एससीएफ	राज्य पाठ्यक्रम फ्रेमवर्क
एससीएमसी	विद्यालय प्रबंधन समिति
एसडीजी	सतत विकासक लक्ष्य
एसडीपी	विद्यालय विकास योजना
एसईडीजी	सामाजिक-आर्थिक रूपसँ वंचित समूह
एसईजेड	स्पेशल एजुकेशन ज़ोन
एसआईओएस	राज्य मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
एसएमसी	विद्यालय प्रबंधन समिति
एसक्यूएएएफ	विद्यालय गुणवत्ता मूल्यांकन आ प्रत्यायन फ्रेमवर्क
एसएसए	सर्व शिक्षा अभियान
एसएसएस	सरल मानक संस्कृत
एसएसएसए	राज्य विद्यालय मानक प्राधिकरण
एसटी	अनुसूचित जनजाति
एसटीईएम	विज्ञान, प्रौद्योगिकि, इंजीनियरिंग आ गणित
एसटीएस	संस्कृतक माध्यमसँ संस्कृत
स्वयम	स्टडी वेब्स ऑफ एक्टिव लर्निंग फॉर यंग एस्पायरिंग माइन्डस
टीईआई	शिक्षक शिक्षा संस्थान
टीईटी	शिक्षक पात्रता परीक्षा
यू- डीआईएसई	एकीकृत जिला शिक्षा सूचना प्रणाली
यूजीसी	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
यूनेस्को	संयुक्त राष्ट्र शैक्षणिक, वैज्ञानिक आ सांस्कृतिक संगठन
यूटी	संघ राज्य क्षेत्र
वीसीआई	भारतीय पशु चिकित्सा परिषद्
